दैनिक

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

n वर्ष : 10 अंक : 144 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, बुधवार 18 जून, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

केंद्र सरकार को लिखा पत्र, जल्द मंजूरी की मांग

सीएम भजनलाल के भागीरथी प्रयास से राजस्थान को मिल सकती है बड़ी राहत!

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान में जल संकट से राहत दिलाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया गया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल को पत्र लिखकर चिनाब नदी बेसिन से जुड़ी तीन बड़ी जल परियोजनाओं को जल्द लागू करने का आग्रह किया है। मुख्यमंत्री ने पत्र में लिखा है कि हिमालय से निकलने वाली चिनाब जैसी नदियों का अतिरिक्त पानी अगर ब्यास, रावी और उझ जैसी पूर्व की ओर बहने वाली नदियों में लाया जाए, तो इससे उत्तर भारत के कई राज्यों के साथ-साथ राजस्थान को भी बहुत बड़ा लाभ मिल सकता है। मुख्यमंत्री ने केंद्र को बताया कि राजस्थान को 1.0 मिलियन एकड़ फीट (पानी पीने के लिए 1.0 एमएएफ सिंचाई के लिए और 0.2 एमएएफ औद्योगिक जरूरतों के लिए चाहिए। इसके साथ ही राज्य में

मौजूद प्राकृतिक झीलों और जलाशयों में 1.0 एमएएफ पानी स्टोर करने की क्षमता भी है, जिसका पूरा उपयोग इन परियोजनाओं से संभव हो सकेगा। मुख्य तीन लाभ जो राजस्थान को मिल सकते हैं उनमें ब्यास और सतलुज नदियों में पानी बढ़ेगा, जिससे पंजाब, हरियाणा, दिल्ली के साथ-साथ राजस्थान को भी फायदा होगा। इंदिरा गांधी नहर को और अधिक पानी मिलेगा, जिससे पश्चिमी राजस्थान की बड़ी आबादी को सिंचाई और पीने के पानी में राहत मिलेगी।

'मील का पत्थर साबित होगी योजना'

औद्योगिक क्षेत्रों को पर्याप्त जल आपूर्ति सुनिश्चित होगी, जिससे नए निवेश और रोजगार के अवसर पैदा होंगे। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि यह योजना राजस्थान के भविष्य के लिए मील का पत्थर साबित हो सकती है, इसलिए केंद्र सरकार को इसे शीघ्र मंजूरी देनी चाहिए।

3 शहरों का दौरा करेंगे सीएम

राजस्थान में वन्दे गंगा अभियान को जमीनी स्तर पर मजबूत करने और जन सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बुधवार को राजसमंद, जालौर और बाड़मेर जिलों के दौरे पर रहेंगे। इस दौरान वे जल संरक्षण से जुड़े कार्यक्रमों में भाग लेंगे, धार्मिक स्थलों पर जल पूजन करेंगे और आमजन से संवाद कर अभियान को जन आंदोलन का स्वरूप देंगे। मुख्यमंत्री सुबह 9.30 बजे जयपुर एयरपोर्ट से प्रस्थान कर उदयपुर और फिर वहां से राजसमंद पहुंचेंगे। राजसमंद झील स्थित नौचोकी पाल पर जल पूजन और दर्शन के बाद वे भिक्षु निलयम में आयोजित जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके बाद मुख्यमंत्री दोपहर में जालौर जिले के सीलू घाट (नर्मदेश्वर) पहुंचेंगे, जहां वे जल पूजन करने के साथ ही जनसभा को भी संबोधित करेंगे। जल संरक्षण को लेकर स्थानीय समुदाय से संवाद और सहभागिता पर फोकस रहेगा। मुख्यमंत्री का अंतिम कार्यक्रम बाड़मेर का उत्तरलाई एयरपोर्ट रहेगा, जहां से वे शाम 4.20 बजे जयपुर लौटेंगे।

ईरान ने इजरायल के खुफिया मुख्यालय मोसाद पर किया हमला

जयपुर टाइम्स

तेहरान/एजेंसी। ईरान ने इस्राइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के मुख्यालय पर कथित तौर पर हमला किया है। यह हमला ऐसे समय में हुआ है, जब दोनों देशों के बीच जारी टकराव में हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं। अब तक इस युद्ध में ईरान में 200 से ज्यादा लोगों की जान जा जा चुकी है, जबकि इस्राइल में दर्जनों लोग मारे गए हैं। तेहरान के सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) ने कहा कि उसने मंगलवार को संघर्ष के दौरान कथित तौर पर मोसाद के एक ठिकाने को निशाना बनाया। इस्राइली सेना ने इन हमलों को हल्का दिखाने की कोशिश करते हुए कहा कि मिसाइलों से एक बस पार्किंग क्षेत्र को नुकसान पहुंचा है। हालांकि रिपोर्ट के मुताबिक, हमले में इस्राइल के रणनीतिक ठिकानों को निशाना बनाया गया, जिनमें एमन लॉजिस्टिक्स केंद्र और हर्जलिया में स्थित मोसाद का मुख्यालय भी शामिल है। इस बीच, ईरानी सेना ने इस्राइल को चेतावनी दी है कि आने वाले घंटों में नए और अत्याधुनिक हथियारों से सख्त हमले किए जाएंगे। मंगलवार को इस्राइल रक्षा बल (आईडीएफ) ने बताया कि ईरान ने मंगलवार को 30 मिसाइलें दागी हैं, जिनमें से कुछ इस्राइली रक्षा प्रणाली को पार कर गईं। आईडीएफ ने बयान में कहा कि हम अपनी उन्नत खुफिया क्षमताओं, हवाई वर्चस्व और जटिल सैन्य रणनीतियों से अपने दुश्मनों का पीछा करते रहेंगे। इसी बीच, इस्राइल ने दावा किया है कि उसने एक हवाई हमले में ईरान के शीर्ष सैन्य कमांडर अली शादमानी को मार गिराया है। यह हमला ऐसे समय में हुआ, जब शादमानी को हाल ही में उनके पूर्ववर्ती की इस्राइली हमले में हत्या के बाद पदभार सौंपा गया था।

मूसलाधार बारिश से मरूधरा तरबतर, सड़कें बन गई दरियां

जयपुर टाइम्स

जयपुर/सीकर। राजस्थान में प्री मानसून की दस्तक के साथ ही कई जिलों में मौसम परिवर्तन और बारिश का दौर शुरू हो चुका है। जयपुर, अजमेर, सीकर, टोंक सहित कई जिलों में जमकर बारिश हुई। सीकर में भी पिछले दो दिनों से हो रही प्री मानसून की बारिश के कारण शहर के कई निचले इलाकों में मुख्य सड़के दरिया के रूप में नजर आने लगी हैं। ऐसा ही नजारा आज शहर के नवलगढ़ रोड पर दिखाई दिया, जहां सुबह से रुक-रुक कर हो रही बारिश के कारण नवलगढ़ रोड पर करीब आधा किलोमीटर की दूरी में मुख्य सड़क दरिया में तब्दील हो गई। मुख्य सड़क पर करीब 4 फीट तक बारिश और नालों का पानी आने से स्थानीय प्रशासन की ओर से आवागमन पूरी तरह से बंद कर दिया गया। लेकिन मुख्य मार्ग बंद होने के बाद भी नवलगढ़ रोड पर कोचिंग इंस्टिट्यूट और स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं, आमजन सहित वाहन चालक अपनी जान जोखिम में डालकर जलभराव से होकर गुजरते रहे। इसके अलावा जेसीबी की सहायता से भी कोचिंग इंस्टिट्यूट में पढ़ने वाले छात्र और स्थानीय लोग जलभराव वाले स्थान के एक कोने से दूसरे कोने तक जाते हुए दिखाई दिए। जेसीबी चालक विद्यार्थियों और आमजन को जेसीबी में बैठाकर बार-बार एक कोने से दूसरे कोने तक का सफर तय करवा रहा था। पूरे दिन बड़ी संख्या में विद्यार्थी कोचिंग और स्कूलों में पढ़ने के लिए जाते हैं। ज्ञात रहे कि शहर के नवलगढ़ रोड और पिपराली रोड सीकर का एजुकेशन से जुड़ा एरिया है जहां पर दर्जनों कोचिंग इंस्टिट्यूट और स्कूल हैं, जहां पूरे दिन बड़ी संख्या में विद्यार्थी कोचिंग और स्कूलों में पढ़ने के लिए जाते हैं। लेकिन स्थानीय प्रशासन की ओर से जल निकासी का पुख्ता प्रबंध नहीं होने के चलते स्थानीय लोगों के साथ-

साथ ही विद्यार्थियों को भी बारिश के मौसम में बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है। वहीं हाल ही में दो दिनों से लगातार हो रही बारिश के कारण नवलगढ़ रोड, बजाज रोड और लोहारू बस स्टैंड पर स्थित दुकानों में भी बारिश और नालों का गंदा पानी घुस गया, जिसके चलते स्थानीय दुकानदारों को भी काफी नुकसान भुगतना पड़ा। हालांकि जलभराव की स्थिति को देखते हुए प्रशासन की ओर से पानी निकासी व इतिहास के तौर पर जेसीबी और कर्मचारी भी लगाए गए हैं. आपको बता दें कि बीती रात और सुबह सीकर शहर सहित लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, श्रीमाधोपुर, नीमकाथाना, धोद, खंडेला, पलसाना, रींगस में रुक-रुक कर बारिश का दौर जारी है। जिसके चलते कई शहर और कस्बों में पानी निकासी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण जलभराव जैसे हालात बन चुके हैं और आमजन जलभराव के कारण परेशानी में नजर आ रहा है। हालांकि लगातार दो दिनों से हो रही बारिश के कारण जिले के तापमान में भारी गिरावट दर्ज की गई है और लोगों को गर्मी से भी काफी राहत मिली है। वहीं खेतों में बुवाई का समय होने के कारण किसानों के चेहरे भी खिल उठे हैं। मौसम विभाग की ओर से भी सीकर सहित प्रदेश के कई जिलों में तेज हवाओं और बारिश की चेतावनी दी गई है।

पंचायतीराज और निकाय चुनाव में युवाओं को देगी आधे टिकट

चुनावों की तैयारी में जुटी कांग्रेस: युवाओं को देगी टिकटों में तरजीह

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। प्रदेश कांग्रेस अभी से ही अगले चुनावों की तैयारी में जुट गए हैं। पार्टी अब युवाओं को अधिक मौके देगी जिससे युवा वर्ग का रुझान कांग्रेस की ओर ज्यादा हो सके। इसके मद्देनजर आगामी पंचायती राज और निकाय चुनावों में युवाओं को अधिक टिकट देने की कवायद कांग्रेस ने शुरू कर दी है। कांग्रेस अब आगे होने वाले पंचायतीराज और शहरी निकायों के चुनावों में 50 प्रतिशत टिकट युवाओं को देगी। इनमें 50 साल से कम उम्र वालों को टिकट देने का फैसला किया है। कांग्रेस हाईकमान के आदेशों के बाद राजस्थान प्रदेश कांग्रेस ने इस पर काम शुरू कर दिया है। कांग्रेस नेताओं को ग्राउंड में नए युवाओं और नेताओं को छांटकर उन्हें चुनावी राजनीति के लिए तैयार करने का टास्क सौंपा है। टिकट बांटने का पुराना फॉर्मूला बदलने का भी फैसला किया है।

विधानसभा, लोकसभा से लेकर स्थानीय निकाय और पंचायतीराज चुनावों में उम्मीदवार तय करने में अब जिला और ब्लॉक अध्यक्षों की राय भी मायने रखेगी। टिकट बंटवारे में जिलाध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्ष और मंडल अध्यक्षों का फीडबैक लिया जाएगा। केवल प्रदेश लेवल के बड़े नेताओं की राय से ही टिकट तय नहीं होंगे। अब तक प्रदेश चुनाव समिति में शामिल नेता ही टिकटों पर फैसला करते रहे हैं। शहरी निकायों में पार्षद के साथ ही नगरपालिका अध्यक्ष, नगर परिषद सभापति, मेयर के चुनाव होते हैं। पंचायतीराज संस्थाओं में जिला प्रमुख, जिला परिषद सदस्य, पंचायत समिति सदस्य, प्रधान,

सरपंच और वार्ड पंच चुने जाते हैं। सरपंच और वार्ड पंच के चुनाव अभी राजनीतिक दलों के सिंबल पर नहीं लड़े जाते हैं, बाकी सभी के चुनाव सिंबल पर होते हैं। 50 प्रतिशत टिकट 50 साल से कम उम्र वालों को देने से इन पदों पर युवाओं की संख्या बढ़ेगी। सरकार ने वन स्टेट-वन इलेक्शन के तहत सभी निकायों और पंचायतीराज संस्थाओं के चुनाव एक साथ करवाने की घोषणा कर रखी है। करीब 7000 पंचायतों का कार्यकाल पूरा होने के बाद प्रशासक लगाए जा चुके हैं। शहरी निकायों में भी प्रशासक लगे हैं। सरकार इस साल के अंत तक निकाय चुनाव करवा सकती है। पंचायतीराज संस्थाओं के चुनाव अगले साल तक हो सकते हैं। निकाय और पंचायतीराज चुनावों में देरी को लेकर हाईकोर्ट में याचिका पेंडिंग है। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि चुनावों के टिकट वितरण में मंडल अध्यक्ष, जिलाध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्ष की प्रमुख भूमिका रहेगी। हम स्थानीय निकाय और पंचायतीराज चुनावों में इस बार से 50 प्रतिशत टिकट 50 साल से कम उम्र के युवाओं को देंगे।

हादसों का असर: हवाई सेवा ठप, कई कंपनियों ने की उड़ान रद्द

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली/एजेंसी।। विमान हादसों का दूरगामी परिणाम अब पड़ता दिखाई दे रहा है। कई विमान कंपनियों ने उड़ाने रद्द कर दी है जिसके कारण हवाई सफर लगभग ठप हो गया है। एअर इंडिया की कई अंतरराष्ट्रीय उड़ानें मंगलवार को रद्द कर दी गई हैं। इनमें ज्यादातर बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर उड़ानें हैं। यह फैसला उस समय किया गया है, जब 12 जून को अहमदाबाद से लंदन जा रहा एक बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान उड़ान भरने के कुछ ही समय बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया। यह विमान एक मेडिकल कॉलेज के छात्रावास से टकरा गया था। इस हादसे में 241 यात्रियों और चालक दल की मौत हो गई थी। एअर इंडिया ने कहा कि अहमदाबाद से लंदन के गेटविक हवाई अड्डे के लिए उसकी उड़ान रद्द कर दी गई है। एयरलाइन की ओर से इसके पीछे के कारण विमान की अनुपलब्धता, हवाई क्षेत्र में पाबंदियां और अतिरिक्त सावधानी से की जा रही जांच बताई गई। एयरलाइन ने यह भी स्पष्ट किया कि यह फैसला किसी तकनीकी खराबी की वजह से नहीं लिया गया। एअर इंडिया ने यात्रियों को हुई असुविधा के लिए खेद जताया और कहा कि उन्हें उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए वैकल्पिक इंतजाम किए जा रहे हैं।

प्रागपुरा पावटा के ईओ फतेहसिंह मीणा

काली कमाई से करोड़ों 'फतह', आलीशान बंगले, फिर भी दिखावे के लिए किराए के कमरे में रहता है ईओ

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। करोड़ों की बेनामी संपत्ति बनाने के बाद भी नगरपालिका प्रागपुरा-पावटा के अधशिासी अधिकारी पावटा में किराए के मकान में रहता है। वहां भी एसीबी की टीम पहुंची। एसीबी ने किराए के मकान में छानबीन करके दस्तावेज इकट्ठा किये। एसीबी की छापेमारी अब भी जारी है, और आने वाले समय में कई और खुलासे हो सकते हैं।

ईओ से एसीबी कर रही पूछताछ

एसीबी के डीएसपी रविन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि आय से अधिक संपत्ति का परिवाद दर्ज हुआ था, जिसकी अनुपालना में पावटा स्थित किराए के मकान में टीम पहुंची है। आरोपी ईओ फतेह सिंह मीणा से पूछताछ जारी है। मीणा वर्तमान में प्रागपुरा-पावटा नगर पालिका में ईओ पद पर हैं, और विराटनगर नगरपालिका का अतिरिक्त प्रभार भी संभाल रहे हैं।

विवादों से रहा पुराना नाता

फतेह सिंह मीणा पूर्व में दिल्ली पुलिस में कार्यरत थे. बाद में राजस्थान में ईओ बने। वह कोटपूतली, सवाई माधोपुर, जैसलमेर सहित कई नगर पालिकाओं में कार्यरत रहे। जैसलमेर में पेट्रोल पंप नक्शे के एवज में 20 लाख रुपए मांगने की शिकायत पर मुख्य सचिव ने एपीओ किया था। कोटपूतली में कोरोना काल के दौरान युवक पर लाठीचार्ज करने पर भी बवाल हुआ था। जिसको ले कर जमकर विवाद हुआ था। कोटपुतली में सड़क चौड़ीकरण और शाहपुरा में स्टेट ग्रांट के पट्टों को लेकर विवादों में घिरे रहे। ये मामले अभी भी हाईकोर्ट में लंबित है।

आय से 273% अधिक संपत्ति का मामला

ईओ फतेह सिंह मीणा के पास आय से 273% अधिक संपत्ति का मामला सामने आया। एसीबी ने ऑपरेशन एमएम (मनी मीटिंग) चलाकर आधा दर्जन ठिकानों पर छापेमारी की। फतेह सिंह पर आरोप है कि उन्होंने पद का दुरुपयोग करके 1 करोड़ 30 लाख रुपए के दो लग्जरी फ्लैट खरीदे, नीमकाथाना में 1.05 हेक्टेयर खेती की जमीन और अलवर के रघुनाथसर में करीब 15 बीघा जमीन खरीदा. जयपुर में फार्म हाउस डेवेलप करके 80 लाख रुपए की बेनामी संपत्ति में निवेश करने के आरोप है।

शुरुआती जांच में 273 गुना ज्यादा संपत्ति मिली

एसीबी के डीजी डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि गोपनीय जांच के बाद आय से अधिक संपत्ति होने की पुष्टि हुई तो प्रकरण संख्या 150/2025 दर्ज किया गया। एसीबी सवाई माधोपुर के एडिशनल एसपी ज्ञान सिंह चौधरी के नेतृत्व में मंगलवार सुबह जयपुर, अलवर और कोटपूतली के 7 से ज्यादा ठिकानों पर सर्च की कार्रवाई चल रही है। प्रारम्भिक जांच में आय से 273 गुना ज्यादा संपत्ति होने के प्रमाण एसीबी को मिले हैं। जयपुर शहर के जगतपुरा में दो लग्जरी फ्लैट मिले हैं जिन्हें फतेह सिंह मीणा की ओर से 1 करोड़ 30 लाख रुपए में खरीदे थे। नीम का थाना सीकर में 1.05 हेक्टेयर जमीन भी खरीदी थी। अलवर के थानागाजी में अपने दोस्त के नाम पर 15 बीघा जमीन खरीदी थी। उस जमीन को डेवलप करने में 80 लाख से ज्यादा रुपए खर्च किए गए।

इन ठिकानों पर सर्च जारी

फ्लैट नम्बर ई-503, 504 त्रिमूर्ति एरेना, जगतपुरा, जयपुर आधार।

संदिग्ध अधिकारी का निवास स्थान पता

सरिस्का पैलेस के पास, भृतहरी तिराया, ग्राम इण्डोक, थानागाजी, अलवर.

संदिग्ध अधिकारी का फार्म हाउस खसरा नम्बर 95, 97, 98, 100, 103 ग्राम गढ बसई, थानागाजी, अलवर.

संदिग्ध अधिकारी के नजदीकी व्यक्ति प्रमोद कुमार वर्मा पुत्र बाबुलाल वर्मा का निवास स्थान पता 4-बी 14, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, कोटपूतली.

संदिग्ध अधिकारी के नजदीकी व्यक्ति कैलाश गुर्जर पुत्र रदारमल का निवास स्थान वार्ड नम्बर 3. हनुमान बगीची के पास, अजीतगढ रोड, शाहपुरा, जयपुर.

संदिग्ध अधिकारी का किराए का मकान पता अमृत पब्लिक स्कूल के पास, डॉ. अजय दायमा के मकान के पिछे, त्रिवेणी सिटी पावटा.

संदिग्ध अधिकारी का कार्यालय कक्ष अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका पावटा-प्रागपुरा।

नगर विकास न्यास की टीम द्वारा ग्राम घेघोली में कार्रवाई कर अवैध प्लॉटिंग/कॉलोनी को ध्वस्त करने की कार्रवाई की

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। नगर विकास न्यास सचिव धीगदे स्नेहल नाना ने बताया कि नगर विकास न्यास के अतिक्रमण निरोधक दस्ते द्वारा न्यास क्षेत्राधिकार में बिना न्यास स्वीकृति एवं भू-संपरिवर्तन के ग्राम घेघोली में लगभग 5 बीघा कृषि भूमि पर विकसित की जा रही अवैध प्लॉटिंग/कॉलोनी को ध्वस्त करने की कार्रवाई की गई। इस दौरान न्यास के अतिक्रमण निरोध अधिकारी, क्षेत्रीय सहायक अभियन्ता, कनिष्ठ अभियन्ता मय वैशाली नगर पुलिस थाने का जाप्ता मौजूद रहा।

मंडल अध्यक्ष ने की पदाधिकारियो की घोषणा

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ के निर्देशानुसार एवम भाजपा जिलाध्यक्ष अशोक गुप्ता की सहमति से भाजपा मण्डल अध्यक्ष किशोरी प्रियंका शर्मा ने अपने मण्डल के पदाधिकारियों की घोषणा की जिसमें बंशीधर शर्मा, विक्रम सिंह राजपूत, विजेंद्र मूर्तिकार, मातादीन गुर्जर, सीताराम मेवाल एवम नीलम गोस्वामी इन सभी को मण्डल उपाध्यक्ष, मनोज शर्मा व रमेश सैनी को मण्डल महामंत्री, श्यामलाल मीना, आशीष शर्मा, गीता बंजारा, सुनीता देवी, देवा राम मीना एवम राहुल शुक्ल को मण्डल मंत्री व संतोष गुप्ता को मण्डल कोषाध्यक्ष बनाया है। इनके अलावा 45 कार्यकर्ताओ को मण्डल कार्यसमिति सदस्य बनाया है।

भिवाड़ी में 25 टन ई-कचरा एकत्रित, अब होगा सुरक्षित रिसाइक्लिंग

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)।। राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से भिवाड़ी शहर में 13 जून से 15 जून तक तीन दिवसीय ई-वेस्ट कलेक्शन ड्राइव का आयोजन किया। इस अभियान के तहत घरों, उद्योगों और व्यावसायिक संस्थाओं से 25 टन ई-कचरा एकत्रित किया गया। राज्य मंडल द्वारा अधिकृत तीन ई-वेस्ट रिसाइक्लर्स मैसर्स अदाते ई-वेस्ट मैनेजमेंट प्रा. लि., मैसर्स गो ग्रीन मैनेजमेंट एलएलपी, और मैसर्स तंवर ट्रेडर्स ने इस ड्राइव में सक्रिय रूप से भाग लिया। इन कंपनियों ने लोगों को ई-कचरे के उचित निस्तारण के बारे में जागरूक किया और उनके पुराने, ख़राब या अनुपयोगी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को इकट्ठा किया। राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल के क्षेत्रीय अधिकारी अमित जुयाल ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य नागरिकों को ई-वेस्ट के प्रति जागरूक करना और उसे सुरक्षित तरीके से रिसाइक्लिंग के लिए एकत्रित करना था। उन्होंने कहा कि ई-वेस्ट का अवैज्ञानिक निस्तारण मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक हो सकता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस अभियान के समापन के बाद भी जिन लोगों या उद्योगों के पास पुराने या अनुपयोगी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हैं, वे उन्हें अधिकृत ई-वेस्ट रिसाइक्लर्स से संपर्क करके निस्तारण के लिए दे सकते हैं। यह अभियान ना केवल पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह ई-कचरे के पुनर्नवीनीकरण को बढ़ावा देने में भी मददगार होगा।

रोजगार मेले से बेरोजगार युवाओं को मिली नई उम्मीदः 232 युवाओं का प्राथमिक चयन

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। जिला प्रशासन एवं कौशल नियोजन एवं उद्यमिता विभाग खैरथल-तिजारा के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तिजारा में एक दिवसीय रोजगार सहायता शिविर (रोजगार मेला) का आयोजन किया गया। यह शिविर बेरोजगार युवाओं को निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन जे. पी. यादव, प्रधान पंचायत समिति तिजारा और वार्ड नं. 22 के पार्षद सुल्तान सिंह पालीवाल ने दीप जलाकर किया। इस अवसर पर तहसीलदार तिजारा कृष्ण सिंह यादव भी उपस्थित रहे। उद्घाटन के बाद, जे. पी. यादव और पार्षद पालीवाल ने बेरोजगार युवाओं को प्रोत्साहित किया और उन्हें निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी दी। इस रोजगार मेले में 600 से अधिक बेरोजगार युवाओं ने भाग लिया। इनमें भिवाड़ी, टपूकड़ा, दिल्ली, नीमराणा और बावल जैसे विभिन्न क्षेत्रों से 14 प्रतिष्ठानों ने शिरकत की। इन प्रतिष्ठानों ने मौके पर ही युवाओं का साक्षात्कार लिया और 232 युवाओं का प्राथमिक चयन किया। इस मौके पर औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तिजारा की सहायक निदेशक प्रशिक्षक मीताक्षी गोयल और किशनगढ़बास के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के अधीक्षक मनोज जांगिड़ ने सभी अतिथियों, अधिकारियों, कर्मचारियों, नियोजकों और जनप्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया और कार्यक्रम की सफलता पर धन्यवाद ज्ञापित किया।

बारां में घंटों बिजली कटौती से लोग परेशान, फॉल्ट रिपेयर टीम बढ़ाने की मांग

बारां

(निसं.)।बारां जिले में बिजली आपूर्ति व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। दिन में कई बार घंटों तक बिजली गुल रहने से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मेंटीनेंस पर लाखों रुपए खर्च के बावजूद स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। बिजली निगम की लापरवाही से करंट लगने की घटनाओं में कई नागरिकों और मवेशियों की जान जा चुकी है। इस स्थिति के विरोध में स्वर्गीय ओम प्रकाश मानव सेवार्थ समिति और वासुदेव गौसेवा समिति के नेतृत्व में स्थानीय नागरिकों ने बिजली निगम के एसई कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने निगम की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए और नारेबाजी की। अधिकारियों के नहीं आने पर लोगों ने गेट के बाहर घंटी बजाकर विरोध जताया और धरने पर बैठ गए। बाद में एक्सईएन के आने पर प्रदर्शनकारियों ने फॉल्ट रिपेयर टीम की संख्या बढ़ाने की मांग की। प्रदर्शनकारियों ने हादसों में जान गंवाने वाले लोगों के परिवारों को उचित सहायता देने की मांग भी रखी। अधिकारियों ने समस्या का जल्द समाधान करने का आश्वासन दिया।

जिला कलक्टर ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ली पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा रुपरेखा एवं राजस्व संबंधित कार्यो की समीक्षा बैठक

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। उपखंड अधिकारियों को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के दौरान 24 जून से 9 जुलाई तक आयोजित शिविरों में राजस्व संबंधी लंबित प्रकरणों को प्राथमिकता से निस्तारित कराने के दिए निर्देश 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में आमजन की अधिकाधिक सहभागिता सुनिश्चित करें अलवर। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समस्त उपखण्ड स्तरीय अधिकारियों की बैठक लेकर राजस्व संबंधित कार्यों, पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा रुपरेखा तथा 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों की समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जला कलक्टर ने राजस्व अधिकारियों को सक्रियता से कार्य करते हुए आमजन के राजस्व संबंधित कार्यों को गुणवत्ता के साथ यथासमय निस्तारित कराने के निर्देश दिए। उन्होंने लंबित पत्थरगढी, सीमाज्ञान, रास्तों के प्रकरण, आपसी सहमति से बंटवारे, रिवेन्यू रिकॉर्ड शुद्धिकरण इत्यादि प्रकार के प्रकरणों की उपखंडवार समीक्षा कर

लंबित प्रकरणों को नियमानुसार यथाशीघ्र निस्तारित कराने के निर्देश दिए। उन्होंने बजट घोषणाओं में भूमि आवंटन की वस्तु स्थिति जानकर त्वरित कार्यवाही करते हुए बजट घोषणाओं के लिए भूमि आवंटन के प्रस्ताव भिजवाने के निर्देश दिए। उन्होंने एनएफएसए के तहत नवीन आवेदनों के अप्रूवल की समीक्षा करते हुए प्राप्त आवेदनों पर आवश्यक कार्रवाही कर पेंडेंसी खत्म करने के निर्देश दिए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा रुपरेखा एवं योग दिवस की तैयारियों की समीक्षा की

जिला कलक्टर ने निर्देशित किया कि राज्य सरकार के निर्देशानुसार 24 जून से 9 जुलाई तक संचालित होने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा के दौरान आयोजित शिवरों का निर्धारित रूपरेखा अनुसार सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिए कि शिवरो में लम्बित पत्थरगढ़ी और सीमाज्ञान प्रकरणों का निस्तारण, नामांतरण, जमाबंदी अपडेशन, आपसी सहमति से विभाजन सहित रास्तों के लंबित प्रकरणों का निस्तारण किया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिये कि म्यूटेशन व जमाबंदी अपडेशन के तहत प्रत्येक पटवार मंडलवार 25-25 प्रकरण तथा आपसी सहमति से विभाजन के तहत प्रत्येक पटवार मंडलवार 5-5 प्रकरणों का निस्तारण करवाना सुनिश्चित करें। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा (एनएफएसए) के अन्तर्गत लम्बित प्रकरणों का निस्तारण एवं नवीन पात्र परिवारों एवं सदस्यों के आवेदन करवाए जाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि पखवाड़े में पात्र व्यक्तियों को जनहितकारी योजनाओं से लाभान्वित करवाना भी सुनिश्चित करें। जिला कलक्टर ने 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून को आयोजित होने वाले जिला स्तर से ग्राम पंचायत स्तर तक के कार्यक्रमों की समुचित तैयारी यथासमय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि योग दिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में अधिकाधिक आमजन की सहभागिता सुनिश्चित की जाए। वीसी में अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रथम मुकेश कायथवाल, अतिरिक्त जिला कलक्टर द्वितीय योगेश डागुर, अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर बीना महावर, उपखण्ड अधिकारी यशार्थ शेखर, प्रशिक्षु आईएएस ऐश्वर्यम प्रजापति, आयुर्वेद विभाग के उपनिदेशक करण सिंह दहिया एवं तहसीलदार अलवर रश्मि शर्मा सहित वीसी से समस्त उपखण्ड अधिकारी एवं तहसीलदार जुडे।

एकमुश्त समझौता योजना से किसानों को बड़ी राहत, अब तक 44 करोड़ रुपये का ब्याज माफ

अलवर के बलजीत मेव को मिली 37.23 लाख रुपये की छूट, 3,410 किसानों ने चुकाया मूलधन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राज्य सरकार की मुख्यमंत्री अवधिपार ब्याज राहत एकमुश्त समझौता योजना 2025-26 किसानों के लिए संजीवनी साबित हो रही है। सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक ने सोमवार को बताया कि योजना के तहत अब तक 3,410 ऋणी सदस्यों ने 33 करोड़ रुपये का मूलधन जमा कराया है, जिससे उन्हें 44 करोड़ रुपये की ब्याज राहत मिली है। राज्य सरकार की इस पहल से किसान दोबारा आर्थिक मुख्यधारा में लौट रहे हैं। मंत्री दक ने बताया कि योजना के तहत केवल मूलधन जमा करने पर राज्य सरकार अवधिपार ब्याज को शत-प्रतिशत माफ कर रही है। प्रदेश के 36 भूमि विकास बैंकों के 30,010 ऋणी सदस्य इस योजना के पात्र हैं। यदि सभी पात्र ऋणी मूलधन जमा करते हैं, तो उन्हें कुल 534 करोड़ रुपये की ब्याज माफी का लाभ मिल सकता है। इस योजना के तहत प्रदेश के सबसे बड़े अवधिपार ऋण खाते का निस्तारण अलवर जिले में किया गया है। लक्ष्मणगढ़ शाखा के टिटपुरी गांव निवासी बलजीत मेव और उनके पुत्र छज्जू मेव ने 18.61 लाख रुपये का मूलधन जमा कराया। बदले में राज्य सरकार ने उन्हें 37.23 लाख रुपये के ब्याज से राहत दी। इस तरह कुल 55.84 लाख रुपये के खाते का निपटारा किया गया। पूर्व में इस खाते की भूमि की नीलामी हो चुकी थी, लेकिन खरीदार नहीं मिलने पर बैंक ने भूमि को अपने नाम दर्ज करा लिया था। अब योजना से लाभ मिलने के बाद भूमि दोबारा बलजीत के नाम हो गई है। बलजीत मेव और उनके परिवार ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार जताते हुए कहा कि वे अत्यधिक ऋण और भूमि छिन जाने से मानसिक तनाव में थे, लेकिन इस योजना से उन्हें सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर मिला है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की दूरगामी सोच, वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान

अलवर जिले का हर गांव अभियान में उत्साह के साथ निभा रहा है सहभागिता

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। राजस्थान की भौगोलिक एवं मरूस्थलीय स्थिति के कारण कम वर्षा होने से यहां के नागरिकों से ज्यादा जल का महत्व और उसकी कीमत शायद ही कोई अन्य प्रदेश के निवासी जानते होंगे। देश में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बडा राज्य है लेकिन देश के कुल उपलब्ध पेयजल का मात्र एक प्रतिशत जल की उपलब्धता ही राजस्थान में है। आधुनिकता की दौड में तेजी से भूमिगत जल के दोहन के साथ युवा पीढ़ी हमारे पुरखों द्वारा वर्षा जल को सहजने की पर परागत पद्धतियों से उतनी ही तेजी से विमुख हो रही है। इन परिस्थितियों के मध्यनजर प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वर्षा जल की एक-एक अमृतमयी बूंदों को सहजने और पर परागत जल स्त्रोतों का पुनरोद्धार आमजन की सहभागिता के साथ करने के पुनीत उद्देश्य से वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान प्रारंभ किया है। इस अभियान के माध्यम से मुख्यमंत्री की दूरगामी सोच के साथ प्रदेशवासियों के सहयोग से प्रदेश को जल आत्मनिर्भर व हराभरा प्रदेश बनाने की दिशा में यह एक जन जल आंदोलन शुरू किया है। इसकी शुरूआत गंगा दशहरा व विश्व पर्यावरण दिवस के पावन अवसर पर मुख्यमंत्री ने स्वयं जयपुर के रामगढ बांध में श्रमदान कर की है। इससे स्पष्ट संदेश है कि जल व जल स्त्रोतों के संरक्षण के प्रति प्रदेश के मुखिया स्वयं कितने गंभीर है। 'वन्दे गंगा' जल संरक्षण अभियान वर्षा जल संरक्षण, जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार व नवीन संरचनाओं के निर्माण के साथ प्राकृतिक जल प्रवाह की व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा रहा है। यह अभियान न केवल पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में एक छोटा प्रयास है, बल्कि हमारी भविष्य की पीढियों के लिए जल संरक्षण का संकल्प भी है। इस अभियान का लक्ष्य है कि सूख चुके जल स्रोतों को आमजन के सहयोग से पुनर्जनन कर भूजल स्तर को बढ़ाया जाए और स्थानीय लोगों को लाभ पहुंचाना है। अलवर जिले में जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन में वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत राज्य सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुरूप 20 विभागों के द्वारा आमजन की सहभागिता से जल संरक्षण एवं पौधारोपण की गतिविधियां कराई जा रही है। अभियान के नोडल अधिकारी एवं जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सालुखे गौरव रवीन्द्र ने बताया कि अभियान के अंतर्गत ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, स्वयं भारत मिशन ग्रामीण एवं राजीविका द्वारा जिले के 33 नवीन अमृत सरोवर का शुभारंभ किया गया एवं समस्त पंचायत समितियों में 45 चारागाहों का चिन्हिकरण किया गया। उन्होंने बताया कि पौधारोपण कार्यों की अग्रिम तैयारी हेतु हरियालो राजस्थान कार्यक्रम के अंतर्गत जिले की 9 पंचायत समितियों में पेड लगाने के लिए 13800 गड्ढों की खुदाई कार्य एवं खाद्य पानी देने जैसे कार्य किये गए। उन्होंने बताया कि आमजन की सहभागिता से जिले में निरन्तर यह अभियान प्रारंभ रहेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अभियान के तहत बनाए गए जल स्त्रोतों में आगामी मानसून के समय वर्षा जल का संचय होगा और जिले के जल स्तर में वृद्धि होगी।

अयोध्या धाम आश्रम में हुई समीक्षा बैठक, आगामी कार्यक्रमों की तैयारियों पर की चर्चा

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। भक्तमाल कथा के सानंद संपन्न होने पर मंगलवार को अयोध्या धाम आश्रम में श्री सीताराम परिवार की बैठक आयोजित हुई। बैठक में श्री सीताराम परिवार से जुडे सभी भक्तजनों ने भाग लिया वहीं पावन सान्निध्य अयोध्याधाम आश्रम के महंत पूज्य गंगादास वेदांती रहे। आश्रम के सेवक क्षितिज माथुर ने बताया कि 28 मई से 3 जून तक आश्रम का वार्षिक उत्सव संपन्न हुआ। मंगलवार की बैठक में उस कार्यक्रम का पूरा लेखा-जोखा सभी के समक्ष प्रस्तुत किया गया एवं आगामी वर्ष भर के कार्यक्रमों की कार्ययोजना भी तैयार की गई। आश्रम के महंत गंगादास वेदांती ने प्रवचन भी किए और सभी श्रद्धालुओं से आश्रम की व्यवस्था हेतु एक प्रबंध समिति बनाने के लिए भी सुझाव रखा, जिस पर सभी ने प्रसन्नता और सहमति व्यक्ति की। कई श्रद्धालुओं ने कार्यक्रम के समय के अपने अनुभव साझा किए और सुधारात्मक सुझाव भी रखें। आश्रम व्यवस्थाओं में सहयोग करने वाले सभी श्रद्धालुओं का आभार भी व्यक्त किया गया। बैठक में जयशिव गुप्ता, अशोक उपाध्याय, अरविंद खंडेलवाल, कपिल शर्मा, महेश मुद्गल, अजय शर्मा, राजकुमार शर्मा, पदम जोशी, अनिमेष शर्मा, रविंदर गर्ग, विनोद गुप्ता, होतीलाल शर्मा, लक्ष्मेश सिंह, गोपाल शास्त्री, महेंद्र गोयल, अनिल शर्मा, मनदीप सिंह, ओम प्रकाश शर्मा, रोहिताश सैनी, हनुमान प्रसाद, बिहारी पाराशर, बिजेंद्र खंडेलवाल, राजेंद्र आचार्य, विजय सारस्वत, नरेश शर्मा, अंजना धाबाई, रीता नकडा, विकास शर्मा, मनीष शर्मा, पायल गर्ग, कृष्ण अवतार शर्मा, कमलकांत शर्मा, इंद्रा देवी, माया देवी, नत्थू शास्त्री, अशोक गुर्जर, राहुल शर्मा, लक्ष्मीनारायण वैष्णव, अशोक कुमार, नवीन मोदी, आशीष गुप्ता, यशवर्धन शर्मा, यथार्थ शर्मा, एकांश गर्ग सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। बैठक समाप्ति के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया।

24 जून से 9 जुलाई तक जिले में आयोजित होगा पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाडा

जिला कलक्टर ने पखवाडे के सफल क्रियान्वयन एवं प्रभावी मॉनिटरिंग हेतु अधिकारियों को दिए निर्देश

अलवर(निसं.)। राज्य सरकार के निर्देशानुसार जिले में 24 जून से 9 जुलाई तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाडा आयोजित किया जाएगा। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने पखवाडे के सफल आयोजन एवं क्रियान्वयन हेतु संबंधित विकास अधिकारी को सहायक नोडल अधिकारी तथा संबंधित जिला स्तरीय अधिकारी को विभाग हेतु नोडल अधिकारी नियुक्त किया है। साथ ही पखवाडे के तहत आयोजित कार्यक्रमों के कुशल पर्यवेक्षण एवं मॉनिटरिंग हेतु अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रथम को अलवर, मालाखेडा, थानागाजी के लिए, अतिरिक्त जिला कलक्टर द्वितीय को रैणी, राजगढ, गोविन्दगढ के लिए एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर को रामगढ, लक्ष्मणगढ एवं कठूमर उपखण्ड हेतु पर्यवेक्षणीय प्रभारी नियुक्त किया है। उन्होंने बताया कि पखवाडे के अंतर्गत शिविरों को आयोजन जिले की प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर प्रातः 9:30 बजे से सांय 5:30 बजे तक किया जाएगा। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि पखवाडे के अन्तर्गत आयोजित होने वाली गतिविधियों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु पूर्व तैयारी करना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिये कि शिविर कार्यक्रमों में आमजन की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए स्थानीय जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित करें। उन्होंने निर्देश दिये कि बारिश से पहले होने वाले कार्यों यथा सडकों की मरम्मत, नालों व नालियों की साफ-सफाई, बिजली के तारों के सम्पर्क में आने वाले पेड-पौधों की छंगाई, वर्षा जल संरक्षण हेतु जलग्रहण संरचनाओं की मरम्मत संबंधित इत्यादि कार्य प्राथमिकता के साथ पूर्ण कराया जाना सुनिश्चित करें।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों की समीक्षा बैठक हुई आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर बीना महावर की अध्यक्षता में 21 जून को जिले में मनाए जाने वाले 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। अतिरिक्त जिला कलक्टर शहर ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय पर 5 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित होंगे जिनमें मुख्य कार्यक्रम इंदिरा गांधी स्टेडियम में 'योगा फॉर वन अर्थ, वन हैल्थ' थीम पर प्रातः 7 से प्रातः 8 बजे तक आयोजित होगा। कार्यक्रम में प्रातः 6:30 बजे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उद्बोधन का लाइव प्रसारण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त मूसी महारानी छतरी, कंपनी बाग, बायोडाइवर्सिटी पार्क एवं सरिस्का क्षेत्र में भी योग दिवस कार्यक्रम आयोजित होंगे। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की समुचित तैयारियां समयबद्ध रूप से पूर्व में ही सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिये कि योग दिवस कार्यक्रम में अधिकाधिक जन सहभागिता सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिये कि जिला एवं ब्लॉक स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम के लिए विभागीय योग प्रशिक्षकों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के योग प्रशिक्षकों का चयन करें एवं उनकी सूची उपलब्ध कराए। उन्होंने सीएमएचओ को निर्देशित किया कि कार्यक्रम का प्रचार प्रसार फ्लैक्स व बैनर के जरिए कराकर आईईसी गतिविधियां आयोजित करावे ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों की कार्यक्रम में भागेदारी हो सके। उन्होंने निर्देश दिये कि कार्यक्रम स्थल पर मेडिकल टीम व एम्बुलेंस की व्यवस्था करे। साथ ही इसी प्रकार की व्यवस्थाएं भी ब्लॉक स्तर पर सुनिश्चित की जाए। उन्होंने यूआईटी के अधीक्षण अभियन्ता को निर्देशित किया कि समयबद्ध रूप से स्टेज निर्माण, माईक व्यवस्था, एलईडी स्क्रीन, लाईट व्यवस्था, जरनेटर आदि व्यवस्था सुनिश्चित करें। उन्होंने नगर निगम आयुक्त को निर्देशित किया कि कार्यक्रम स्थल पर पानी व साफ-सफाई व्यवस्था, शौचालय, डस्टबीन, एवं अग्नि शमन वाहन व्यवस्था करावे। उन्होंने पुलिस विभाग के अधिकारियों को यातायात व कानून व्यवस्था बनाए रखने के निर्देश दिये। उन्होंने महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारी को निर्देशित किया कि जिले में विभागीय कार्मिकों को निर्देशित कर कार्यक्रम का ग्राम स्तर तक अधिकाधिक प्रचार प्रसार करावे। उन्होंने जिला परिषद अधिकारी को निर्देशित किया कि पंचायत समिति व ग्राम स्तर पर आयोजित होने वाले योग कार्यक्रम में सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित की जावे। उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि राजकीय व निजी विद्यालयों में योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित करावे। उन्होंने स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों से कहा कि योग कार्यक्रम के लिए योग प्रशिक्षकों की व्यवस्था करावे व उनकी सूची उपलब्ध करावे। बैठक में नगर निगम आयुक्त जितेंद्र सिंह नरूका, उपखण्ड अधिकारी अलवर यशार्थ शेखर, आयुर्वेद विभाग के उप निदेशक करण सिंह दहिया, सहायक निदेशक सुरेश वर्मा, पर्यटन विभाग की सहायक निदेशक टीना यादव, नगर विकास न्यास अधिशासी अभियंता अशोक मदान सहित संबंधित अधिकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर राज्यभर की सरस डेयरियां करेंगी योग आयोजन, जयपुर में भव्य कार्यक्रम आज

योग, स्वास्थ्य जांच व कथक की प्रस्तुति बनेगी आकर्षण का केंद्र

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के अवसर पर राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन (आरसीडीएफ) की ओर से राज्यभर में सरस डेयरियों के माध्यम से योग कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। स्वस्थ जीवनशैली के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से सरस डेयरियों पर "स्वस्थ जीवन की ओर एक कदम" थीम पर आकर्षक होर्डिंग्स लगाए गए हैं। इस कड़ी में जयपुर के सेंट्रल पार्क में 20 जून को सायं 5.30 बजे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर भव्य योग कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। मुख्य अतिथि गोपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री जोराराम कुमावत और गृह एवं गोपालन राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म सहित अन्य विशिष्ट अतिथि कार्यक्रम में शामिल होंगे। योगाचार्य डॉ. महेंद्र सिंह राव की अगुवाई में प्रतिभागियों को प्राणायाम, ध्यान व सरल योगासनों का अभ्यास कराया जाएगा। साथ ही, आरसीडीएफ की पहल पर वहां एक निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया जाएगा, जिसमें बीपी, ब्लड शुगर जैसी जांचें व चिकित्सकीय परामर्श उपलब्ध होंगे। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण योग, ध्यान और कथक नृत्य का फ्यूजन रहेगा, जिसे जयपुर कथक केंद्र के कलाकार प्रस्तुत करेंगे। साथ ही, सरस द्वारा प्रतिभागियों को नमकीन छाछ और मीठी लस्सी जैसे स्वास्थ्यवर्धक पेय पदार्थ भी निशुल्क वितरित किए जाएंगे।

राजस्थान संकल्प पत्र 2023" की प्रगति की समीक्षा हेतु मंत्रिमंडलीय समिति की बैठक ली

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। डिप्टी सीएम डॉक्टर प्रेमचंद बैरवा की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में उपस्थित अधिकारियों को संकल्प पत्र में उल्लिखित लक्ष्यों एवं घोषणाओं के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। राज्य सरकार "संकल्प पत्र 2023" में किए गए प्रत्येक वादे को धरातल पर उतारने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है, ताकि समृद्ध, आत्मनिर्भर और विकसित राजस्थान के निर्माण की दिशा में ठोस प्रगति सुनिश्चित की जा सके। इस अवसर पर बैठक में कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़, कैबिनेट मंत्री सुरेश रावत व कैबिनेट मंत्री बाबूलाल खराडी उपस्थित रहे।

पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत का भीलवाड़ा दौरा

जयपुर टाइम्स

भीलवाड़ा(निसं.)। पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत 17 जून मंगलवार को रात्रि 11 बजे भीलवाड़ा पहुंचेंगे तथा रात्रि विश्राम सर्किट हाउस में करेंगे। कुमावत 18 जून को प्रातः 9.15 बजे भीलवाड़ा से प्रस्थान कर प्रातः 10 बजे मांडलगढ पहुंचेंगे। तथा वंदे गंगा अभियान के अंतर्गत झालेश्वर तालाब पर विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेंगे। कुमावत 11.30 बजे वंदे गंगा अभियान के अंतर्गत कार्यक्रमों, गतिविधियों की जिला स्तरीय समीक्षा बैठक पंचायत समिति सभागार मांडलगढ में लेंगे। कुमावत 12.30 बजे मांडलगढ से प्रस्थान कर दोपहर 1.15 बजे भीलवाड़ा पहुचेंगे तथा सरस डेयरी में तुलसी वितरण एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेंगे। तत्पश्चात् दोपहर 2 बजे भीलवाडा से सुमेरपुर के लिए प्रस्थान करेंगे।

जिला कलेक्टर ने किया ऑनलाइन योग प्रतियोगिता पोस्टर का विमोचन

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिला प्रशासन एवं आयुर्वेद विभाग द्वारा 21 जून को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रचार-प्रसार हेतु जिला कलेक्टर श्रीनिधि बी टी एवं उपखंड अधिकारी डॉ. साधना शर्मा द्वारा योग ऑनलाइन प्रतियोगिता का पोस्टर विमोचन किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने जिले में कार्यरत सभी विभागों के अधिकारियों, कर्मचारी, स्वयंसेवी एवं समाजसेवी संगठनों से योगासंगम पोर्टल पर अधिक से अधिक रजिस्ट्रेशन करने एवं योग दिवस पर पूरे जिले में अधिक से अधिक भागदारी सुनिश्चित करने के लिए कहा। योग नोडल अधिकारी डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि इस वर्ष की योग की थीम योग फॉर वन अर्थ वन हेल्थ है। इस थीम पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रतियोगिता आयोजित कराई जा रही है। संभागीय समन्वयक आयुर्वेद विभाग एवं योग प्रतियोगिता प्रभारी वरिष्ठ आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी डॉ. विनोद गर्ग ने बताया कि स्लोगन ड्राइंग, योग वीडियो तीन प्रकार की ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की जा रही हैं। जिसका प्रचार प्रचार सोशल मीडिया एवं अन्य माध्यम से किया जा रहा है एवं पोस्टर में अंकित लिंक पर क्लिक करके प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। योग दिवस पर आधिकारिक सहभागिता के लिए जवाहर नवोदय विद्यालय, राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल एवं धौलपुर मेडिकल कॉलेज में उपस्थित प्रधानाचार्य एवं प्रशासनिक अधिकारियों से संपर्क कर महत्पूर्ण जानकारी दी। साथ ही इसी कड़ी में जयपुर कोचिंग क्लासेस में योग संबंधित प्रश्नोत्तरी कार्यालय का आयोजन हुआ उसमें विजेताओं को सम्मानित किया गया। आयुर्वेद विभाग की प्रचार-प्रसार एवं प्रतियोगिता टीम डॉ. त्रिलोक चंद वर्मा जिला योग प्रशिक्षक, डॉ मंजू मीणा, डॉ जाकिर ने योग की जानकारी दी। इस अवसर पर जवाहर नवोदय विद्यालय की प्राचार्य अर्चना सिंह, राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल से प्रशासनिक अधिकारी सुनील दत्त तथा मेडिकल कॉलेज धौलपुर से प्रोफेसर डॉ. संतोष गुप्ता आदि उपस्थित रहे।जिला कलेक्टर ने किया ऑनलाइन योग प्रतियोगिता पोस्टर का विमोचन आयुर्वेद विभाग द्वारा जवाहर नवोदय विद्यालय, मेडिकल कॉलेज, राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल में किया योग संगम रजिस्ट्रेशन एवं प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए किया जागरूक धौलपुर, 17 जून। जिला प्रशासन एवं आयुर्वेद विभाग द्वारा 21 जून को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रचार-प्रसार हेतु जिला कलेक्टर श्रीनिधि बी टी एवं उपखंड अधिकारी डॉ. साधना शर्मा द्वारा योग ऑनलाइन प्रतियोगिता का पोस्टर विमोचन किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने जिले में कार्यरत सभी विभागों के अधिकारियों, कर्मचारी, स्वयंसेवी एवं समाजसेवी संगठनों से योगासंगम पोर्टल पर अधिक से अधिक रजिस्ट्रेशन करने एवं योग दिवस पर पूरे जिले में अधिक से अधिक भागदारी सुनिश्चित करने के लिए कहा।

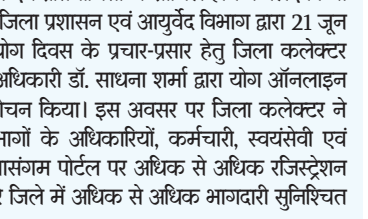

जयपुर में 11 व 12 दिसम्बर को होगा 'राइजिंग राजस्थान पार्टनरशिप कॉन्क्लेव-2025' का आयोजन

राजस्थान की निवेश आधारित राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय साझेदारी को मिलेगी नई गति : भजनलाल शर्मा

राइजिंग राजस्थान समिट-2024 के एमओयू की प्रगति के साक्षी बनेंगे देश-विदेश के निवेशक

जयपुर टाइम्स

जयपुर(निस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि वर्ष 2047 तक विकसित राजस्थान के संकल्प को साकार करने में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट की अहम भूमिका है। पिछले वर्ष हुए इस आयोजन ने निवेश के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छुआ और राजस्थान प्रमुख निवेश केन्द्र के रूप में उभरा है। इसी कड़ी में जयपुर में 11 व 12 दिसम्बर को आयोजित होने वाली राइजिंग राजस्थान पार्टनरशिप कॉन्क्लेव-2025 प्रदेश की राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निवेश साझेदारी को और मजबूत करेगी। शर्मा मंगलवार को मुख्यमंत्री निवास पर राइजिंग राजस्थान पार्टनरशिप कॉन्क्लेव-2025 की कार्ययोजना के संबंध में आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कॉन्क्लेव में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024 के दौरान हुए एमओयू की क्रियान्विति से प्रदेश के औद्योगिक व आर्थिक परिदृश्य में आए बदलावों के बारे में निवेशकों को विस्तृत जानकारी दी जाएगी। उन्होंने निर्देश दिए कि कान्क्लेव में सिटी टू सिटी, स्टेट टू स्टेट और इन्डस्ट्री टू इन्डस्ट्री के आधार पर राजस्थान व अन्य राज्यों तथा देशों के मध्य निवेश साझेदारी विकसित की जाए, जिससे प्रदेश के विकास को नए आयाम मिले। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कॉन्क्लेव निवेश की नई संभावनाओं के अवसर तलाशने और उन पर कार्य करने की विशेष रणनीति के अन्तर्गत मील का पत्थर साबित होगी। इस दौरान निवेश योग्य परियोजनाओं की रूपरेखा पर प्रभावी रूप से कार्य किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि कॉन्क्लेव का प्रमुख लक्ष्य राइजिंग राजस्थान समिट के तहत हस्ताक्षरित हुए एमओयू की प्रगति का विवरण पेश करने के साथ ही, वर्ष 2026 के प्रस्तावित राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट को लेकर हमारे विजन को प्रस्तुत करना है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को कॉन्क्लेव की तैयारी के संबंध में समयबद्ध तरीके से कार्य करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि संबंधित विभागों के मध्य पारस्परिक समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से वरिष्ठ अधिकारी की समन्वयक के रूप में नियुक्ति की जाए। साथ ही, उन्होंने राइजिंग राजस्थान समिट के अन्तर्गत हस्ताक्षरित एमओयू की नवंबर, 2025 तक प्रस्तावित ग्राउंड ब्रेकिंग के कार्यों की विस्तृत रिपोर्ट विभागवार तैयार करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि कॉन्क्लेव से पूर्व राज्य सरकार राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय रनअप कार्यक्रमों के साथ ही, थीमेटिक विभागीय कार्यक्रमों का भी आयोजन करेगी। उन्होंने राइजिंग राजस्थान समिट-2024 के अन्तर्गत हुए एमओयू के निवेशकों की भी विभागवार बैठक आयोजित कर उनसे फीडबैक लेने के विशेष दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश की खनिज संपदा के संबंध में भी एक विशेष सेमीनार आयोजित की जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार मजदूर, महिला, युवा व किसान के कल्याण के लिए समर्पित है, इसलिए इस कॉन्क्लेव में इन वर्गों पर आधारित विशेष सत्र भी आयोजित किया जाए। बैठक में अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि दो दिवसीय पार्टनरशिप कॉन्क्लेव में पैनल डिस्कशन, राउण्ड टेबल और फायरसाइट चैट के साथ ही, एंकर इन्वेस्टर्स सम्मेलनों का आयोजन प्रस्तावित है। इस दौरान संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

गलता जी परिसर में विकास कार्यों से बदली तस्वीर

प्रभारी मंत्री जोगाराम पटेल ने किया निरीक्षण, वंदे गंगा अभियान में लिया श्रमदान

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) जयपुर जिले में धार्मिक और पर्यावरणीय विकास की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए जिला प्रशासन ने मंदिर ठिकाना श्री गलता जी परिसर का कायाकल्प किया है। मंगलवार को राजस्थान सरकार के जिला प्रभारी मंत्री जोगाराम पटेल ने गलता जी मंदिर पहुंचकर यहां हुए विभिन्न विकास कार्यों का जायजा लिया और पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों की खुशहाली की कामना की। मंत्री पटेल ने ऋषि गालव कुंड में श्रमदान करते हुए गंगा पूजन एवं गंगा आरती में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने "एक पेड़ मां के नाम" अभियान के तहत वृक्षारोपण भी किया और हरियालो राजस्थान के लिए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में नगर निगम हैरिटेज की महापौर कुसुम यादव सहित जनप्रतिनिधि और अधिकारी उपस्थित रहे। प्रभारी मंत्री ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा द्वारा शुरू किया गया वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान राज्य को जल स्वावलंबी बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। उन्होंने कहा कि गलता जी जैसे तीर्थ स्थलों का पुनरुद्धार आस्था के साथ-साथ जल स्रोतों के संरक्षण के लिए भी आवश्यक है। बाद में आरटीडीसी गेस्ट हाउस में हुई समीक्षा बैठक में मंत्री पटेल ने जिला प्रशासन के कार्यों की सराहना की। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने गलता जी में हुए कार्यों का प्रस्तुतिकरण दिया। बैठक में आयुक्त नगर निगम ग्रेटर रुक्मणी रियार, हैरिटेज आयुक्त अरुण कुमार हसीजा, जिला परिषद सीईओ प्रतिभा वर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। मंत्री ने मानसून से पूर्व जल निकासी व्यवस्था दुरुस्त करने, नालों की सफाई शीघ्र पूर्ण करने तथा जल स्रोतों के जीर्णोद्धार के निर्देश दिए। उन्होंने गलता परिसर स्थित गौशाला का निरीक्षण कर गायों को हरा चारा भी खिलाया। कार्यक्रम के अंत में पटेल ने आमागढ़ अभयारण्य और जग्गा की बावड़ी में वंदे गंगा अभियान के अंतर्गत हुए कार्यों का भी निरीक्षण किया और वहां मौजूद पेड़ों पर परिंडे बांधे। उन्होंने वन्य पर्यटन की संभावनाओं पर अधिकारियों से चर्चा भी की।

प्रभारी मंत्री जोराराम कुमावत ने वंदे गंगा अभियान की समीक्षा बैठक ली

जल संरक्षण और जलभराव की समस्याओं के स्थायी समाधान पर दिया जोर

जयपुर टाइम्स

बाड़मेर(निसं.)। बाड़मेर जिले के प्रभारी मंत्री एवं पशुपालन, गोलपान तथा देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने मंगलवार को जिला कलेक्ट्रेट कॉन्फ्रेंस हॉल में वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की समीक्षा बैठक ली। उन्होंने मानसून से पूर्व प्राचीन जल स्रोतों जैसे कुएं, बावड़ियां, तालाब और नाड़ियों की सफाई और संरक्षण के निर्देश दिए। मंत्री कुमावत ने कहा कि जल संरक्षण सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने अभियान के तहत पुराने जल स्रोतों के जीर्णोद्धार और अधिक से अधिक वृक्षारोपण पर जोर देते हुए "हरियालों राजस्थान" कार्यक्रम को गति देने को कहा। उन्होंने वाटरशेड विभाग को भूजल संरक्षण हेतु समर्पित बजट का प्रभावी उपयोग करने और सार्वजनिक निर्माण विभाग को सड़कों के किनारे पौधारोपण कराने के निर्देश भी दिए। पीएचईडी विभाग को गांवों में नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित करने को कहा गया। बैठक में जिला परिषद के सीईओ रवि कुमार ने अब तक की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। शहर में जलभराव की समस्या पर चिंता जताते हुए प्रभारी मंत्री ने नगर परिषद को डीपीआर तैयार कर स्थायी समाधान निकालने के निर्देश दिए। उन्होंने सार्वजनिक निर्माण विभाग, पीएचईडी, नगर परिषद, यूआईटी और आरयूआईडीपी को मिलकर योजना बनाने को कहा।

बलदेव नगर के ड्रैनेज के लिए विशेष योजना

शहर के बलदेव नगर क्षेत्र में जल निकासी और सीवरेज व्यवस्था के लिए नया ड्रेनेज प्लान तैयार करने के निर्देश दिए गए ताकि स्थानीय निवासियों को राहत मिल सके।

उपस्थित अधिकारीगण

बैठक में विधायक डॉ. प्रियंका चौधरी, जिला कलक्टर टीना डाबी, एडीएम राजेन्द्र सिंह चांदावत, यूआईटी सचिव श्रवण सिंह राजावत, समाजसेवी अनंतराम विश्नोई, दीपक कड़वासरा, देवीलाल कुमावत सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की भागीदारी से साकार होगा जल संरक्षण का संकल्प

वंदे गंगा अभियान के तहत मीडिया राउंड टेबल आयोजित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों के तहत मंगलवार को जयपुर जिला प्रशासन द्वारा वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत मीडिया राउंड टेबल का आयोजन किया गया। इस आयोजन में राष्ट्रीय, राज्य एवं स्थानीय स्तर के प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल मीडिया संस्थानों के प्रतिनिधियों सहित सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स ने सक्रिय भागीदारी निभाई। जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग, कृषि, जल संसाधन, जन स्वास्थ्य, वन, नगर निगम, उद्यानिकी, भू-जल एवं राजीविका विभागों के अधिकारियों ने प्रस्तुतिकरण देकर जिले में चल रहे जल संरक्षण कार्यों एवं नवाचारों की विस्तृत जानकारी साझा की। मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा ने कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की सक्रिय व सकारात्मक भागीदारी से जल संरक्षण की संकल्पना को जमीनी धरातल पर साकार किया जा सकता है। उन्होंने जिले में अब तक किए गए जल संरक्षण कार्यों और अभियान के तहत संचालित गतिविधियों जैसे साफ-सफाई, पौधारोपण, पर्यावरण जागरूकता आदि की जानकारी दी। कार्यक्रम में वाटरशेड विभाग के अतिरिक्त मुख्य अभियंता दिनेश कुमार ने वर्षा जल संग्रहण को भूजल संवर्धन का प्रभावी माध्यम बताया और पारंपरिक जल तकनीकों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। वर्मा ने बताया कि जल संरक्षण को जन आंदोलन का स्वरूप देने हेतु आमजन की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने अकार्यशील हैंडपंप, सूखे कुओं, नलकूपों से भूजल पुनर्भरण, रिचार्ज शॉफ्ट के माध्यम से वर्षा जल संग्रहण, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटने हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलक्टर मुकेश कुमार मूंड, जिला परिषद के एसीईओ शेर सिंह लुहाड़िया सहित संबंधित विभागों एवं सूचना जनसंपर्क विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

नगर निगम ग्रेटर ने स्थापित किये बाढ़ नियत्रंण केन्द्र

आयुक्त रूकमणि रियाड़ ने आपदा प्रबंधन की व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के दिये निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर द्वारा आपदा प्रबंधन संबंधी सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। 15 जून से मानसून समाप्ति तक बाढ़ नियत्रंण केन्द्र स्थापित किये गये है। आयुक्त रूकमणि रियाड़ ने सभी अधिकारियों को अलर्ट मोड़ पर रहने के निर्देश दिये है। आयुक्त ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार में 4 बाढ़ नियत्रंण केन्द्र बनाये गये है जिनके अन्तर्गत मानसरोवर फायर स्टेशन के क्षेत्राधिकार में सांगानेर एवं मानसरोवर जोन, मालवीय नगर फायर स्टेशन के अन्तर्गत मालवीय नगर एवं जगतपुरा जोन, विश्वकर्मा फायर स्टेशन के अन्तर्गत मुरलीपुरा एवं विद्याधर नगर जोन रहेगे। इस वर्ष खिरणी फाटक फ्लाईओवर के नीचे वार्ड पार्षद कार्यालय नं. 39 के पास झोटवाड़ा जोन एवं आस-पास के क्षेत्रों के लिये बाढ़ नियत्रंण कक्ष बनाया गया है। उन्होंने कहा कि बाढ़ नियत्रंण केन्द्रों के अतिरिक्त प्रत्येक जोन कार्यालयों पर भी नियमित रूप से बाढ़ नियत्रंण केन्द्र कार्य करेंगा जिसके प्रभारी अधिकारी संबंधित जोन उपायुक्त होगे। आयुक्त ने बताया कि बारिश के समय पानी से भरे हुए स्थानों में पानी की निकासी के लिये मडपंप, पंपसेट, मिट्टी के कट्टे आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाये। इसके साथ ही उन्होंने नगर निगम के क्षेत्राधिकार में आने वाले भवनों, उद्यानों, स्ट्रीट लाईट, पोल आदि सार्वजनिक स्थानों पर कोई भी जनहानि ना हो इसके लिये खुले पड़े बिजली के तारों को ठीक किया जाये। उन्होंने कहा कि बाढ़ नियत्रंण केन्द्र पर प्राप्त होने वाली शिकायतों को रजिस्टर में इन्द्राज किया जाये और शिकायतों का निस्तारण तत्काल किया जाये तथा सभी अधिकारी कर्मचारी वायरलैस चालू हालत में रखे जिससे किसी आपात स्थिति में निपटा जा सके। मानसरोवर फायर स्टेशन, विश्वकर्मा फायर स्टेशन, मालवीय नगर स्टेशन, खिरणी फाटक फ्लाईओवर के नीचे वार्ड पार्षद कार्यालय नं. 39 के पास स्थित बाढ़ नियत्रंण कक्ष को सुगमता से चलाने के लिये सहायक अभियन्ताओं, कनिष्ठ अभियन्ताओं की ड्यूटी लगा दी गई है। यह अधिकारी कर्मचारी तीन पारियों में कार्य करेंगे जिसमें प्रथम पारी सुबह 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक, द्वितीय पारी दोपहर 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक तथा तृतीय पारी रात्रि 10 बजे से सुबह 6 बजे तक रहेगी। बाढ़ नियत्रंण कक्ष के लिये हैल्पलाइन नंबर जारी किये गये है जिसके अन्तर्गत मानसरोवर फायर स्टेशन-0141-2395566, 8764880060 तथा मालवीय नगर फायर स्टेशन के लिये 0141-2755930, 8764880030, विश्वकर्मा फायर स्टेशन में 0141-2330080, 8764880070, खिरणी फाटक फ्लाईओवर के नीचे वार्ड पार्षद कार्यालय नं. 39 के पास स्थापित बाढ़ नियत्रंण कक्ष का हेल्पलाइन नम्बर 8764880061 है।

महिला अधिकारिता विभाग की योजनाओं की समीक्षा बैठक सम्पन्न

जयपुर(कासं.)। जिला कलेक्ट्रेट सभागार में मंगलवार को महिला अधिकारिता विभाग की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता अतिरिक्त जिला कलेक्टर जयपुर-चतुर्थ देवेन्द्र कुमार जैन ने की। बैठक में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, सक्षम जयपुर अभियान, जिला स्तरीय महिला समाधान समिति, पन्नाधाय सुरक्षा एवं सम्मान केन्द्र, तेरे-मेरे सपने विवाह पूर्ण संवाद केन्द्र, वन स्टॉप सेंटर, महिला हेल्पलाइन 181, राजस्थान डायन प्रताड़ना निवारण योजना एवं कालीबाई भील उड़ान योजना की प्रगति की समीक्षा की गई। इस अवसर पर महिला अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक डॉ. राजेश डोगीवाल ने विभागीय योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी तथा विभिन्न योजनाओं के तहत प्राप्त लक्ष्यों, चुनौतियों एवं आगामी कार्ययोजना पर चर्चा की।

लाखों सपने साकार करेगी वंदे भारत

कश्मीर तक रेल पहुंचना केवल भौगोलिक नहीं, सांस्कृतिक, शैक्षिक और मानसिक दूरी को पाटने का राष्ट्रीय प्रयास है। दर्जनों सुरंगों और पुलों से गुजरती इस रेललाइन पर स्थित टी-49 सुरंग भारत की सबसे लंबी रेलवे सुरंग है, जो करीब 13 किमी लंबी है। चिनाब नदी पर बना रेल पुल तो विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। यह पुल मात्र स्टील और कंक्रीट का ढांचा नहीं, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के नेतृत्व में भारतीय रेल की अद्वितीय उपलब्धि है। यह बदलते भारत की संकल्पशक्ति और सामर्थ्य का परिचायक है। इसके माध्यम से अब प्रत्येक नागरिक तक पहुंच को लक्ष्य बनाया गया है, चाहे वह पर्वतीय भू-भाग में स्थित हो या दिल्ली से दूर किसी सीमांत गांव में। 2024 में भारत सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, जम्मू- कश्मीर से साठ हजार से अधिक छात्र उच्च शिक्षा के लिए राज्य के बाहर गए। इनमें आधे से अधिक पंजाब और दिल्ली के आसपास गए।

पहलगाम में भारत की सामूहिक चेतना पर एक गहरे, दर्दनाक आघात और उसकी पीड़ा के बीच पिछले दिनों जब कश्मीर घाटी में वंदे भारत एक्सप्रेस की सीटी गूंजी तो यह मात्र एक ट्रेन की उद्घोषणा नहीं थी। यह कश्मीर घाटी में 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के प्रधानमंत्री मोदी के मंत्र का साक्षात रूप था। प्रधानमंत्री की ओर से कटड़ा से श्रीनगर तक वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाना बस एक रेलगाड़ी के संचालन के शुभारंभ का नहीं। यह उस वंचित और आहत भू-भाग के पुनः भारत की मुख्यधारा से जुड़ने का प्रतीक है, जिसकी घाटियां अनुच्छेद 370 हटने के पूर्व वर्षों तक न केवल भौगोलिक रूप से, बल्कि मानसिक रूप से भी देश के शेष भाग से कटी थीं।

कश्मीर तक रेल पहुंचना केवल भौगोलिक नहीं, सांस्कृतिक, शैक्षिक और मानसिक दूरी को पाटने का राष्ट्रीय प्रयास है। दर्जनों सुरंगों और पुलों से गुजरती इस रेललाइन पर स्थित टी-49 सुरंग भारत की सबसे लंबी रेलवे सुरंग है, जो करीब 13 किमी लंबी है। चिनाब नदी पर बना रेल पुल तो विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। यह पुल मात्र स्टील और कंक्रीट का ढांचा नहीं, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के नेतृत्व में भारतीय रेल की अद्वितीय उपलब्धि है। यह बदलते भारत की संकल्पशक्ति और सामर्थ्य का परिचायक है। इसके माध्यम से अब प्रत्येक नागरिक तक पहुंच को लक्ष्य बनाया गया है, चाहे वह पर्वतीय भू-भाग में स्थित हो या दिल्ली से दूर किसी सीमांत गांव में। 2024 में भारत सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, जम्मू- कश्मीर से साठ हजार से अधिक छात्र उच्च शिक्षा के लिए राज्य के बाहर गए। इनमें आधे से अधिक पंजाब और दिल्ली के आसपास गए। ये छात्र कई बार मौसमी अवरोधों और असुरक्षित सड़क मार्ग का सामना करते थे। पिछले कुछ वर्षों में मौसम की मार के कारण सड़क परिवहन प्रतिवर्ष औसतन महीने भर से अधिक बंद रहा। ये बंद राजमार्ग विद्यार्थियों की उपस्थिति, परीक्षा और समग्र शैक्षिक प्रवाह को बाधित करते हैं। यह देखा गया है कि सामाजिक असमानता की पहली रेखा स्कूल की चौखट पर खिंचती है। आवागमन की समस्या गंभीर हो तो, अभिभावक बच्चों को पढ़ने के लिए भेजने से कतराते हैं। लड़कियों का शिक्षा के लिए संघर्ष तो और कठिन हो जाता है। हरियाणा के नूंह जिले जैसे उदाहरण बताते हैं कि जहां स्कूल तक पहुंचना कठिन होता है, वहां महिला और पुरुष साक्षरता में अंतर बहुत बड़ा होता है। कश्मीर जैसे दुर्गम क्षेत्र में जहां जलवायु और सुरक्षा दोनों ही चुनौतीपूर्ण हैं, वहां सुगम, तीव्र और सुरक्षित रेल यात्रा की व्यवस्था पर्यटन, व्यापार और अन्य सुविधाओं के साथ शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना है। इसका प्रभाव यह होगा कि अब किसी छात्र-छात्रा को विश्वविद्यालय तक पहुंचने के लिए अवरोधों से नहीं जूझना होगा। यह रेल-सेवा महिला सशक्तीकरण की दृष्टि से भी क्रांतिकारी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की मूल भावना शिक्षा को केवल 'कक्षा' तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तक विस्तार देती है। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के विशेष प्रयास से जम्मू विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई ज्ञानोदय एक्सप्रेस जैसी पहल में भागीदार बनीं जम्मू-कश्मीर की कई छात्राओं ने स्वीकार किया था कि वह उनकी पहली रेल यात्रा थी। वे रेलगाड़ी में सवार होकर बाहर निकलीं, नए शहरों, विश्वविद्यालयों, संग्रहालयों और पुस्तकालयों को देखा। यह एक प्रकार की बौद्धिक मुक्ति थी, जिसकी राह अब वंदे भारत जैसी रेल सेवाएं और सुगम कर रही हैं। छात्र-छात्राओं को भारत की विविधता से रूबरू कराना केवल सांस्कृतिक सजगता का निर्माण नहीं करता, बल्कि यह उन्हें नागरिकता के उस भाव से जोड़ता है, जिसमें वे अपने को न केवल कश्मीर की, बल्कि पूरे भारत की संतान समझते हैं। कश्मीर की वादियों तक पहुंची रेललाइन केवल पटरियों का जोड़ नहीं है। यह असमान अवसरों को समान मंच पर लाने की एक मौन क्रांति है। यह उस अंतर्संबंध को भी पुनर्स्थापित करती है, जिसमें भारत का हर कोना एक-दूसरे से भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से जुड़ा हुआ है। वंदे भारत एक्सप्रेस के उद्घाटन के साथ ही जैसे घाटी की खिड़कियां खुल गई हैं। बर्फ से ढकी पहाड़ियों के उस पार अब केवल बंकर नहीं, पुल हैं। अब संदेह को पीछे छोड़ती अनंत संभावनाएं हैं।

सम्पादकीय

किसी भी दुर्घटना से सीख नहीं ले रहा शासन-प्रशासन

अहमदाबाद में पिछले सप्ताह एअर इंडिया का एक विमान उड़ाने भरने के तुरंत बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसके बाद बीते रविवार को केदारनाथ के पास श्रद्धालुओं को लेकर आ रहा हेलिकाप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें एक बच्ची समेत सात लोगों की मौत हो गई। उसी दिन 242 हज यात्रियों को लेकर जेद्दा से लखनऊ पहुंचे सऊदी एअरलाइंस के एक विमान के उतरते समय उसके पहियों से धुआं निकलने की घटना हुई। सोमवार को दिल्ली के लिए उड़ान भरने वाले एअर इंडिया के एक विमान को तकनीकी खराबी के कारण वापस हांगकांग जाना पड़ा। इन सभी घटनाओं ने हवाई यात्रा की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या उड़ान परिचालन के नियमों और दिशा-निर्देशों में कहीं कोई खामी है या फिर इनका पालन करने में कोताही बरती जा रही है? इस तरह के हादसों पर अंकुश लगाने के लिए सरकार से लेकर विमानन कंपनियों की ओर से धरातल पर पुख्ता बंदोबस्त क्यों नहीं किए गए हैं? उत्तराखंड में केदारनाथ के पास गौरीकुंड में हुए हेलिकाप्टर हादसे ने इन सवालों को और गंभीर बना दिया है। इस हेलिकाप्टर का संचालन कर रही कंपनी पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया गया है। पुलिस में दर्ज मामले में कहा गया है कि हेलिकाप्टर के संचालन के लिए सुबह छह से सात बजे तक का प्रथम स्लाट आबंटित किया गया था, जबकि यह दुर्घटना उससे पहले ही सुबह साढ़े पांच बजे हुई है। अगर यह दावा सही है, तो साफ है कि हेलिकाप्टर ने तय समय से पहले ही उड़ान भर ली थी। उस दिन सुबह से ही धुंध छाई हुई थी और उड़ान भरने से पहले मौसम की स्थिति को ठीक से नहीं जांचा गया। कोई दोराय नहीं है कि चारधाम यात्रा के लिए हेलिकाप्टर सेवाएं श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक हैं। खासकर बच्चों व बुजुर्गों को, जिनके लिए यह यात्रा मुश्किल भरी होती है। मगर, हवाई यात्रा को सुरक्षित बनाने की जिम्मेदारी राज्य व केंद्र सरकार पर भी है। राज्य के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इस हादसे के बाद कहा कि चारधाम में सेवा दे रहे पायलटों के हिमालयी क्षेत्रों में उड़ान अनुभवों की जांच होगी। मगर, सवाल यह है कि कोई बड़ा हादसा होने से पहले ही एहतियाती तौर पर इस तरह के इंतजाम क्यों नहीं किए जाते। इस साल चारधाम मार्ग पर हादसे या हेलिकाप्टर को आपात स्थिति में उतारने की यह पांचवीं घटना है। इससे पहले आठ मई को उत्तरकाशी के गंगनानी में निजी कंपनी का हेलिकाप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें छह लोगों की मौत हो गई थी।ऐसी ही एक भयावह घटना रविवार को महाराष्ट्र के पुणे में हुई, जहां इंद्रायणी नदी पर बना लोहे का एक पुल ढह गया। इस पुल को जिला प्रशासन ने खतरनाक घोषित किया था और चेतावनी बोर्ड भी लगाए गए थे। पर क्या सिर्फ चेतावनी बोर्ड लगाने से सरकार व प्रशासन की जिम्मेदारी पूरी हो जाती है? अगर वह जीर्णावस्था में था, तो पर्यटकों के वहां जाने पर पूर्ण रोक क्यों नहीं लगाई गई।

शाह ने मौर्य को 'मेरे मित्र' पुकारा तो छिड़ गई सियासी चर्चा

अजय कुमार,वरिष्ठ पत्रकार

लखनऊ में आयोजित नियुक्ति पत्र वितरण समारोह ने जहां हजारों युवाओं के जीवन में एक नई शुरुआत की उम्मीद जगाई, वहीं राजनीति के गलियारों में इस कार्यक्रम ने जबरदस्त हलचल भी पैदा कर दी। वजह केवल यह नहीं थी कि राज्य सरकार द्वारा इतनी बड़ी संख्या में पारदर्शी तरीके से नौकरियों का वितरण हुआ, बल्कि इस मंच से केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बोले गए कुछ शब्द ऐसे थे, जिनका राजनीतिक अर्थ निकालने में नेता से लेकर विश्लेषक तक जुट गए हैं। उत्तर प्रदेश की राजनीति में कौन कितना भारी और किसकी स्थिति कितनी मजबूत है, इसका पैमाना अब केवल चुनावी आंकड़ों से नहीं बल्कि मंच पर बोले गए संबोधनों और दी गई उपाधियों से भी तय होने लगा है। यही कारण है कि अमित शाह द्वारा उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को 'मेरे मित्र' कहकर पुकारना इतना बड़ा मुद्दा बन गया है। लखनऊ में आयोजित इस नियुक्ति पत्र वितरण समारोह में अमित शाह के साथ मंच पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य मौजूद थे। मंच की व्यवस्था भी प्रतीकात्मक थी अमित शाह बीच में, उनके दाएं योगी और बाएं मौर्य। कार्यक्रम की शुरुआत में अमित शाह ने अपने संबोधन में कहा, "इस ऐतिहासिक अवसर पर मेरे साथ उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय और सफल मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी तथा मेरे मित्र और उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य जी मंच पर उपस्थित हैं।" यह छोटा सा वाक्य ही पूरे उत्तर प्रदेश की राजनीति को झकझोरने के लिए काफी था। एक तरफ यह योगी आदित्यनाथ को 'लोकप्रिय और सफल' कहकर मुख्यमंत्री पद पर उनके अधिकार को पुष्ट करता है, तो दूसरी तरफ केशव प्रसाद मौर्य को 'मित्र' कहकर पार्टी के भीतर उनके महत्व को एक तरह से सार्वजनिक समर्थन प्रदान करता है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस एक शब्द में कई संदेश छिपे हैं। सबसे पहले तो यह स्पष्ट होता है कि दिल्ली के शीर्ष नेतृत्व की नजरें अभी भी योगी आदित्यनाथ पर पूरी तरह टिकी हैं और उनके नेतृत्व पर सवाल उठाने वालों को यह समझाने की कोशिश की गई है कि मुख्यमंत्री का चेहरा फिलहाल बदले जाने की कोई योजना नहीं है। लोकसभा चुनाव 2024 में यूपी से अपेक्षित परिणाम न मिलने पर जब कुछ नेताओं ने योगी आदित्यनाथ पर अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदारी डालने की कोशिश की थी, तब भी खुद अमित शाह ने सार्वजनिक रूप से योगी की भूमिका की सराहना की थी। अब जबकि विधानसभा चुनाव 2027 की दिशा में भाजपा अपनी तैयारी तेज कर रही है, ऐसे में पार्टी के भीतर किसी प्रकार के भ्रम या टकराव की संभावना खत्म करने की कोशिश हो रही है। वहीं दूसरी ओर, अमित शाह द्वारा केशव प्रसाद मौर्य को मित्र कहना केवल औपचारिक संबोधन नहीं था। यह उस वर्ग विशेष के लिए एक सधा हुआ राजनीतिक संदेश था, जिसे मौर्य प्रतिनिधित्व करते हैं। ओबीसी वर्ग, खासकर कुशवाहा और मौर्य समुदाय में केशव प्रसाद मौर्य की पकड़ मजबूत मानी जाती है। 2017 में जब बीजेपी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की थी, तब मौर्य प्रदेश अध्यक्ष थे और उनकी रणनीति से भाजपा ने पिछड़े वर्गों में गहरी पैठ बनाई थी। हालांकि 2022 के विधानसभा चुनाव में सिराथू से उनकी हार के बाद उनके प्रभाव को लेकर सवाल उठने लगे थे, परंतु संगठन में उनका महत्व बना रहा। अमित शाह द्वारा उन्हें मित्र कहे जाने से यह स्पष्ट संकेत दिया गया है कि भले ही वह चुनाव हार गए हों, परंतु पार्टी में उनका राजनीतिक महत्व कम नहीं हुआ है। यह भी समझना जरूरी है कि अमित शाह जैसे रणनीतिकार कोई भी शब्द यूं ही मंच से नहीं बोलते। 'मित्र' शब्द आमतौर पर तब प्रयोग किया जाता है जब निजी संबंधों को दर्शाना हो और सार्वजनिक रूप से किसी के प्रति सम्मान जताना हो। इस लिहाज से यह बयान कई मायनों में मौर्य के लिए सम्मानसूचक था और उन तमाम चर्चाओं को खारिज करने की कोशिश थी जिनमें कहा जा रहा था कि पार्टी में अब मौर्य की स्थिति कमजोर हो रही है। यह भी एक प्रकार का संतुलन बैठाने की कोशिश कही जा सकती है एक तरफ योगी को पूरी ताकत से समर्थन देना और दूसरी ओर मौर्य को भी सम्मानपूर्वक साथ रखना। लेकिन इस राजनीतिक संदेश का असर केवल भाजपा तक सीमित नहीं रहा। विपक्ष, खासकर समाजवादी पार्टी ने इसे तुरंत भांप लिया और इस पर तंज भी कसा। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर लिखा, "इन्होंने इश्तहार में न लगाया उनका चित्र, उन्होंने किसी और को कह दिया 'मित्र'!" अखिलेश का यह तंज जितना अमित शाह पर था, उतना ही भाजपा के आंतरिक समीकरणों पर भी। लेकिन भाजपा के नेताओं ने भी तुरंत पलटवार किया और कहा कि विपक्ष को न समझ में आता है न स्वीकार होता है कि भाजपा के नेताओं में आपसी सहयोग और सम्मान का रिश्ता है। राजनीतिक तौर पर देखा जाए तो अमित शाह का यह संबोधन आगामी चुनाव की भूमिका को मजबूत करने वाला कदम है। बीजेपी अब न केवल अपनी सरकार की उपलब्धियों को गिनवा रही है, बल्कि समाजिक समीकरणों को भी सधे तरीके से साधने की कोशिश कर रही है। योगी आदित्यनाथ को जहां हिंदुत्व और कानून-व्यवस्था के प्रतीक के रूप में आगे रखा जा रहा है, वहीं मौर्य को ओबीसी वर्ग की भावनाओं और प्रतिनिधित्व का चेहरा बनाकर एक संतुलन बनाने की कवायद की जा रही है। त्तर प्रदेश की राजनीति जातीय समीकरणों से बहुत अधिक प्रभावित होती है। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस लगातार जाति जनगणना की मांग को लेकर भाजपा पर हमला बोलते रहे हैं। खासकर ओबीसी वर्ग के मुद्दों को लेकर विपक्ष की रणनीति काफी आक्रामक रही है। ऐसे में भाजपा की तरफ से मौर्य को मंच पर विशेष संबोधन देना यह दर्शाता है कि पार्टी अपने ओबीसी चेहरे को कमजोर नहीं दिखाना चाहती। यही वजह है कि कार्यक्रम के दौरान और बाद में अमित शाह ने मौर्य के प्रति सार्वजनिक तौर पर सकारात्मक भाव दर्शाए। यह भी उल्लेखनीय है कि हाल ही में केशव प्रसाद मौर्य ने समाजवादी पार्टी और अखिलेश यादव पर तीखा हमला करते हुए कहा था कि 2027 में सपा का अंतिम अध्याय लिखा जाएगा। इसके जवाब में सपा सांसद राजीव राय ने पलटवार करते हुए कहा कि केशव मौर्य अब 2057 तक भी कोई चुनाव नहीं जीत पाएंगे। यह जुबानी जंग बताती है कि दोनों दलों के बीच मुकाबला अब व्यक्तिगत स्तर तक उतर आया है। यह भी समझा जा सकता है कि मौर्य की राजनीतिक सक्रियता केवल सांकेतिक नहीं, बल्कि आगामी चुनावों की रणनीति का हिस्सा है। इस पूरे घटनाक्रम को देखकर एक बात तो स्पष्ट है कि भाजपा नेतृत्व अब किसी भी प्रकार की अंदरूनी असंतुलन की स्थिति को जन्म नहीं देना चाहता। पार्टी यह सुनिश्चित करना चाहती है कि चुनाव से पहले एकजुटता का प्रदर्शन हो और हर वर्ग को संतुलित प्रतिनिधित्व मिले। इसी रणनीति का हिस्सा है अमित शाह का 'मेरे मित्र' वाला संबोधन जिसमें सम्मान है, संदेश है और सियासी संतुलन भी। लखनऊ का यह कार्यक्रम केवल नियुक्ति पत्र वितरण तक सीमित नहीं रहा। इस मंच से जो शब्द बोले गए, उनका असर दूर तक गया। अमित शाह ने एक ओर योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व पर फिर से भरोसा जताया, तो दूसरी ओर केशव प्रसाद मौर्य के राजनीतिक कद को गिरने से रोक लिया। सियासत में 'दो कदम आगे और एक कदम पीछे' की चाल के बीच यह भाषण भाजपा की रणनीतिक परिपक्वता का प्रमाण बनकर उभरा है। अब देखना होगा कि इस संतुलन का असर पार्टी के आगामी फैसलों और चुनावी रणनीतियों पर कितना गहरा पड़ता है। लेकिन इतना तो तय है कि 'मेरे मित्र' अब केवल एक संबोधन नहीं, बल्कि एक राजनीतिक घोषणापत्र जैसा बन गया है जो योगी और मौर्य दोनों के लिए एक नया अध्याय खोलता है।

ऑनलाइन गेम प्रमोशन ईडी का सितारों पर कसता शिकंजा

पिछले कुछ वर्षों में भारत में ऑनलाइन गेमिंग इंडस्ट्री ने जबरदस्त रफ्तार पकड़ी है। लाखों युवा इस दुनिया की ओर आकर्षित हो कर अपना सब कुछ यहां तक की जान भी गवा रहे हैं,वहीं दूसरी तरफ इसके प्रमोशन से बॉलीवुड सितारों से लेकर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स तक करोड़ो रूपये अपनी जेब में डाल रहे है। सलमान खान जैसे बड़े सितारे तक जूपी लूडो खेलने के लिये टीवी व अन्य सोशल प्लेटफार्म पर लोगों को उसकाते हुए नजर आ जाते हैं,यही हाल अन्य गेमों का है,हास्य कलाकार कपिल शर्मा हों या क्रिकटर हरभजन सिंह,युवराज और सुरेश रैना जैसे खिलाड़ी काफी लम्बी लिस्ट है ऐसे नामों की,यही वजह है जैसे-जैसे यह उद्योग फल-फूल रहा है, इसके साथ ही कानूनी शिकंजा भी कसता जा रहा है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की नजर अब उन मशहूर हस्तियों पर है जो इन ऑनलाइन गेम्स के प्रमोशन से जुड़े रहे हैं। खासकर उन पर जिनका संबंध संदिग्ध गेमिंग और सट्टा एप्स से रहा है।

क्या है मामला?

ईडी ने हाल ही में मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत कुछ ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म्स की जांच शुरू की है। आरोप है कि ये प्लेटफॉर्म्स गेमिंग के नाम पर सट्टा चला रहे हैं और अवैध तरीकों से पैसे का लेन-देन कर रहे हैं। इन कंपनियों ने आम जनता का भरोसा जीतने के लिए फिल्मी सितारों और सोशल मीडिया सेलेब्रिटी का सहारा लिया। जांच के दौरान यह सामने आया कि कई बड़े बॉलीवुड सितारे और यूट्यूब/इंस्टाग्राम इन्फ्लुएंसर्स ने मोटी रकम लेकर इन गेमिंग एप्स का प्रचार किया। ये प्रचार वीडियो, विज्ञापन, सोशल मीडिया पोस्ट या लाइव सेशंस के माध्यम से लाखों लोगों को इन प्लेटफॉर्म्स से जोड़ने में सहायक बने।

किन सितारों पर है शक की निगाह?

हालांकि जांच अभी प्रारंभिक चरण में है, लेकिन सूत्रों के मुताबिक, जिन सेलेब्रिटी पर ईडी की नजर है, उनमें कुछ बड़े नाम

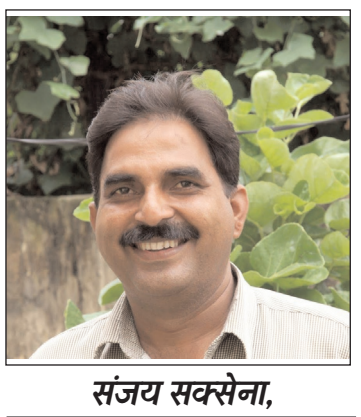

संजय सक्सेना,

वरिष्ठ पत्रकार

शामिल हैं। बॉलीवुड अभिनेता''कुछ शीर्ष स्तर के युवा अभिनेता, जिन्होंने ऑन लाइन लूडो आदि मोबाइल गेम्स और रमी, पोकर जैसे रियल मनी गेम्स के प्रमोशन में भाग लिया है, उनके खिलाफ जांच शुरू हो चुकी है। इनमें से कुछ ने इन ऐप्स के विज्ञापनों में अभिनय किया, जबकि कुछ ने सोशल मीडिया के जरिए प्रचार किया। कॉमेडी और यूट्यूब सितारे'' स्टैंडअप कॉमेडियन और यूट्यूब इन्फ्लुएंसर्स, जिनकी फैन फॉलोइंग लाखों में है, ने इन प्लेटफॉर्म्स के साथ प्रमोशनल डील्स साइन किए थे। कुछ मामलों में इन डील्स की रकम करोड़ों में बताई जा रही है। कुछ पूर्व क्रिकेट खिलाड़ियों और टी20 लीग से जुड़े चेहरों ने भी इस इंडस्ट्री में एंट्री ली। ईडी की जांच में यह देखा जा रहा है कि इन हस्तियों को भुगतान किस स्रोत से किया गया, और क्या यह पैसा वैध था।

क्या सिर्फ प्रमोशन करना अपराध है?

यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या किसी सेलेब्रिटी द्वारा प्रमोशन करना ही उन्हें अपराधी बना देता है? विशेषज्ञों का मानना है कि यदि कोई सेलेब्रिटी बिना उचित जांच-पड़ताल किए ऐसे प्लेटफॉर्म्स का प्रचार करता है जो बाद में अवैध साबित होते हैं, तो उन्हें जांच में सहयोग करना पड़ सकता है।ईडी का फोकस इस बात पर है कि क्या इन सेलेब्रिटी को यह पता था कि जिस कंपनी का वे प्रचार कर रहे हैं, वह मनी लॉन्ड्रिंग या सट्टा जैसी गतिविधियों में लिप्त है। यदि साबित हो जाता है कि किसी को पूरी जानकारी थी और फिर भी उन्होंने प्रमोशन किया, तो उनके खिलाफ कार्रवाई संभव है।

ईडी की अब तक की कार्रवाई

ईडी ने इस सिलसिले में कुछ डिजिटल मार्केटिंग एजेंसियों के दफ्तरों पर छापेमारी की है जो इन सेलेब्रिटी और गेमिंग कंपनियों के बीच कड़ी का काम करती थीं। कुछ बैंकों और पेमेंट गेटवे कंपनियों से भी ट्रांजैक्शन डिटेल्स मांगे गए हैं। इसके साथ ही ईडी ने कुछ सेलेब्रिटी को समन भी भेजे हैं, जिनसे पूछताछ की तैयारी है। इनसे उनके अनुबंधों, भुगतान की विधि और प्रमोशनल सामग्री की जानकारी मांगी जा रही है।

कब बनेंगे गेम के कायदे कानून

उक्त घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि ऑनलाइन गेमिंग इंडस्ट्री को लेकर भारत में स्पष्ट और कड़े कानून कब बनेंगे। वर्तमान में कुछ राज्यों में सट्टा और रियल मनी गेम्स पर रोक है, लेकिन एक राष्ट्रीय स्तर की नीति की कमी से ऐसी गतिविधियों को अंधेरे में अंजाम दिया जाता है। कई विशेषज्ञ मानते हैं कि जब तक इस क्षेत्र में पारदर्शिता और उचित रेगुलेशन नहीं लाया जाएगा, तब तक ऐसे मामलों में सेलेब्रिटी की भूमिका भी संदेह के घेरे में आती रहेगी। कुल मिलाकर ऑनलाइन गेमिंग और रियल मनी ऐप्स की दुनिया में चमक-दमक तो बहुत है, लेकिन अब जांच एजेंसियों की नजर भी उसी चमक के पीछे छिपी सच्चाई पर है। जब बड़े सितारे किसी ब्रांड से जुड़ते हैं, तो उसका असर आम जनता पर होता है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि वे किस चीज का प्रचार कर रहे हैं, उसकी जिम्मेदारी लें।ईडी की यह जांच इस दिशा में एक बड़ा कदम है,इससे न केवल अवैध गेमिंग प्लेटफॉर्म्स पर शिकंजा कसने के लिए, बल्कि प्रमोशन से जुड़े लोगों को भी जवाबदेह बनाने के लिए।

निकिता रॉय का ट्रेलर रिलीज

डरावनी ताकतों का मुकाबला करती दिखीं सोनाक्षी सिन्हा

सोनाक्षी सिन्हा की फिल्म 'निकिता रॉय' का ट्रेलर दर्शकों के रोंगटे खड़े करने के लिए काफी है। इस ट्रेलर में सोनाक्षी शैतान, भूत-प्रेत यानी सुपरनेचुरल ताकतों का सामने करती हुई दिखीं। फिल्म में परेश रावल भी एक अहम भूमिका में नजर आ रहे हैं। सोनाक्षी सिन्हा फिल्म 'निकिता रॉय' में एक जासूस की भूमिका में दिख रही हैं। निकिता का मकसद एक गुरु (परेश रावल) का पर्दाफाश करना है, जो लोगों को भूत-प्रेतों से छुटकारा दिलाने का दावा करता है।। फिल्म में अर्जुन रामपाल भी हैं, जो निकिता को गाइड करते हैं। इन सब बातों के बीच कुछ डरावने दृश्य सामने आते हैं, जिसमें शैतान और भूत-प्रेतों की झलक मिलती है। इन ताकतों का और उस गुरु यानी परेश रावल के किरदार का मुकाबला निकिता रॉय कैसे करेगी? यही फिल्म में दिखाया जाएगा। निकिता रॉय के रोल में सोनाक्षी काफी जम रही हैं। वहीं ट्रेलर में परेश रावल अपनी एक्टिंग से डर का माहौल बनाने में पूरी तरह से कामयाब नजर आते हैं। उनके डायलॉग भी काफी दमदार हैं।

रिलीज की तारीख भी आई सामने

सोनाक्षी सिन्हा की सुपरनेचुरल थ्रिलर फिल्म 'निकिता रॉय' की रिलीज डेट भी ट्रेलर के साथ साझा की गई है। यह फिल्म 27 जून 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म के निर्देशक कुश एस सिन्हा हैं। फिल्म को निक्की खेमचंद भगनानी ने प्रोड्यूस किया है।

तीन साल बार बड़े पर्दे पर सोनाक्षी की वापसी

सोनाक्षी सिन्हा की फिल्म 'डबल एक्सएल' साल 2022 में थिएटर में रिलीज हुई। फिर 'काकुडा' में वह दिखीं लेकिन यह फिल्म ओटीटी पर रिलीज हुई। इस तरह देखा जाए तो बड़े पर्दे यानी सिनेमाघरों में तीन साल के बाद सोनाक्षी सिन्हा की कोई फिल्म रिलीज होगी

रणबीर की 'रामायण' में इस भूमिका के लिए प्रियंका चोपड़ा थीं पहली पसंद इस वजह से बिगड़ी बात

नितेश तिवारी की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'रामायण' लगातार चर्चाओं में बनी हुई है। फिल्म की स्टारकास्ट को लेकर पिछले कई दिनों से चर्चाएं चल रही हैं। हालांकि, बीते दिनों फिल्म की स्टारकास्ट के फाइनल होने की खबरें आईं, जिसमें रणबीर कपूर, साई पल्लवी, यश और सनी देओल समेत एक भारी भरकम स्टारकास्ट नजर आ रही है। अब एक ऐसी जानकारी सामने आ रही है, जिसमें कहा जा रहा है कि प्रियंका चोपड़ा भी इस फिल्म का हिस्सा होने वाली थीं। मेकर्स ने प्रियंका से एक अहम किरदार के लिए संपर्क किया था। जानिए कौनसा था वो किरदार और क्यों अटक गई बात। फिल्म से जुड़े एक सूत्र ने ई-टाइम्स को बताया कि इस एपिक माइथोलॉजी में मेकर्स अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा को भी लेना चाहते थे। इसके लिए मेकर्स ने प्रियंका से संपर्क भी किया था। जानकारी के मुताबिक, मेकर्स प्रियंका को सूर्पनखा के किरदार में कास्ट करना चाहते थे। जिसके लिए मेकर्स ने अभिनेत्री से अप्रोच किया था। मगर डेट्स के चलते प्रियंका इस किरदार को हां नहीं कह पाईं। नतीजा उनकी जगह रकुल प्रीत सिंह अब सूर्पनखा के रोल के लिए फाइनल की गई हैं।

संन्यास लेने की अफवाहों पर अभिनेता ने दी ये प्रतिक्रिया

आमिर खान इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म सितारे जमीन पर को लेकर चर्चा में हैं। वह इसके प्रमोशन में व्यस्त हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि शायद फिल्म महाभारत के बाद मेरे पास करने के लिए कुछ न बचे। लोगों ने आमिर की इस बात का यह मतलब निकाला कि वह महाभारत के बाद एक्टिंग से संन्यास ले लेंगे।

एक्टिंग से पीछे नहीं हटेंगे आमिर खान

आमिर खान ने बातचीत में कहा है कि एक्टिंग से पीछे हटने का उनका कोई प्लान नहीं है। आमिर खान ने कहा महाभारत हमारी आखिरी फिल्म नहीं होगी। अभी मामला ऐसा है कि हम कुछ भी बोलें, उसका गलत मतलब निकल आता है। मुझसे पूछा गया कि आप कोई ऐसी फिल्म करो जिसको करने के बाद आपका काम करने का मन न हो। तो वह फिल्म कौन सी होगी?

आमिर ने कहा ध्यान से सुना करें बाते

इसके बाद आमिर ने कहा मटेरियलवाइज मुझे एक ही चीज नजर आती है कि जो फिल्म करने के बाद शायद मेरे मन में ये ख्याल उठे कि बस हो गया। मैंने उसका जवाब इस तरह दिया था। लोगों को लगा कि महाभारत मेरी आखिरी फिल्म होगी। जवाब को ठीक से सुना कीजिए।

क्या बोले थे आमिर खान?

आपको बता दें कि आमिर खान ने हाल ही में राज शमनी के साथ अपने ड्रीम प्रोजेक्ट महाभारत के बारे में बात की थी। इसके बाद उनके संन्यास लेने की अफवाहें उड़ने लगीं। आमिर ने तब कहा था यह मेरा ड्रीम प्रोजेक्ट है कि मैं महाभारत बनाऊं, मैं इस पर सितारे जमीन पर की रिलीज के बाद काम करना शुरू कर दूंगा। मुझे लगता है कि यह ऐसा प्रोजेक्ट है, जिसको करने के बाद मुझे ये लगेगा कि अब मैं इससे अच्छा नहीं कर पाउंगा। यह फिल्म भव्य होगी। इसके बाद आमिर के संन्यास की खबरें सुर्खियों में आई।

आमिर खान की अगली फिल्म के बारे में

फिलहाल आमिर अपनी अपकमिंग फिल्म सितारे जमीन पर की रिलीज के लिए तैयार हैं। फिल्म में वह एक बास्केटबॉल कोच की भूमिका निभाने वाले हैं। वह दिव्यांग बच्चों को खेल सिखाते नजर आएंगे। आरएस प्रसन्ना द्वारा निर्देशित यह फिल्म स्पैनिश फिल्म चैंपियंस की रीमेक है। फिल्म में जेनेलिया देशमुख भी हैं।

हैवी वेट लिफ्टिंग में सक्षम होने से ज़्यादा सशक्त कोई एहसास नहीं है

फिटनेस आइकन और एंटरप्रेन्योर कृष्णा श्रॉफ कभी भी अपनी सच्चाई बताने से पीछे नहीं हटती हैं, और जब फ़िटनेस की बात आती है, तो वेट ट्रेनिंग के प्रति उनका जुनून सबसे आगे नज़र आता है। फिटनेस की शौकीन कृष्णा का मानना है कि वेट ट्रेनिंग शरीर को तराशने का सबसे प्रभावी तरीका है, जिससे व्यक्ति खुद को ठीक वैसा आकार दे सकता है जैसा वह चाहता है। मेरा जुनून हमेशा से वेट ट्रेनिंग रहा है। मेरा मानना है कि वेट्स उठाना आपके शरीर को आकार देने का एक अच्छा तरीका है, चाहे आप खुद को आकार देना चाहें, वह स्पष्ट रूप से स्वीकार करती हैं कि पारंपरिक कार्डियो वर्कआउट की तुलना में वेट ट्रेनिंग ज़्यादा पसंद है। कृष्णा के लिए जिम सिर्फ़ शारीरिक बदलाव के बारे में नहीं है, यह उस शक्ति की खोज के बारे में है जो हैवी वेट उठाने के बाद आती है। कृष्णा के लिए स्ट्रेंथ ट्रेनिंग की लत सिर्फ शरीर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा अनुभव है जो शरीर और मन दोनों को एक साथ बदलता है। वह कहती हैं, स्ट्रेंथ ट्रेनिंग सच में लत बना देती है। यह सिर्फ़ हफ़्ते-दर-हफ़्ते शारीरिक प्रगति नहीं दिखाती, बल्कि यह मानसिक रूप से भी बहुत कुछ बदलती है और आत्मविश्वास को नई ऊँचाइयों तक ले जाती है। शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कृष्णा श्रॉफ अपने आत्मविश्वास और आत्म-छवि में आए बदलाव का श्रेय वेट ट्रेनिंग को देती हैं। वह कहती हैं, मुझे लगता है कि जिम जाना, खास तौर पर वेट ट्रेनिंग, ने मुझे आत्मविश्वास की एक नई भावना दी है जो बचपन में मेरे पास नहीं थी। उनका यह ईमानदार स्वीकार इस बात का प्रमाण है कि कृष्णा के लिए फिटनेस सिर्फ़ एक शौक से कहीं बढ़कर बन गई है। यह आत्म-खोज और सशक्तिकरण का एक साधन रहा है जो आज भी उन्हें आकार दे रहा है।

राणा नायडू और मस्ती... दोनों चीजें कभी साथ में नहीं चल सकती

तेलुगु स्टार राणा दग्गुबाती अपने हिट स्ट्रीमिंग शो राणा नायडू के दूसरे सीजन की रिलीज की तैयारी कर रहे हैं। आईएएनएस से खास बातचीत में उन्होंने कहा कि इस शो में उनका किरदार बहुत सारे दर्द और मानसिक तकलीफों से जुड़ा है। इंटरव्यू में राणा से पूछा कि उन्हें अपने राणा नायडू का किरदार निभाने में सबसे मजेदार चीज क्या लगी?

उन्होंने कहा, राणा नायडू और मस्ती, ये दोनों चीजें कभी साथ में नहीं चल सकतीं। यह किरदार बहुत गंभीर है। वह कई अंदरूनी तकलीफों से जूझ रहा है, जिनका जिक्र वह किसी से नहीं कर पाता। मुझे लगता है कि भारतीय पुरुषों के साथ ऐसा होता है, खासकर जो परिवार के मुखिया होते हैं या जिन पर बहुत जिम्मेदारी होती है, वे अपनी तकलीफों के बारे में किसी से बात नहीं करते। नायडू परिवार की कहानी में भी ऐसा ही कुछ दिखाया गया है, एक ऐसा परिवार जिसमें सभी लोग अपनी-अपनी अंदरूनी परेशानियों के दबाव में जी रहे हैं। उन्होंने कहा, चाहे वह बाप-बेटे के बीच का झगड़ा हो, पति-पत्नी के बीच की परेशानी हो या भाई-बहनों के बीच के मतभेद हों, मुझे लगता है कि यह सब किसी न किसी पुराने दर्द से जुड़े हुए हैं। हर कोई अपने-अपने तरीके से उन तकलीफों से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है।

सीजन 1 में सिर्फ एक ऐसा परिवार था, जो बिखरा हुआ था। उनमें झगड़े, मतभेद और परेशानियां थीं। सीजन 2 में अब दो ऐसे परिवार हैं, जो आपसी तनाव और मुश्किल हालातों से जूझ रहे हैं। अभिनेता ने साझा किया, अब दो ओबेरॉय कहानी में आए हैं। आपने सोचा था कि नायडू परिवार बुरा है, लेकिन ये तो उससे भी ज्यादा बुरे हैं। अमीर लोगों की परेशानियां और भी बड़ी होती हैं। उन्होंने आगे कहा, मुझे लगता है कि अमीर लोगों की भी यही समस्याएं होती हैं। उनकी परेशानियां एक अलग तरीके से बढ़ जाती हैं, जैसे विरासत और ऐसी चीजें। इस कहानी में नागा नाम का एक किरदार है, जो इस परिवार के बीच में बार-बार दखल देता रहता है। राणा नायडू का दूसरा सीजन 13 जून से नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगा।

बिना ऑडिशन दिए जयदीप को मिली थी पाताल लोक

वेब सीरीज पाताल लोक ने जयदीप अहलावत के करियर को एक नए मुकाम पर पहुंचाया। उन्होंने इसमें हाथीराम चौधरी का किरदार अदा किया है। दिलचस्प बात यह है कि यह शानदार सीरीज एक्टर को बिना किसी ऑडिशन के मिली।

कलाकार का खाली वक्त निराशा में नहीं जाना चाहिए

अभिनेता से पूछा गया कि 2010 से 2020 तक के सफर पर बात करें तो आप हर जगह नजर आए। बड़े-बड़े किरदार में नजर आए। लेकिन, क्या ऐसा लगा कि दिख तो रहा हूं लेकिन एक पहचान बनाना बाकी है? इस पर जयदीप अहलावत ने कहा हां बिल्कुल लगा। मैंने बहुत बड़े-बड़े डायरेक्टर्स के साथ काम किया। एक काम के बाद दूसरे काम में गैप भी बहुत ज्यादा रहा। ऐसे बहुत लंबा वक्त बीता है। लेकिन, जब आप वहां जाते हो तो यही वो पिलर हैं जहां मकान बनता है। तो मुझे लगता है कि नींव काफी मजबूत है। जयदीप ने आगे कहा, बस यही है कि जब आप खाली बैठो तो वह दौर निराशा में नहीं जाना चाहिए। खाली बैठे एक्टर को बहुत तैयारी करनी चाहिए। कई एक्टर्स ने बहुत अच्छा काम किया। फिर गायब हुए और वापस आए। ऐसे में कंसिस्टेंसी बहुत जरूरी है।

वेब सीरीज पाताल लोक ने जयदीप अहलावत के करियर को एक नए मुकाम पर पहुंचाया। उन्होंने इसमें हाथीराम चौधरी का किरदार अदा किया है। दिलचस्प बात यह है कि यह शानदार सीरीज एक्टर को बिना किसी ऑडिशन के मिली। दरअसल, जयदीप अहलावत 10 जून को देहरादून में आयोजित संवाद कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे। यहां उन्होंने पाताल लोक को लेकर खुलासा किया।

कैसे मिली पाताल लोक?

15 मई 2020, वह दिन जब भारत के तमाम लोग अपने घरों में थे। तब पाताल लोक रिलीज हुई और लोगों को हाथीराम चौधरी देखने को मिला। लोगों के फोन आने शुरू हुए होंगे? क्या अनुभव था? जयदीप अहलावत ने कहा, मेरे पास जब यह सीरीज आई, तो कहा गया कि आप इसके लिए हां कहो और आपका कोई ऑडिशन नहीं होगा। मुझे बहुत सरप्राइज हुआ कि मैं आठ-नौ एपिसोड की एक सीरीज करूं और मुझे जांचा-परखा भी न जाए। जिस खूबसूरती से पाताल लोक को लिखा गया, दुनिया में ऐसा कोई एक्टर नहीं जो इस स्क्रिप्ट को मना कर सकता है। एक्टर से पूछा गया पाताल लोक के बाद क्या कोई ऐसा कॉल आया जब आपको हैरानी हुई हो? एक्टर ने कहा, उस वक्त कई दिग्गजों के फोन आए। मनोज (बाजपेयी) भाई ने मुझसे करीब 20 मिनट तक बात की। मैं रो रहा था और वो बोले जा रहे थे। उन्होंने कहा कि इसे देखकर मुझे लग रहा है कि मेरी एक्टिंग की वर्कशॉप हो रही है। मुझे लगता है कि इससे सुंदर मुझे कोई क्या बोलेगा? 5 दिन के बाद बहुत बड़े-बड़े लोगों ने बधाई दी तब महसूस हुआ कि अब ये बड़ा हो गया।

मैं शेखर सर और धनुष के साथ काम करना चाहती थी इसी वजह से 'कुबेर' के लिए हां कहा

धनुष स्टारर फिल्म 'कुबेर' का आज सॉन्ग लॉन्च इवेंट हुआ। इस खास मौके पर नागार्जुन अक्किनेनी, धनुष, रश्मिका मंदाना, जिम सरभ और दलीप ताहिल जैसे दिग्गज एक्टर्स ने शिरकत की। शेखर कम्मुला द्वारा निर्देशित और सह-लिखित 'कुबेर' एक सोशल थ्रिलर है। इस दौरान अभिनेत्री रश्मिका मंदाना से फिल्म से जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया। रश्मिका मंदाना ने डायरेक्टर शेखर कम्मुला और को-स्टार धनुष के साथ काम करने के अपने अनुभव को साझा करते हुए बताया कि मैं शेखर सर और धनुष के साथ काम करना चाहती थी। यही वजह थी कि मैंने इस फिल्म के लिए हां कह दी। अपने किरदार के बारे में बात करते हुए रश्मिका ने कहा यकीनन मैंने ऐसा रोल पहले कभी नहीं किया। मैं पूरी तरह से डायरेक्टर के हवाले हो गई और यही खूबसूरती है। हर डायरेक्टर का अपना अंदाज होता है, इसीलिए मुझे इतने दिलचस्प और अलग-अलग किरदार निभाने को मिलते हैं। मैं इसके लिए हमेशा शुक्रगुजार रहूंगी।

मोटी महिलाओं के बच्चों में होता है ऑटिज्म का खतरा

मोटापे और मधुमेह की शिकार महिला के गर्भ में पल रहे शिशु में छठे महीने के दौरान आंकड़ा बढ़ने की पांच गुना ज्यादा संभावना होती है। एक अध्ययन के अनुसार ऐसी महिलाओं के गर्भस्थ शिशु में ऑटिज्म का खतरा भी चार गुना बढ़ जाता है।

महिलाओं पर शोध के बाद सामने आया नतीजा

मोटापे और मधुमेह से ग्रस्त गर्भवती महिलाओं के बच्चों के 'ऑटिज्म' के साथ जन्म लेने का खतरा चार गुना अधिक रहता है। ये बात अनुसंधानकर्ताओं ने 1998 से 2014 के बीच मां और बच्चे की 2700 से अधिक जोड़ियों का अध्ययन करके पता लगाई है कि गर्भावस्था के दौरान मोटापा और मधुमेह दोनों से ग्रस्त होने वाली मां जिन बच्चों को जन्म देती है, उनमें ऑटिज्म का खतरा स्वस्थ मां से पैदा हुए बच्चों की तुलना में चार गुना अधिक होता है। वहीं गर्भवती महिला को इनमें से कोई एक समस्या, मोटापा अथवा मधुमेह होने पर बच्चों में ऑटिज्म का खतरा दोगुना होता है।

क्या है ऑटिज्म

ऑटिज्म एक ऐसा रोग है, जिसमें रोगी बचपन से ही परिवार, समाज तथा बाहरी माहौल से जुड़ने की क्षमताओं को गंवा देता है। यह एक तरह का न्यूरोलॉजिकल डिसॉर्डर है, जो बातचीत और दूसरे लोगों से व्यवहार करने की क्षमता को सीमित कर देता है। इसे ऑटिस्टिक स्पेक्ट्रम डिसॉर्डर कहा जाता है, क्योंकि प्रत्येक बच्चे में इसके अलग-अलग लक्षण देखने को मिलते हैं। इनमें से कुछ बच्चे बहुत जीनियस होते हैं या उनका आईक्यू सामान्य बच्चों की तरह होता है, लेकिन उन्हें बोलने और सामाजिक व्यवहार में दिक्कत होती है। कुछ ऐसे भी होते हैं, जिन्हें सीखने-समझने में परेशानी होती है और वे बार-बार एक ही तरह का व्यवहार करते हैं।

मेटाबालिक हेल्थ पर बुरा असर पड़ने का नतीजा

जनरल में प्रकाशित अपने लेख में कहा कि यह बहुत आश्चर्यजनक नहीं है। कई अध्ययनों में यह साबित हो चुका है कि गर्भावस्था के दौरान मोटापा और मधुमेह से भ्रूण के विकास और उनके मेटाबोलिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। उन्होंने कहा इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि गर्भवती महिलाओं में मोटापा और मधुमेह जन्म लेने वाले बच्चे के तंत्रिका तंत्र के विकास पर भी प्रभाव डालता है। अध्ययन से हालांकि यह साबित नहीं होता है कि मां का मोटापा और मधुमेह बच्चे में ऑटिज्म की बीमारी का कारण बन सकता है। डा. वांग का कहना है कि इसे साबित करने के लिए अभी और अध्ययन की जरूरत है।

एक्टिव रहें, धीमी शुरुआत करें

जो लोग आमतौर पर कसरत नहीं करते, उन्हें धीमी शुरुआत करनी चाहिए। उन्हें अपनी गति और कसरत का वक्त भी धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। हफ्ते में ढाई घंटे कोई शारीरिक गतिविधि करने का लक्ष्य बनाएं। इसके लिए चाहे तो वॉकिंग भी की जा सकती है। हफ्ते में पांच दिन रोजाना आधा घंटा पैदल चलना अच्छा रहेगा। इसके साथ ही अगर वक्त की कमी के चलते आप एक साथ तीस मिनट नहीं चल सकते हैं।

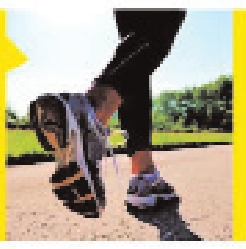

नाखून चबाने से होती है ये लाइलाज बीमारी

हम अक्सर अपने आस-पास लोगों को नाखून और उसके आस-पास की स्किन चबाते देखते हैं। वैसे तो नाखून की स्किन चबाना हमें आम सी बात लगती है लेकिन शायद आप यह नहीं जानते कि इस गंदी आदत की वजह से हमारी सेहत पर बहुत बुरा असर पड़ सकता है। इससे पेट संबंधी परेशानी होना स्वाभाविक है। इससे पाचन शक्ति भी कमजोर होती है। नाखून चबाने से अन्य भयानक रोग भी हो सकते हैं।

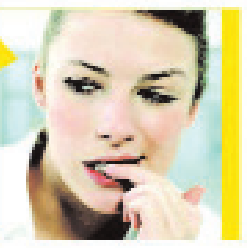

क्रोध एक प्राकृतिक भावना है। ईसा पूर्व 200 वर्षों से 200 ईसवी तक के काल के बीच लिखे गए नाट्य शास्त्र में क्रोध को एक 'रस' या नैसर्गिक भाव कहा गया है।

आइए समझें गुस्से का मनोविज्ञान

अमेरिकन फिजियोलॉजिकल एसोसिएशन ने 'गुस्से को विपरीत परिस्थितियों के प्रति एक सहज अभिव्यक्ति कहा गया है। इस तरह प्रदर्शन वाले भाव से हम अपने ऊपर लगे आरोपों से अपनी रक्षा करते हैं। लिहाजा अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए क्रोध भी जरूरी होता है। आधुनिक जीवनशैली किसी भी व्यक्ति को तनाव में धकेल सकती है। अब जबकि हजारों लोगों को अपने रोजगार और घरों से हाथ धोना पड़ रहा है और यहां तक कि सेवानिवृत्त लोगों की सुरक्षित राशियां भी बाजारी उथल पुथल के कारण गायब होती जा रही हैं - इस लिहाज से इस काल को 'ऐज ऑफ एनग्जाइटी' या व्यग्रता का युग कहा जा सकता है। इसके विपरीत, यह भी सच है कि कुछ लोग चाहे उनकी आर्थिक या पारिवारिक स्थिति कैसी भी हो, हमेशा तनाव में रहते हैं। दरअसल, वह पैदाइशी तनावग्रस्त होते हैं।

क्या आपको गुस्से की समस्या है?

गुस्से को पहचानने की जरूरत है। लोगों को टाइप ए और टाइप बी पर्सनालिटी के आधार पर पहचानें। टाइप ए पर्सनालिटी के लोग वे होते हैं जिनकी किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा ज्यादा तीव्र होती है। ऐसे लोगों को गुस्सा बहुत जल्दी आता है, वह जल्द ही धैर्य खो बैठते हैं। आप भी इस श्रेणी में आ सकते हैं, अगर आपमें ये बातें है

- धैर्य की कमी
- खाना जल्दी खाना
- बेचैनी
- काम-काज के दौरान चिड़चिड़ापन
- गुस्से के दौरान खुद को नुकसान पहुंचाना

बेचैनी और तनाव भी बढ़ाते हैं क्रोध

तनाव डर से अलग होता है। इनसान या किसी अन्य जीवित प्राणी को डर उसके सामने मौजूद किसी चीज से लगता है। इसके विपरीत तनाव में व्यक्ति अपनी निर्णय करने की क्षमता को लेकर उलझा रहता है। व्यक्ति इस दौरान 'अब क्या होगा' के भंवर में फंसकर रह जाता है। लेकिन जब डर कामकाज से उलझने लगता है तो तनाव 'क्लीनिकल एनग्जाइटी डिसॉर्डर' का रूप ले लेता है, जिसके आगे कई रूप हैं जिनमें पैनिक, सोशल एनग्जाइटी, फोबिया, ऑब्सेसिव-कम्पलसिव, पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस और सबसे ऊपर एनग्जाइटी डिसॉर्डर हैं। चिंता दिमाग में एमिग्डला में अत्यधिक हलचल के कारण उत्पन्न होती है जो दिमाग के बीच का हिस्सा होता है। दिमाग का यह हिस्सा नयेपन और किसी खतरे का सामना होने की सूरत में सजग होता है। अपने साधारण कामकाज के दौरान एमिग्डला नए वातावरण के प्रति शारीरिक क्रियात्मक उत्तर देता है। इस क्रिया में भावनात्मक अनुभवों की स्पष्ट यादें होती हैं। लेकिन कगान के अध्ययनों के मुताबिक विशिष्ट मानसिक बनावट वाले लोगों में एमिग्डला अतिक्रियात्मक होता है।

गुस्से पर करें काबू

- गुस्से पर नियंत्रण रखने के लिए बेहतर है कि आप सकारात्मक और क्रिएटिव काम करें
- गुस्सा होने पर किसी म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट को बजाए
- कमरे को साफ करें, पिक्चर देखने जाएं, थोड़ा घूम आएं
- कुछ भी ऐसा करें जिससे आपका ध्यान कुछ देर के लिए हट जाए
- मजाक तनाव दूर करने का सबसे बेहतर तरीका है।
- शोध दर्शाते हैं कि तनाव को दूर करने के लिए पानी पीना चाहिए। यह तनाव को दूर करता है
- समय पर खाना खाने से, कसरत करने से और पर्याप्त आराम करने से गुस्सा कम आता है
- योगा, मेडिटेशन और कॉग्नेटिव तकनीक भी तनाव और गुस्से को दूर करने में कारगर है

ज्यादा टीवी देखना

हिंसक प्रोग्राम देखना, क्राइम शो आदि बच्चों के मन-मस्तिष्क को पूरी तरह प्रभावित करते हैं। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि कई बार युवा हिंसा के प्रति संवेदनशील नहीं रहते और उन्हें किसी कार्य का प्रतिरोध करने के लिए गुस्सा नाजायज नहीं लगता।

दिमाग को ठंडा रखें

अक्सर गुस्से के दौरान किसी को समझाने के लिए कहा जाता है कि अपने दिमाग को ठंडा रखो। हाल ही एक शोध में एक बात सामने आई है कि अगर दिमाग को ठंडा रखा जा सके तो हृदय और पक्षाघात के खतरों को काफी हद तक कम किया जा सकता है। छात्र हैरिस ऐसे ही शोध में लगे हुए हैं। उन्होंने ऐसा कूल हेलमेट डिजाइन किया है जो कि हाइपरथर्मिया को प्रेरित करने के काम आता है। आप भी इस बात से वाकिफ होंगे कि माथे पर ठंडा कपड़ा रखने से सिरदर्द में आराम मिलता है।

ये हैं गुस्से के प्रमुख कारण

नींद

सोना अचेतन की अवस्था होती है। सोने से शरीर के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। सोने के दौरान लगातार इस्तेमाल होने वाले मांसपेशियां और जोड़ रिकवर होते हैं। रक्तचाप कम होता है और हृदय गति कम होती है। इसी दौरान शरीर में ग्रोथ हार्मोन का स्त्रवण होता है। इस दौरान ही दिमाग रोजमर्रा की सूचनाओं को एकत्रित करने का काम करता है। तनाव, लंबे समय तक कार्य, जीवनशैली के कारण सोने की समस्याएं होती हैं। बिना पूरी नींद के दिमाग और शरीर सही तरीके से फंक्शन नहीं कर पाता। पर्याप्त नींद न लेने से कई तरह की बीमारियां होती हैं। स्वस्थ रहने के लिए पर्याप्त नींद और आराम आवश्यक है।

पूरी नींद लें

- कॉफी, चाय, कोला, चॉकलेट का सेवन सीमा में करें। निकोटीन, एल्कोहल और कैफीन से आपकी नींद पूरी नहीं हो पाती।
- अपने दिमाग और शरीर को रिलैक्स होने का समय दें।
- मेडिटेशन करें, किताब पढ़ें, संगीत सुनें और एरोमाथेरेपी करें।
- सोने और जागने की दिनचर्या बनाएं।

शारीरिक अवस्था- कुछ स्थितियां जैसे कि एडीडी (एटेंशन डेफिसिट डिसऑर्डर) की वजह से लोग चिड़चिड़े और गुस्सैल हो जाते हैं। हार्मोनल असंतुलन और हृदय रोगों की वजह से भी लोग जल्दी आपा खो बैठते हैं।

अकेलापन

किसी नई जगह पर अकेले रहना गुस्से का एक कारण होता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि जिन लोगों के दोस्त कम होते हैं सामान्यतः उन्हें गुस्सा जल्दी आता है। ऐसे बच्चे जो कि न्यूक्लियर फैमिली में पैदा होते हैं और उनके माता या पिता में से कोई एक मानसिक रूप से पीड़ित होता है। मानसिक अनियमितता की वजह से वे गुस्सैल हो जाते हैं। वे गाली देने लगते हैं, भाई-बहन से मारपीट करने लगते हैं, चीजों को तोड़ते हैं। मनोचिकित्सकों का कहना है कि अगर आपका बच्चा गुस्सा ज्यादा करता है मतलब वह कहीं न कहीं हताश है।

महत्वाकांक्षा

कारपोरेट दुनिया ने प्रगति के दो पैमाने बना दिए हैं पहला प्रदर्शन और दूसरा कम समय में काम को बेहतर तरीके से कर सकने की क्षमता। इस पैरामीटर पर खरा उतरने की कोशिश में कई बार लोग हताश और गुस्सैल प्रवृत्ति के हो जाते हैं। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि दूसरों की भावनाओं की कद्र न करना, लोगों के अभिवादनों के प्रति संवेदनशीलता कम होना, भौतिक सुख-साधनों को पाने का लालच ज्यादा बढ़ना हमेशा गुस्से का कारण बनता है। आज के दौर में कई प्रोफेशन ऐसे हो गए हैं जिनमें कई बार उपभोक्ताओं के गुस्से का सामना करना पड़ता है और उनकी सही-गलत बातों को मुस्कराकर सुनना पड़ता है। ऐसे में कई बार कुछ न कह सकने की हताशा गुस्से में परिणित हो जाती है।

गुस्सा बिगाड़ता है सेहत

गुस्सा वातावरण को तो खराब करता ही है। आपकी सेहत को भी नुकसान पहुंचाता है। गुस्सैल लोगों के फेफड़ों का फंक्शन खराब करता है साथ ही इम्यून सिस्टम पर भी बुरा असर पड़ता है।

इसकी वजह से आप तनाव से होने वाली बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। गुस्सैल व्यक्ति खुद को तो नुकसान पहुंचाता है, अपने आसपास के माहौल को भी बिगाड़ता है। एक बुरा पहलू ये है कि गुस्सा करने वाले व्यक्ति को इस बात का इल्म तक नहीं होता कि वह गुस्सा है लेकिन सुखद पक्ष ये है कि गुस्से को नियंत्रित और मैनेज किया जा सकता है।

इस पैशन से पचास बीमारियां

नौजवानों का पैशन है बाइक ड्राइविंग। हैवी ट्रैफिक के बीच घंटों तेज रफ्तार में ड्राइविंग जिस्म पर भारी पड़ती है और दिमाग पर भी। शहरी बाइकर्स के लिए तो यह समस्या और अधिक है क्योंकि शहर की भीड़-भाड़ ड्राइविंग को न सिर्फ जोखिम भरा बना रही है, बल्कि सेहत पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। जिस्म और दिमाग दोनों इसके शिकार हो रहे हैं।एक अंदाजा है कि महानगरों में नौजवान रोजाना औसतन 60 से 100 किलोमीटर तक बाइक भगाते हैं। लड़कियां भी इस मामले में कहीं पीछे नहीं हैं। लड़कियां रोजाना 40 से 60 किलोमीटर तक गाड़ी चलाती हैं। अब तो स्कूल-कॉलेज जाने के लिए भी लड़के-लड़कियां दुपहिए दौड़ाने लगे हैं। इन सबका नतीजा यह हो रहा है कि छोटी उम्र में ही इस तरह की शारीरिक व मानसिक परेशानियां होने लगी हैं।

आंखों को लगी नजर

बाइक सवारों की आंखों को बहुत कुछ झेलना पड़ता है जैसे धूप, हवा, धूल, धुआं और यहां तक कि हवा में उड़ने वाले कीट-पतंगे भी। आंखों में बहुत ज्यादा हवा, धूल, धूप लगने से 'टर्जियम' की समस्या पैदा हो जाती है। इससे आंखों से तिकोना पदार्थ निकलने लगता है जिसकी वजह से जलन, खुजली और लालिमा की समस्या पैदा हो जाती है। वहीं लगातार ड्राइव करने की वजह से आंखें शुष्क हो जाती हैं और उनमें जलन होने लगती है। कई बार ड्राइव करते समय दिखना भी बंद हो जाता है।

टेढ़े बैठे तो नाजुक गर्दन गई

करीब दस हजार लोगों में शोध करने पर पाया गया कि गर्दन की समस्याएं अक्सर ठीक ढंग से सवारी (बॉडी का सही पॉस्चर न होना) न करने की वजह से होती है। इसमें हेल्मेट को ठीक से न पहनना एक बड़ा कारण माना जाता है। इसकी वजह से कभी कभी गर्दन में दर्द होने लगता है। ऐसा खासकर तब होता है जब हेलमेट सिर पर काफी आगे की तरफ हो। अगर हेलमेट आगे की ओर से नीचे झुका हुआ है तो बाइक सवार को सामने देखने के लिए अपना सिर उठाकर रखना पड़ता है।

कॉरपल टनल सिंड्रोम के लक्षण

- सिर एवं अंगुलियों में दर्द, हाथ एवं पैर की अंगुलियों में सिहरन, अंगुलियों का सुन्न होना, ग्रिप (पकड़) का ढीला होना, हाथों और कलाइयों में दर्द की शिकायत का बढ़ना आदि।

बचाव के टिप्स

- लेटते समय अपने हाथ के नीचे तकिया रखें।
- अपने हाथों का अत्यधिक इस्तेमाल न करें।
- केवल एक ही हाथ से काम न करें।

ऐसे करें बचाव

ज्यादा बाइक चलाने से होने वाले पीठ दर्द से बचा जा सकता है। लगातार एक घंटा बाइक चलाने से बचें। अगर किसी वजह से एक घंटे से अधिक बाइक चलानी पड़ भी रही है तो बीच में एक ब्रेक लें। रुक कर अपनी टांगों की स्ट्रेचिंग करें। ड्राइव करते वक्त अपनी पोजीशन समय समय पर बदलते रहें। ध्यान रखें कि ऐसा करते समय वाहन पर आपके नियंत्रण में कोई कमी न आए। रेड लाइट शरीर को आराम देने के लिए सही जगह है, जहां आप अपने हाथों, कंधों और पैरों को हिला-डुला कर उन्हें सुन्न होने से बचा सकते हैं।

क्लच से कलाई का कबाड़ा

यह कलाई और हाथों में होने वाला एक दर्द विकार है। कॉरपल टनल हाथों की पतली हड्डियों और कलाई के उत्तकों द्वारा बनाई गई एक सुरंग है। यह सुरंग आपकी मध्यस्थ तंत्रिका की हिफाजत करती है। मध्यस्थ तंत्रिका अंगूठे, तर्जनी, मध्यमा और अनामिका तक संवेदन का अहसास कराती है, लेकिन जब कलाई की नाजुक हड्डियों और स्नायु पर दबाव पड़ता है तो सूजन बढ़ने लगती है। दबाव पड़ने की सूरत में इससे संबंधित विभिन्न हिस्से सुन्न पड़ने लगते हैं। बाइक चलाने वालों में यह समस्या अधिक देखने में आती है। अंगुलियों का सुन्न होना एक खतरनाक लक्षण है। अक्सर इसका संबंध कॉरपल टनल सिंड्रोम से होता है। बाइक चलाते समय कलाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

कैसे करें बचाव

- ड्राइविंग करते समय अपना पॉस्चर सही रखें।
- यह सुनिश्चित करें कि बाइक चलाते वक्त आपका हेलमेट आपके सिर पर ठीक तरीके से फिट हो और उसका झुकाव आगे की ओर न हो।
- गाड़ी चलाते वक्त भारी बैग को अधिक समय तक एक ही कंधे पर न लटकाए रहें। उसे दोनों कंधों पर बारी बारी से टांगें।
- मसाज कराने और गर्म पानी से नहाने से रोगी को तात्कालिक आराम मिल सकता है।
- पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम और विटामिन डी लेना चाहिए तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।
- यदि आपके कंधे में सूजन, अंगुली में झनझनाहट, गर्दन दर्द या सिर दर्द है तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें क्योंकि इसका संबंध आपकी बाइक ड्राइविंग से हो सकता है।

रेसिपी

सोया दही वड़ा!

सामग्री

1 कप सोयाबीन सोया बड़ी, 2 - आलू (उबले), 1 प्याज (बारीक कटा हुआ), 2 हरी मिर्च (बारीक कटी हुई), 1 टीस्पून गरम मसाला पाउडर, 1/4 टी स्पून अदरक कूटा हुआ, 1/4 कप ब्रेड क्रम्ब्स स्वादानुसार,नमक, दही के लिए सामग्री, 1 टीस्पून राई ,1 टीस्पून उड़द दाल, 1 टीस्पून अदरक, कद्दूकस किया हुआ, 7-8 करीपत्ते, 2 कप बटरमिल्क ,4 टीस्पून लाल मिर्च पाउडर, आधा टीस्पून चाट, मसाला, तेल व घी

विधि

एक बाउल लें उसमे स्टफिंग की सभी सामग्री को अच्छे से मिला लें। अब इस मिश्रण के छोटे-छोटे गोले बना ले। अब इन गोलो को सुनहरा होने तक सेंके। अब तैयार गोलों को अलग रख दें। अब एक पैन ले इसमें घी डाले और गर्म होने पर राई डाले। फिर इसमें उड़द दाल, करीपता डालें। फिर इसे भी अलग रख दें। अब दही का मिश्रण तैयार करने के लिए बटरमिल्क को अच्छे से फेंट लें फिर इसमें सभी मसाले और नमक को अच्छे से मिला लें। अब इस मिश्रण को बाउल में डालकर इसमें तैयार गोलो को डाले। ऊपर से इसमें इमली की चटनी डालें और 20 मिनट के लिए फ्रिज में रखे। अब लाल मिर्च पाउडर और चाट मसाला से गार्निश करके सर्व करें।

आलू की खीर

सामग्री

दूध आधा लीटर

आलू 1

शक्कर स्वादानुसार

थोड़ा सा केसर

मिक्स ड्रायफ्रूट्स 2 टेबलस्पून कटे हुए

विधि

सबसे पहले दूध को गाढा होने तक उबालते रहे। अब आलू को मीडियम साइज में काट लें। आलू को काटने के बाद में इन्हें घी में लाइट फ्राई करें। अब इसमें केसर व शक्कर मिलाकर शक्कर के पिघलने तक पकाएं। फ्राई किए हुए आलू व ड्रायफ्रूट्स मिलाकर 5 मिनट तक पकाएं। अब आलू की खीर को फ्रिज में ठंडा करने के लिए रखें।

जानलेवा हमले में 3 आरोपियों को 10-10 वर्ष का कारावास

साथ ही 50-50 हजार रुपये के अर्थदंड से किया दंडित

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। करीब 6 वर्ष पुराने जानलेवा हमले के मामले में अपर सैशन न्यायालय धौलपुर ने तीन आरोपियों को 10-10 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही प्रत्येक को 50-50 हजार रुपये के अर्थदंड से भी दंडित किया गया है। अपर सैशन न्यायालय धौलपुर के लोक अभियोजक मुकेश सिकरवार ने बताया कि मामला धौलपुर जिले के कौलारी थाना क्षेत्र के गांव जमालपुर का है। जिसमें 30 अगस्त 2019 को जमालपुर निवासी नाहर सिंह पुत्र भगवान सिंह ने कौलारी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में नाहर सिंह ने बताया कि उसके खेत में गांव के श्रीनिवास की बकरियां चर रही थीं। जब खेत में बकरियां चराने की मना किया तो श्रीनिवास, रामवीर और मुकेश ने एकराय होकर लाठी, डंडों व कुल्हाड़ी से जानलेवा हमला कर दिया। जिसमें कुल्हाड़ी के वार से मेरे पिता भगवान सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए और लाठी डंडों के हमले में मेरे दोनों हाथ भी घायल हो गए, सिर में चोट आई। मामले को लेकर पुलिस ने मुकदमा दर्ज करते हुए जांच अनुसंधान किया और कोर्ट में आरोप पत्र पेश किया गया। उसी प्रकरण में अपर सैशन न्यायालय धौलपुर में विचारण के बाद अभियुक्तों को दोषी पाया गया। जिसमें न्यायाधीश राकेश गोयल ने 16 जून 2025 को फैसला सुनाते हुए तीनों आरोपियों रामवीर पुत्र गंगाराम, मुकेश पुत्र गंगाराम और श्रीनिवास पुत्र रामवीर निवासी जमालपुर को 10-10 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ 50-50 हजार रुपये के अर्थदंड से भी दंडित किया गया है।

धौलपुर में अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा की तैयारियों को लेकर जिला कलक्टर ने ली समीक्षा बैठक

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.) राज्य सरकार द्वारा वंचितों के उत्थान और "गरीबी मुक्त राजस्थान" के संकल्प को साकार करने के लिए आगामी 24 जून से 9 जुलाई तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा आयोजित किया जाएगा। इस संबंध में मंगलवार को जिला परिषद सभागार में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिला कलक्टर श्रीनिधि बी. टी. ने पखवाड़े की व्यापक तैयारी के निर्देश दिए। कलक्टर ने कहा कि इस पखवाड़े के माध्यम से अधिक से अधिक आमजन को जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जाए। उन्होंने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना के तहत जिले के सभी बीपीएल परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने के लिए योजनाओं का लाभ सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि पखवाड़े के अंतर्गत ग्राम पंचायत स्तर पर शिविर लगाए जाएंगे, जहां राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के लंबित प्रकरणों का निस्तारण, आधार सीडिंग, सीमाज्ञान, स्वामित्व पट्टा वितरण, मृदा नमूना संग्रहण व मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण जैसे कार्य होंगे। साथ ही जल स्रोतों से अतिक्रमण हटाने और रास्तों की मरम्मत के निर्देश भी दिए गए। वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान की प्रगति पर चर्चा करते हुए कलक्टर ने बताया कि जिले में बावड़ियों, कुंओं, तालाबों और जलधाराओं की सफाई जनसहभागिता से की जा रही है। उन्होंने मानसून को ध्यान में रखते हुए नालों की सफाई, जलभराव क्षेत्रों की पहचान और स्वास्थ्य केंद्रों पर दवाइयों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। बैठक में अवगत कराया गया कि पखवाड़े के दौरान लंबित नल कनेक्शन, पशु जांच व टीकाकरण शिविर, विद्यालयों में प्रवेशोत्सव, सफाई, पात्र विद्यार्थियों को स्कूटी वितरण और पौधा वितरण जैसे कार्य भी संचालित किए जाएंगे।

आमजन की अधिकतम भागीदारी के साथ हो अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन-जिला कलक्टर

साप्ताहिक समीक्षा बैठक में जिला कलक्टर ने दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

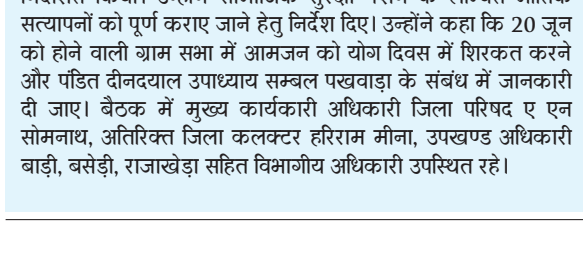

धौलपुर(निसं.)। जिला स्तरीय अधिकारियों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक मंगलवार को जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में जिला परिषद सभागार में हुई। इस दौरान जिला कलक्टर ने कहा कि मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप 21 जून को आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन आमजन की अधिकतम भागीदारी के साथ किया जाये। जिला कलक्टर ने 21 जून को जिले में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुए कहा कि जिला स्तरीय कार्यक्रम ऐतिहासिक सरोवर मचकुण्ड परिसर में प्रातः 6.30 बजे से आयोजित किया जायेगा। इसमें सभी विभागों की भागीदारी रहेगी। आमजन के साथ-साथ समस्त अधिकारी भी अपने कर्मचारियों के साथ जिला स्तरीय कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। आर्युवेद विभाग को योग दिवस के मद्देनजर समस्त तैयारियां करने के निर्देश देते हुए जिला कलक्टर ने कहा कि उपखंड और ग्राम स्तर पर भी कार्यक्रम आयोजित कर आमजन को योग के प्रति जागरूक करें। जिला कलक्टर ने बताया कि आयुष मन्त्रालय भारत सरकार के ''योग संगम'' पोर्टल के साथ ही राज्य सरकार के आयुष विभाग ने योग पोर्टल विकसित किया है। इस पर सभी ग्राम पंचायत से जिला स्तर के नोडल अधिकारी अपने योग स्थल का ऑनलाइन पंजीयन कर योग दिवस पर अभ्यासियों की संख्या व फोटो अपलोड करेंगे। जिले में आयोजित योग दिवस के समस्त कार्यक्रमों के नोडल अधिकारी आयुर्वेद विभाग के उपनिदेशक डॉ. मनोज शर्मा ने बताया कि विभाग द्वारा संचालित सभी चिकित्सालय, औषधालय एवं आयुष्मान् आरोग्य मंदिरों में योग दिवस आयोजित किया जायेगा। इसके अलावा सभी ग्राम पंचायतों में भी कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। इसके साथ ही बैठक में उन्होंने महत्वपूर्ण बांधों के गेट पर मानसून पूर्व ग्रीसिंग के कार्य कराए जाने हेतु जल संसाधन विभाग को निर्देशित किया। उन्होंने सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लम्बित भौतिक सत्यापनों को पूर्ण कराए जाने हेतु निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 20 जून को होने वाली ग्राम सभा में आमजन को योग दिवस में शिरकत करने और पंडित दीनदयाल उपाध्याय सम्बल पखवाड़ा के संबंध में जानकारी दी जाए। बैठक में मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद ए एन सोमनाथ, अतिरिक्त जिला कलक्टर हरिराम मीना, उपखण्ड अधिकारी बाड़ी, बसेड़ी, राजाखेड़ा सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

गन्दगी देख मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने खुद झाड़ू उठाकर की सफाई

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद ए एन सोमनाथ द्वारा सोमवार को ग्राम पंचायत रजौरा कलां पंचायत समिति सैपऊ के गांव में औचक निरीक्षण किया एवं सफाई कार्यो को मौके पर देखकर ग्रामीणों से सफाई कार्यो की जानकारी ली। मौके पर गन्दगी देख अधिकारी एवं कर्मचारियों पर नाराजगी दिखाई एवं खुद ग्राम पंचायत के मुख्य मार्ग पर हाथ में झाड़ू उठाकर सफाई शुरू की। उनके साथ गये सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों व ग्रामीण जनों ने भी सफाई की। मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा लोगों को भी समझाया गया कि आप लोग घर का कचरा नाली एवं रोड़ पर ना फैंके एवं ना ही सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करें क्योकि प्लास्टिक का जीवन लगभग 500 वर्ष का है। प्लास्टिक से जीव जन्तु व पर्यावरण को कई नुकसान है इसके उपयोग से आये दिन नई-नई बीमारियॉ पैदा हो रही है एवं गाय व अन्य पषु-पक्षी इसे खाकर बीमार होकर मर रहे है इसका प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। साथ ही गांव की नालियां-नाले, कुंआ, बावडी, तालाब एवं नदियां दूषित हो रही है व जलीय जीवों के लिए भी जान का खतरा बन रही है। इन सब जीवों की मृत्यु होने में मनुष्यों द्वारा प्लास्टिक का उपयोग करना है। उन्होंने कहा कि हम सब लोग कही ना कही इन निर्दोश प्राणियों की जा रही जान में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जिम्मेदार है। क्यों ना हम सब मिलकर गंदगी को खत्म करें एक जन अभियान के रूप में सभी कार्य करे वर्तमान में ग्राम पंचायतों द्वारा सफाई की निविदाए जारी की गई है। जिनके माध्यम से गांवों की सफाई कराई जावें जैसे रोड सफाई, नाली सफाई, घर-घर कचरा संग्रहण, कचरे की छटनी व सामुदायिक शौचालयों की सफाई आदि कार्य कराये जावे तथा ग्रामीण जनों से अपील की गई कि गांव को स्वच्छ व साफ रखने में सहयोग प्रदान करें ना कि विविधान पैदाकर कार्य को रोके। इस मौके पर अधिषाषी अभियन्ता गोपेष मीना, अधिषाषी अभियन्ता प्रेमचन्द वैरवा, अधिषाषी अभियन्ता अषोक वर्मा सहित ग्राम विकास अधिकारी अनेक सिंह ग्राम पंचायत रजौरा कलां एवं ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

करंट की चपेट में आने से दो ठेके कर्मचारियों की मौत

जयपुर(कासं.)। विद्युत लाइन पर काम कर रहे दो ठेके कर्मचारियों की करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। रिश्ते में चाचा भतीजे लगने वाले दोनों मृतक के शव को जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया हैं। अस्पताल की मोर्चरी पर पहुंचे मृतक के भाई देवेंद्र सिंह ने बताया कि उसका भाई लाखन (28) पुत्र रामेश्वर और भतीजा रमन (20) पुत्र भरत सिंह निवासी मोतीराम का नगला बिजली ठेकेदार लाल सिंह के कहने पर काम करने के लिए गए थे। दोनों चाचा भतीजे पीपरीपुरा गांव के पास नई लाइन की शिफ्टिंग के लिए बिजली के पोल गाड़ने का काम कर रहे थे। बिजली का काम शुरू करने से पहले शटडाउन ले लिया था। मृतक के परिजनों ने आरोप लगाया कि लाइन शिफ्टिंग के काम के दौरान किसी ने विद्युत सप्लाई शुरू कर दी। जिस करंट की चपेट में आने से दोनों चाचा भतीजे अचेत हो गए। घटना के बाद स्थानीय लोगों की मदद से दोनों को जिला अस्पताल लाया गया। जहां इमरजेंसी में तैनात ड्यूटी डॉक्टर ने दोनों को मृत घोषित करते हुए पुलिस को सूचना दे दी। इसके बाद दोनों के शव जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाए गए हैं।

एक दिवसीय औद्योगिक प्रोत्साहन एवं जागरूकता शिविर का आयोजन 24 जून को

धौलपुर राजस्थान वित्त निगम दौसा के तत्वाधान में एक दिवसीय औद्योगिक प्रोत्साहन एवं जागरूकता शिविर का आयोजन 24 जून को किया जाएगा। उप प्रबंधक एवं प्रभारी राजस्थान वित्त निगम ने बताया कि एक दिवसीय औद्योगिक प्रोत्साहन एवं जागरूकता शिविर का जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र धौलपुर में 24 जून को प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि शिविर के दौरान निगम द्वारा संचालित युवा उद्यमिता प्रोत्साहन योजना, सरल ऋण योजना, फैलेक्सी ऋण योजना, जनरल टर्म योजनाएं एवं मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन सहित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जाएगी।

कार्यालय संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, चूरू

Phone No. 01562-250237 E-mail ID: ddaho_churu@yahoo.co.in

क्रमांक- एफ. वी. (0/ लेखा / 2025-26 / 2897 दिनांक- 06.06.2025

खुली बोली आमंत्रण सूचना

कार्यालय संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग चूरू के लिए वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए निम्न सम्बन्धित सेवाओं के लिए पंजीकृत बोलीदाता / संवेदक/ निविदादाताओं से बोली प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते है-

क्र. स.	सेवा / कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रुपये)	बोली प्रपत्र शुल्क (रुपये)	बोली प्रतिभूति राशि	बोली की अंतिम दिनांक	UBN No
1	मैन विद मशीन 09	990000.00	500/-	19800 /-	बोली प्रपत्र प्राप्त करने की दिनांक 09.06.2025 से दिनांक 16.06.2025 को प्रातः 11.00 बजे तक बोली प्रपत्र जमा करवाने की दिनांक 16.06.2025 को सांय 3.00 बजे तक तकनीकी बोली खोलने की दिनांक 17.06.2025 को प्रात 11.00 बजे	ANH2526 SSOB0010 3

विस्तृत शर्ते वेबसाइट http://sppp-rajasthan.gov.in एवं विभागीय वेबसाईट http:// animalhusbanrdy.rajasthan.gov.in पर भी देखी जा सकती है अथवा कार्यालय समय में आकर अवलोकित की जा सकती है।

DIPR/C/7712/2025

(डॉ. मदन लाल गहनोलिया)
संयुक्त निदेशक,
पशुपालन विभाग, चूरू

कार्यालय ग्राम पंचायत खदुन्दरा

पंचायत समिति खण्डेला (सीकर)

पत्रांक- ग्रा.पं.ख. / 2025-26 / 173 दिनांक-12-06-25

ई-निविदा सूचना संख्या-2 / 2025-26

इस कार्यालय द्वारा साफ सफाई सम्पर्ण ग्राम की नाली सफाई सामुदायक परिसर की सफाई आवासीय व व्यवसायिक कार्य को पूर्ण सम्पादित करने हेतु तीन / दो वर्ष की डिफेक्टय लाईब्लिटी के साथ उपर्युक्त श्रेणी के राजस्थान / केन्द्र सरकार में पंजीकृत संवेदको से ई टेण्डर प्रक्रिया द्वारा ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://sppp.rai.nic.in पर देखा जा सकता है।
उक्त कार्य के NIB NO PIT2526A0127,
UBN NO PIT2526SSOB00129 है।

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत खदुन्दरा

प्रशासक
ग्राम पंचायत खदुन्दरा

कार्यालय नगरपालिका मण्डल तारानगर (चूरू) राजस्थान

क्रमांक- न.पा.ता/2025-26 / 996 दिनांक- 16-06-25

आपत्ति सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि नगरपालिका क्षेत्र तारानगर के निम्नांकित भूखण्ड धारियो ने कृषि भूमि नियमन, पट्टा नामान्तरण, 69ए नियमन हेतु पत्रावलियां जमा करवायी गयी है अतः जिस किसी को कोई आपत्ति हो तो, इस आपत्ति सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस मे सप्रमाण आपति इस कार्यालय मे प्रस्तुत करे 7 बाद अवधि प्राप्त आपत्ति पर विचार नही किया जायेगा ।

क्र.स.	आवेदक का नाम व पिता का नाम	वार्ड नं.	ऑनलाईन आवेदन	आवेदन सं.	कुल तादादी (वर्गमीटर)	प्रयोजनार्थ
1.	देवराज पुत्र विश्वनाथ	09	133689	238	141.00	पट्टा नामान्तरण
2.	आजाद सिंह पुत्र वेदप्रकाश	14	222821	4531	18.57	69ए सरेण्डर
3.	महेन्द्र शर्मा पुत्र प्रेमप्रकाश शर्मा	09	223014	4534	211.65	69ए सरेण्डर
4.	सुरेन्द्र कुमार पुत्र प्रेमप्रकाश शर्मा	09	223101	4535	213.37	69ए नियमन
5.	चरण सिंह पुत्र श्योराम, भादरराम पुत्र डुगरराम, जगदीश प्रसाद पुत्र रिछपाल	27	133910	237	96.14	पट्टा नामान्तरण
6.	नरेश कुमार शर्मा पुत्र अंजनी कुमार	29	223300	4536	229.29	69ए नियमन
7	दलीप कुमार पुत्र प्रेमप्रकाश	09	223037	4533	180.40	69ए नियमन
8.	श्यामसुन्दर पुत्र प्रेमप्रकाश	09	223031	4532	169.60	69ए नियमन
9.	रामदेव पुत्र नंदराम जाट	06	-	2178	232.23	कृषि भूमि नियमन

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका तारानगर

जिला स्तरीय जनसुनवाई 19 को

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिले में त्रि-स्तरीय जनसुनवाई एवं परिवेदनाओं के निस्तारण के संबंध में जिला स्तरीय जनसुनवाई का आयोजन 19 जून गुरुवार को अटल सेवा केन्द्र जिला कलेक्ट्रेट परिसर में प्रातः 11 बजे से किया जायेगा।

कार्यालय, नगरपालिका मण्डल, बीदासर (चूरू) राज0

E-Mail :nagarpalikabidasar@gmail.com Phone No. : 01560 – 262028

क्रमांक–नपाबी / 2025–26 / 681 दिनांक–13.06.2025

बोली आमंत्रण निविदा सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगरपालिका बीदासर द्वारा वित्तीय वर्ष 2025–26 हेतु निम्नलिखित ठेको की बोली उनके नाम के सम्मुख अंकित दिनांक एवं समय पर लगाई जानी है। अतः इच्छुक व्यक्ति / संवेदक समय पर बोली लगाने हेतु कार्यालय हाजा में उपस्थित होवे। अवकाश होने पर आगामी कार्य दिवस को बोली लगाने की कार्यवाही की जावेगी। बोली के साथ किसी प्रकार की शर्त मान्य नही होगी। बोली बिना कारण बताये स्वीकार / अस्वीकार करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरकर्ता के पास सुरक्षित रहेगा।

क्र. सं.	कार्य का नाम	प्रारम्भिक बोली	बोली में भाग लेने का प्रार्थना पत्र शुल्क	बोली की दिनांक	समय
1.	मृत आवारा पशुओं की हड्डी चमड़ी का ठेका	10,000	1000	24.06.2025 से 25.06.2025 तक	दोपहर 02.00 बजे से सांय 05.00 बजे तक
2.	होर्डिंग लगाने का ठेका	20,000	1000	24.06.2025 से 25.06.2025 तक	दोपहर 02.00 बजे से सांय 05.00 बजे तक

NIB Code-DLB2526A2549
UBN NO.- DLB2526SSRC08077 UBN NO.- DLB2526SSRC08078
राज.संवाद / सी / 25 / 4400 अधिशाषी अधिकारी, नगरपालिका बीदासर

कार्यालय, नगरपालिका मण्डल, बीदासर (चूरू) राज0

E-Mail :nagarpalikabidasar@gmail.com Phone No. : 01560 – 262028

क्रमांक–नपाबी / 2025–26 / 687 दिनांक–13.06.2025

निविदा सूचना

पंजीकृत एवं अधिकृत सामग्री विकेताओं, ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका वित्तीय वर्ष 2025–26 के लिए निम्न कार्यो की दरे निर्धारित हेतु निविदाएं आमन्त्रित करती है। इच्छुक निविदादात्ता दोपहर 12 बजे तक निविदा पत्र प्राप्त कर अपनी दरे बन्द लिफाफे में कार्य के सम्मुख अंकित तिथियों को सायं 1 बजे तक प्रस्तुत कर सकते है। प्राप्त निविदाएं उसी दिन सायं 03 बजे उपस्थित निविदादात्ताओ के समक्ष खोली जावेगी। उक्त निविदा सूचना राज्य लोक उपापन पोर्टल (http://sppp.rajasthan.gov.in) पर देखी जा सकती है।

NIB Code-DLB2526A2510
UBN NO.- DLB2526SSRC07913

अध्यक्ष
नगरपालिका, बीदासर

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका, बीदासर

राज.संवाद / सी / 25 / 4399

कार्यालय अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता, जन स्वा0 अभि0 विभाग, जयपुर क्षेत्र - द्वितीय, गांधी नगर, जयपुर

ई-मेल- ace.regionZjaipur@yahoo.com फोन नं.- 0141-2702700

क्रमांक- अ.मु. अ. क्षे - 2 / 2025-26 / 2881- 2910 दिनांक- 05-06-2025

निविदा सूचना

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से "Rate Contract for the work of Designing, providing, installation and commissioning of Solar Energy based bore well water pumping systems, including comprehensive operation and maintenance for a period of seven years in various villages / Towns of PHED Region Jaipur wnd " कार्य हेतु स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग एव राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनो/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूरसंचार विभाग / रेल्वे इत्यादि मे उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया द्वारा निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। विस्तृत निविदा एवं निविदा प्रपत्र www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है ।

क्रम संख्या	एन. आई. बी	यु.बी. एन कोड	निविदा संख्या
1	PHE2526A1589	PHE 2526WSRC03250	05/2025-26

DIPR/C/7683/2025

(शुभाशु दीक्षित)
अतिरिक्त मुख्य अभियंता
जन स्वा. अभि. विभाग
जयपुर क्षेत्र - द्वितीय, जयपुर

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड- सुजानगढ़

E-Mail: eesuj.chu.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांक- अअ/जनस्वा/निविदा/2025-26 / 618- 639 दिनांक- 04/06/2025

'ई' निविदा सूचना संख्या 21 से 24 / 2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पी.डब्ल्यू. एफ. एण्ड ए. आर. पार्ट -ना अपेडिक्स दिनांक 01.07.1999 से लागू एवं समय-समय पर वित्त विभाग द्वारा जारी संशोधित परिपत्रों (आज तक) के अनुरूप विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के विभागों में सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों एवं संबंधित कार्यों में अनुभव रखने वाली फर्मों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

निविदा फर्म ऑनलाईन वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in से कॉलम संख्या 06 में अंकित तिथि तक सांय 6.00 बजे तक डाउनलोड / अपलोड किये जा सकते है। वैब साईट पर तकनिकी बिड कॉलम संख्या 08 में अंकित तिथि को इस कार्यालय में प्रातः 11.30 बजे खोली जावेगी। यदि किसी कारणवंश उस दिन अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर तकनिकी बिड खोली जावेगी।

निविदा शुल्क / धरोहर राशि ई-ग्रास के माध्यम से जो कि अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा.अभि. विभाग, खण्ड - सुजानगढ़ (डी.डी.ओ. कोड 13128) के नाम देय हो एवं ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया शुल्क रू0 50.00 लाख तक 500 /- रूपये तथा 50.00 लाख से अधिक 1000 /- रूपये ई-ग्रास के माध्यम से जो कि MD, RISL Payable At Jaipur के नाम से देय हो इस कार्यालय में कॉलम संख्या 07 में अंकित तिथि एवं समय सांय 6.00 बजे तक जमा करवाना आवश्यक है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल (MSC) हस्ताक्षर के माध्यम से वैब साईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर फर्म को रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

NIB No	UBN No.
21/2025-26	PHE 2526 WSRC 03186
22/2025-26	PHE 2526 WSRC 03187
23/2025-26	PHE 2526 WSRC 03188
24/2025-26	PHE 2526 WSRC 03189

DIPR/C/7583/2025

(कैलाशचन्द माली)
अधिशाषी अभियन्ता,
रीन स्वा. अभि. विभाग, खण्ड- सुजानगढ़

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड -सुजानगढ़

E-Mail : eesuj.chu.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांक- अअ/जनस्वा/निविदा/2025-26 / 640 - 657 दिनांक- 04/06/2025

निविदा सूचना संख्या 25 से 27 / 2025-26

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों के लिये उपयुक्त श्रेणी में नियमानुसार प्रभावी आदेशों (समय-समय पर संशोधित) के तहत पंजीकृत ठेकेदारों से मोहर बंद निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदाओं के विक्रय की अंतिम तिथि एवं प्राप्ति / खोलने की तिथि कार्य के सामने अंकित की गई है। निविदा विक्रय / प्राप्ति/खोलने के दिन अवकाश होने पर निविदाओं का विक्रय/प्राप्ति/खोलने की कार्यवाही अगले कार्य दिवस में होगी। फर्म अथवा ठेकेदार को निविदा क्रय करते समय निविदा शुल्क के साथ पंजीयन प्रमाण-पत्र, जीएसटी प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना होगा। फैक्स / तार द्वारा भेजी गई निविदा मान्य नहीं होगी। निविदादाता विभागीय वेबसाईट www.sppp.raj.nic.in से निविदा प्रपत्र डाउनलोड करके भी भिजवा सकते है, ऐसी स्थिति में धरोहर राशि एवं निविदा प्रपत्र का शुल्क ई-ग्राम के माध्यम से ही जमा करवाना होगा। निविदा से संबंधित अन्य शर्तें इस कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय समय में देखी जा सकती है। निविदाएं विक्रय तिथि की अंतिम तिथि की सांय 6.00 बजे तक है। प्राप्त निविदाएं खोलने की तिथि को दोपहर 3.00 बजे उपस्थित निविदा दाताओं के सम्मुख खोली जावेगी। कार्य को आवश्यकतानुसार घटाने-बढाने अथवा बिना कोई कारण बताए निविदा को निरस्त करने के लिए निम्न हस्ताक्षरकर्ता को पूर्ण अधिकार होगा तथा देरी से प्राप्त होने वाली निविदा के लिए विभाग की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। कोई विवाद उत्पन्न होने पर बाद चूरू न्यायालय में दायर किया जायेगा, भारत में स्थित अन्य किसी करवा या शहर में नहीं।

NIB No	UBN No.
25/2025-26	PHE 2526 WSOB 03193
26/2025-26	PHE 2526 WSOB 03215
27/2025-26	PHE 2526 WSOB 03216

DIPR/C/7584/2025

(कैलाशचन्द माली)
अधिशाषी अभियन्ता,
जन स्वा.अभि. विभाग, खण्ड-सुजानगढ

मिड-डे-मील एमआईएस संघ सीकर ने जिला कलक्टर को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। राजस्थान में ठेका कर्मचारियो के लिए वर्तमान सरकार की ओर से रेक्सको की तरह आरएलएसडीसी (राजस्थान लॉजिस्टिक सर्विस डिलीवरी कॉरपोरेशन) के गठन की घोषणा की गई थी, कार्मिक (क-5) विभाग की ओर से विभिन्न विभागों में कार्यरत प्लेसमेंट/ठेकाकर्मियों की सूचना मांगी जा रही है, परन्तु अभी तक आयुक्तालय मिड डे मील, जयपुर की ओर से इस संबंध में कोई भी सूचना नहीं मांगी गई है। जिससे राज्य के मिड डे मील योजनान्तर्गत कार्यरत ठेकाकर्मियों में असंतोष व्याप्त है। मिड डे मील संघ, सीकर के जिलाध्यक्ष राकेश सैनी ने बताया कि मिड डे मील संघ, सीकर ने जिला कलेक्टर, सीकर मुकुल शर्मा से मांगों के निराकरण के लिए वार्ता कर ज्ञापन दिया गया। इसमें जिला कलेक्टर सीकर ने आश्वासन दिया कि जल्द ही समस्याओं का निवारण किया जाएगा। ज्ञापन देने वालो में मिड डे मील संघ, सीकर के सदस्य श्रीपाल सिंह राठौड़, राजा बाबू शर्मा, कुलदीप वर्मा ,अशोक कुमार कुमावत, शुभम कनवारिया मौजूद रहे।

झुंझुनूं में मकान पर कब्जे को लेकर दो पक्ष भिड़े : देर रात तक रहा तनाव

महिलाओं-बच्चों से मारपीट, पथराव कर तोड़फोड़

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं शहर के इंदिरा नगर स्थित लाल पहाड़ी क्षेत्र में सोमवार रात मकान पर कब्जे को लेकर दो पक्ष आमने-सामने हो गए। विवाद इतना बढ़ गया कि एक पक्ष ने दूसरे पक्ष के घर में घुसकर जमकर तोड़फोड़ और पत्थराव कर दिया। महिलाओं और बच्चों के साथ मारपीट की गई। करीब चार घंटे तक क्षेत्र में तनावपूर्ण स्थिति बनी रही। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और बीच-बचाव कर मामला शांत कराया। जानकारी के अनुसार वार्ड संख्या 8 इंदिरा नगर के लाल पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले मिठूराम सांसी के मकान पर सोमवार रात करीब आठ बजे कुछ लोगों ने कब्जा करने की नीयत से हमला बोल दिया। मिठूराम के अनुसार हमलावरों ने उनके घर के दरवाजे तोड़ डाले। खिड़कियों पर पथराव कर कांच फोड़ दिए और घर में मौजूद महिलाओं और बच्चों के साथ मारपीट की। इस हमले में मिठूराम की पत्नी कामा देवी, बेटी मधु और एक अन्य परिजन मेहंदी घायल हो गए। पुलिस ने दोनों पक्षों को समझाकर शांत किया। घटना की सूचना पर कोतवाली से पुलिस मौके पर पहुंची। पहले तो पुलिस ने समझाइश कर दोनों पक्षों को शांत किया, लेकिन कुछ ही देर बाद दोबारा तनाव फैल गया। हमलावर फिर से घर के सामने इकट्ठा हो गए और माहौल तनावपूर्ण बना रहा। इस दौरान आस-पास के लोग सहमे हुए अपने घरों में दुबक गए। लोगों ने पुलिस की गश्त बढ़ाने की मांग की। मिठूराम ने आरोप लगाया कि श्रवण जोधपुरिया, उसका भाई सीताराम, सेटी, नत्थूराम, सागर जोधपुरिया व सुभाष नूनिया समेत चार दर्जन से अधिक लोगों ने उनके घर पर धावा बोला। मकान पर जबरन कब्जा करने की नीयत से यह हमला किया गया। मिठूराम ने बताया कि वे पिछले कई वर्षों से लाल पहाड़ी क्षेत्र में स्थित मुक्तिधाम के पास स्थित मकान में रह रहे हैं। यह जमीन उन्हें तत्कालीन कलेक्टर कुंजीलाल मीणा के कार्यकाल में अलॉट हुई थी, जिसके बाद उन्होंने वहां मकान बनाकर निवास करना शुरू किया। उन्होंने यह भी बताया कि कुछ महीने पहले 23 अप्रैल को भी इसी प्रकार उनके मकान पर हमला किया गया था, जिसकी शिकायत प्रशासन को दी गई थी लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। मिठूराम का कहना है कि उन्होंने इस संबंध में कलेक्टर और एसपी को ज्ञापन सौंपकर कार्रवाई की गुहार भी लगाई थी, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। अब दोबारा हमला कर उन्हें घर से बेदखल करने की साजिश की जा रही है। इस पूरे घटनाक्रम को लेकर कोतवाल हरजिंद्र सिंह ने बताया कि इंदिरा नगर इलाके में मकान विवाद को लेकर झगड़े की सूचना मिली थी। मौके पर पुलिस भेजी गई और स्थिति को नियंत्रण में लिया गया। मामले की जांच की जा रही है और आवश्यकता पड़ने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

पहले प्रयास में तनुज टाण्डी ने क्रेक किया नीट

जयपुर टाइम्स

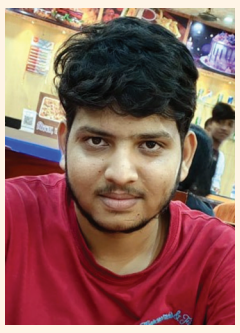

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के निकटवर्ती गांव बामणिया के निवासी तनुज टाण्डी ने 622 अंक हासिल कर प्रथम प्रयास में ही नीट क्रेक कर ली है। ओबीसी वर्ग में तनुज टाण्डी ने 105वीं तथा आल इंडिया रैंक 408 वीं हासिल की। इनके पिता ओमप्रकाश टाण्डी किसान हैं और माता गृहिणी हैं। तनुज की इस उपलब्धि पर ग्रामीणों में खुशी की लहर है। बड़े भाई राजेंद्र भंवरिया ने बताया कि तनुज की कड़ी मेहनत से ये संभव हो पाया।

रामदेव मावलिया बने एएसआई

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। लक्ष्मणगढ़ पुलिस चौकी प्रभारी हेड कांस्टेबल रामदेव सिंह मावलिया की हेड कांस्टेबल से एएसआई पद पर पदोन्नति हुई है। चौकी प्रभारी मावलिया के एएसआई बनने पर जहां लक्ष्मणगढ़ कस्बे के प्रबुद्धजनों ने खुशी जाहिर करते हुए बधाई दी है वही शुभचिंतकों ने शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है। मावलिया को उत्कृष्ट कार्य किए जाने पर विभाग की ओर से कई बार सम्मान से भी नवाजा गया है। बता दें कि मावलिया चंद्रपुरा गांव के निवासी है और लंबे समय से लक्ष्मणगढ़ कस्बे में तैनात है।

बारिश से मौसम सुहावना

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। मंगलवार को दिन में बारिश हुई, जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली। हालांकि बारिश के बाद उमस बढ़ी और कुछ समय बीत जाने के बाद फिर से रिमझिम हुई और आखिरकार शाम को मौसम सुहावना हो गया।

दीक्षित महामंत्री बने

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। जिला कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए नवलगढ निवासी जय राम दीक्षित को जिला महामंत्री के पद पर मनोनीत किया गया है। जिला अध्यक्ष जितेंद्र इंदौरिया की अनुशंसा पर प्रदेश अध्यक्ष कोड ने यह नियुक्ति दी है।

भाजपा मंडल अध्यक्ष के प्रयासों से राह हुई आसान

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। श्री सम्राट सिद्धि विनायक गणेश मंदिर मण्डावा के सामने के रास्ते में सडक का विवाद चल रहा था जिसके बाबत हमने प्रशासन को ज्ञापन देकर अवगत करवाया था। इस कार्य में मंगलवार को आपसी सहमति से काम फिर से शुरू कर दिया गया है। भाजपा नगर मण्डल अध्यक्ष मोहन लाल सैनी ने मौके पर आकर दोनों पक्षो की बात सुनकर समझाइश की, जिस पर दोनों पक्षो ने बीच का रास्ता निकाल कर सड़क बनाने की सहमति प्रदान कर दी। इसके बाद सड़क का काम फिर से शुरू हो गया है, इसके लिए दोनों पक्षों की ओर से मोहनलाल सैनी को धन्यवाद दिया गया।

कार्यालय नगरपरिषद सुजानगढ़ (चूरू) राजस्थान

क्रमांक- न.प.सु. / भूमि शाखा / 2025 / 2510 दिनांक 17-06-2025

आपत्ति आमंत्रण सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नीचे अंकित निम्नलिखित व्यक्तियों द्वारा कृषि भूमि नियमन के अन्तर्गत पट्टा नियमन हेतु आवेदन किया हुआ है। उक्त के सम्बंध में किसी व्यक्ति / संस्था को आपत्ति हो तो आपत्ति प्रकाशन के 07 दिवस में मय दस्तावेज इस कार्यालय में प्रस्तुत करे। बाद मियाद गुजरने पश्चात् किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा और इकतरफा कार्यवाही की जावेगी ।

क.सं.	आवेदक का नाम व पता	कस्बा	ख.नं.	क्षेत्रफल वर्गमीटर	आवासीय / व्यावसायिक
01.	श्रीमती रजिया पत्नी श्री अब्दुल रहमान	सुजानगढ़	1361	512.02	आवासीय

आयुक्त
नगरपरिषद, सुजानगढ़

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों को लेकर बैठक

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मंडावा उपखंड अधिकारी मुनेश कुमारी की अध्यक्षता में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने के संबंध में हुई बैठक में योग दिवस की तैयारियों पर चर्चा की गई। जिसके अन्तर्गत चौखानी हवेली में गार्डन में प्रात 6 बजे से 8 बजे तक विशेष योगाभ्यास का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर एसडीएम मुनेश कुमारी ने बैठक में योग से संबद्ध विभिन्न संस्था प्रतिनिधियों व अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि आयुर्वेद विभाग व संबंधित विभाग टीम भावना के साथ कार्य करते हुए जन-जन तक योग का महत्व पहुंचाकर 21 जून को आयोजित होने वाले 11वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। योग दिवस को सफल बनाने के लिए अपने-अपने विभाग के दायित्वों को गंभीरतापूर्वक निभाने के साथ ही जनप्रतिनिधियों, आमजन को योगाभ्यास में शामिल होने के लिए प्रेरित कर अधिकाधिक सक्रिय प्रयास करें। उन्होंने ब्लॉक पर जगह चिन्हित कर पेयजल, मंच, टेंट, साफ–सफाई सहित सभी व्यवस्थाएं समयबद्धता से सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने शिक्षा विभाग को सरकारी, गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों, कोचिंग संस्थानों में योग कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने योग के आयोजन में सहभागिता निभाने वाली कोचिंग संस्थानों, स्वयंसेवी संस्थाओं के पदाधिकारियों से विचार-विमर्श कर उन्हें अधिकाधिक संख्या में आमजन को जोड़ने को कहा। योग नोड़ल अधिकारी महेश कुमार ने बताया कि जिला स्तरीय समारोह 21 जून को सवेरे 6 बजे शुरू होगा। सभी स्तरों पर होने वाले योग कार्यक्रमों के लिए प्रशिक्षकों को तैयार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अंतराष्ट्रीय योग दिवस से पूर्व 19 जून को योग जागरूकता रैली निकालकर अधिकाधिक लोगों को जागरूक करने का संदेश दिया जाएगा। योग दिवस को लेकर प्रतिदिन खेल स्टेडियम पर योग शिक्षक अजय कुमार के सानिध्य में योग का पूर्वाभ्यास करवा जा रहा है। इस दौरान बैठक में तहसीलदार सुरेन्द्र भास्कर, विकास अधिकारी लक्ष्मीनारायण मीणा, सीबीईओ अशोक कुमार शर्मा, एसीबीईओ दामोदर प्रसाद जांगिड़, बीसीएमओ डॉ . संजीव कुलहरी, आयुर्वेद चिकित्सक महेश कुमार, एएसआई मुलायम सिंह, सफाई प्रभारी सत्यनारायण शर्मा, जेईएन अजय जांगिड़, डीओआईटी प्रोग्रामर सुभाष कल्याण, जलदाय विभाग के सिद्धार्थ सहित स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहें।

स्लीपर बस ने लोक परिवहन बस को मारी टक्कर, घसीसटते हुए डिवाइडर पर चढ़ी

जयपुर टाइम्स

नवलगढ़(झुंझुनूं)। नवलगढ़ में तेज रफ्तार स्लीपर बस ने लोक परिवहन बस को पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में बस में सवार 6 लोग घायल हो गए। टक्कर के बाद लोक परिवहन बस डिवाइडर पर चढ़कर रुक गई। हादसा बलवंतपुरा फाटक पर मंगलवार सुबह करीब 6:30 बजे हुआ। पूरा हादसा पास की निजी स्कूल में लगे सीसीटीवी में कैद हो गया। सीसीटीवी में साफ तौर पर देखा जा सकता है कि लोक परिवहन बस बलवंतपुरा फाटक पर जयपुर की तरफ जाने के लिए मुड़ रही थी। इसी दौरान तेज रफ्तार स्लीपर बस ने पीछे से लोक परिवहन बस को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि लोक परिवहन बस घिसटते हुए डिवाइडर पर जा चढ़ी। एकाएक हुए हादसे लोक परिवहन बस में सवार यात्री तुरंत नीचे उतरे। हादसे के समय लोक परिवहन बस में बैठने के लिए सवारियां खड़ी थी। जिन्होंने भागकर अपनी जान बचाई। आस-पास के लोगों ने बताया कि लोक परिवहन बस पिलानी से जयपुर जा रही थी। इसी दौरान बरेली से खाटूश्यामजी जा रही स्लीपर बस ने पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में स्लीपर बस में सवार 6 लोग घायल हो गए। घटना के बाद आस-पास मौजूद लोगों ने घायलों को नवलगढ़ जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जिला अस्पताल के डॉ. संजीव कालेर ने बताया कि किसी को भी गंभीर चोट नहीं आई। स्लीपर बस ने लोक परिवहन बस को पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में स्लीपर बस के चालक संदीप निवासी चनाना निवासी, इमरान (मुरादाबाद), आकाश और सपना का प्राथमिक उपचार किया गया। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने क्षतिग्रस्त बसों को घटनास्थल से हटवाकर यातायात सुचारू करवाया। मामले को लेकर अब तक किसी ने रिपोर्ट नहीं दी है।

झुंझुनूं में बादल छाए, मौसम हुआ सुहाना: रात में चला अंधड़-बारिश का दौर

बिजली के तार गिरने से मवेशी की मौत

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं जिले में मंगलवार को मौसम सुहाना हो गया। सुबह से बादल छाए हुए हैं। ठंडी हवा चल रही है। इससे गर्मी से राहत मिली है। सोमवार देर रात तेज अंधड़ और बारिश हुई। जिले के कई इलाकों में तेज हवा के साथ झमाझम बारिश हुई। अंधड़ के चलते कई जगहों पर पेड़ उखड़ गए, वहीं बिजली के पोल और तार भी टूटकर सड़कों पर गिर गए। रेलवे स्टेशन के पास एक खंभा गिरने से सड़क पर 11 केवी की लाइन गिर गई। इसी लाइन के संपर्क में आकर एक मवेशी की मौत हो गई। मंगलवार सुबह रेलवे स्टेशन के पास सड़क पर गिरे बिजली के तारों से करंट फैल गया। इसी दौरान एक मवेशी वहां से गुजर रहा था और तारों की चपेट में आ गया। वह काफी देर तक बिजली के करंट से चिपका रहा। आसपास के लोगों ने तुरंत बिजली विभाग को सूचना दी, जिसके बाद कर्मचारी मौके पर पहुंचे और खंभे से तारों को अलग कर बिजली आपूर्ति को बंद किया गया। हालांकि तब तक मवेशी की जान जा चुकी थी। जिले के अन्य इलाकों में भी तेज अंधड़ के चलते कई जगहों पर पेड़ गिरने और बिजली आपूर्ति बाधित होने की खबरें सामने आई हैं। गुढ़ागौड़जी क्षेत्र में सोमवार सुबह 8 बजे तक 5 मिमी और उदयपुरवाटी क्षेत्र में 3 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। मौसम विभाग ने बताया कि पश्चिमी विक्षोभ के असर से सोमवार को पूरे दिन आसमान में बादल छाए रहे। दोपहर बाद कुछ जगहों पर रिमझिम बारिश ने मौसम को सुहावना बना दिया। बारिश और बादलों के चलते वातावरण में नमी बढ़ी और जिले में अधिकतम तापमान में 3.5 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई। सोमवार को पिलानी मौसम केंद्र पर अधिकतम तापमान 37.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि रविवार को यह 40.8 डिग्री था। मंगलवार को झुंझुनूं का अधिकतम तापमान 37.3 डिग्री और न्यूनतम तापमान 27 डिग्री दर्ज किया गया।

20 जून तक यलो अलर्ट जारी

जयपुर मौसम केंद्र ने सीकर, झुंझुनूं सहित शेखावाटी क्षेत्र के लिए 20 जून तक आंधी और बारिश का येलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार, इन दिनों पूरे प्रदेश में प्री-मानसून गतिविधियां सक्रिय हैं। पश्चिमी विक्षोभ के असर से अगले दो दिनों तक तेज हवा चलने और हल्की से मध्यम बारिश की संभावना है। हवा की गति 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच सकती है।

अल्पसंख्यक समुदाय से कारोबारी व शिक्षा ऋण के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(नि.सं.)।। राजस्थान अल्पसंख्यक वित्त व विकास सहकारी निगम लिमिटेड की ओर से अल्पसंख्यक समुदाय के जरूरतमंद व्यक्तियों से वर्ष 2025-26 के लिए कारोबारी व शिक्षा ऋण के लिए आवेदन 24 जून तक आमंत्रित किए गए हैं। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी राजेश कुमार ने बताया कि इच्छुक आवेदनकर्ता वेबसाइट पर वांछित दस्तावेजों सहित आवेदन को 20 जून तक हार्ड कॉपी कार्यालय में जमा करवा सकते हैं। उन्होंने बताया कि इससे संबंधित नियम एवं शर्तो की जानकारी विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध है। प्रार्थी अधिक जानकारी के लिए कार्यालय हाजा में सम्पर्क कर सकते हैं।

चोरी के आरोपी ने पीड़ित से की मारपीट, 2 युवकों के खिलाफ मामला दर्ज

हनुमानगढ़

(नि.सं.)हनुमानगढ़ के रामसरा गांव में चोरी के एक मामले ने हिंसक मोड़ ले लिया। चोरी के आरोपी युवक ने पीड़ित को दुकान पर बुलाकर गाली-गलौज और मारपीट शुरू कर दी। इस संबंध में पीड़ित ने मामला दर्ज कराया है। फेफाना पुलिस थाने के हेड कॉन्स्टेबल केदारनाथ ने बताया कि कृपाल ने दर्ज रिपोर्ट में बताया रविवार रात करीब एक बजे घर से 35 हजार रुपए की चोरी हुई। कृपाल ने सोमवार सुबह पता लगाया तो उसे पता चला कि उसी गांव का रवि उर्फ कुल्ली चोरी में शामिल था। कृपाल जब रवि के घर गया तो वह नहीं मिला। फोन पर बात करने पर रवि ने चोरी करने की बात स्वीकार की। उसने कृपाल को रमेश के मेडिकल स्टोर पर बुलाया। जब कृपाल वहां पहुंचा तो रवि ने उसके साथ गाली-गलौज और मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान मेडिकल स्टोर के मालिक रमेश ने पीछे से कृपाल के सिर पर डंडे से वार कर दिया। चोट लगने से कृपाल बेहोश हो गया। आस-पड़ोस के लोगों ने कृपाल के परिवार को सूचना दी। उसके मामा सरजीत और चाचा के बेटे रमेश व सुरेश उसे नोहर के सरकारी अस्पताल ले गए। कृपाल ने बताया कि रवि और उसके साथी उसे और उसके परिवार को जान-माल का नुकसान पहुंचाने की धमकी दे रहे हैं। फेफाना पुलिस थाने में रवि उर्फ कुल्ली और रमेश के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस ने जांच हेड कॉन्स्टेबल केदारनाथ को सौंप दी है।

सूरतगढ़ का चमका सूर्य देव जाट, फ्लाइंग ऑफिसर बनने पर किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

सूरतगढ़(निसं.)। सूरतगढ़ की पावन धरा के लाल सूर्यदेव जाट ने समाज और राष्ट्र का नाम रोशन करते हुए नेशनल डिफेंस एकेडमी के एग्जाम में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर एयर फोर्स में फ्लाइंग ऑफिसर के पद पर सुशोभित होकर अपनी जन्म भूमि सूरतगढ़ की धरा पर पैर रखा तो शहर के समस्त शिक्षण संस्थानों डिफेंस एकेडमी और जाट समाज के भरपूर संख्या में लोग स्वागत व अभिनंदन के लिए उमड़ पड़े। रोडवेज बस स्टैंड सूरतगढ़ पर तमाम लोगों ने सूर्यदेव को मालाएं और साफा पहनाकर स्वागत किया। वीर तेजाजी जाट कन्या छात्रावास के अध्यक्ष देशराज डूडी, सचिव मोहनलाल डेलू, कोषाध्यक्ष रामस्वरूप गोदारा, सहसचिव गणेशाराम ढूकिया, पूर्व प्रधान रामकुमार भांभू, डॉ एस के सियाग, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी नरेश रिणवां, ब्लॉसम एकेडमी के निदेशक अनिल चुघ, जिला लोकपाल अनिल धानुका, एवरग्रीन अकादमी के संचालक गुरु प्रेम सिंह, निजी शिक्षण संस्थान संगठन के ब्लॉक अध्यक्ष रामदयाल सहारण आदि ने माला पहनाकर स्वागत किया। मुख्य बस स्टैंड सूरतगढ़ से काफिले के साथ सूर्यदेव जाट वीर तेजाजी मंदिर पहुंचे और तेजाजी के दर्शन कर उपस्थित प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों को प्रेरणादायी उद्बोधन दिया। कार्यक्रम की समस्त गतिविधियों का आयोजन जाट क्लब सूरतगढ़ के अध्यक्ष विनोद भांभू, उपाध्यक्ष अनिल गोदारा, सचिव सुभाष भादू और कोषाध्यक्ष चेतराम सियाग और जाट क्लब की टीम की ओर से किया गया। वीर तेजा मंदिर प्रांगण में संस्कार शिक्षण संस्थान के डायरेक्टर ओमप्रकाश भादू की ओर से अपने भतीजे सूर्यवीर की इस अद्भुत और प्रशंसनीय उपलब्धि के उपलक्ष में काफिले में शामिल हुए समस्त मेहमानों को राजस्थानी पेय राबड़ी पिलाकर राजस्थानी संस्कृति परंपरा तथा खानपान को बढ़ावा देने की मिसाल पेश की। इस कार्यक्रम में महेंद्र धतरवाल, भूप सिंह सेवदा, अनूपगढ़ जाट सेवा समिति के प्रतिनिधि हेतराम मिल, सूर्य के दादा भादर राम भादू सूर्य के पिता कृष्ण लाल बहादुर और सूर्यवीर जाट ने जाट संस्थान में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने का उदाहरण पेश किया। सूर्यदेव के अभिनंदन काफिले में हनुमान बेनीवाल, कालूराम सहारण,चेतराम झोरड़, श्रवण थालोड़, दयाल जाखड़,अर्जुन ढूकिया, हीरालाल गोदारा, ओम प्रकाश नेहरा, भागीरथ जाखड़, सुभाष गोदारा, राजाराम सियाग, कृष्ण लाल झूरिया, सुलेंद्र भादू, सुखदेव लेघा, विष्णु भादू, केसु राम भादू, मांगीलाल भादू, गिरधारी स्वामी, आलोक मिश्रा, शीशपाल बिजारणिया, साहबराम सोनी, ओम प्रकाश हुड्डा, लालचंद ओझा,अमन परिहार, लक्ष्मण जोशी, रामप्रकाश सहारण, विनोद गोदारा, रामपाल कस्वां, श्रवण भादू , दिलीप भादू पवन सिल्लू अजय गोदारा आदि तमाम बड़ी संख्या में सर्व समाज के लोग उपस्थित रहे। जाट क्लब ने सूर्य देव को मंदिर प्रांगण में साफा पहनाकर और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
18 जून, 2025

पेंशनरों के लिए समाधान शिविर 19 जून को

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। पेंशन व पेंशनर्स कल्याण विभाग के निर्देशानुसार चूरू जिले के राज्य सरकार के पेंशनरों व पारिवारिक पेंशनरों की समस्याओं के समाधान के लिए जिला मुख्यालय पर कोष कार्यालय में 19 जून को समस्या समाधान शिविर का आयोजन किया जाएगा। कोषाधिकारी प्रवीण सिंघल ने बताया कि जिले के पारिवारिक पेंशनरों की जन्म ति?थि निर्धारण, रूपान्तरण, बहाली या 70 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के पेंशनरों को अतिरिक्त पेंशन संबंधी किसी प्रकार की समस्या हो तो संबंधित पेंशनर वांछित दस्तावेज लेकर कोष कार्यालय, चूरू में उपस्थित होकर अपना अभ्यावेदन प्रस्तुत कर सकते हैं।

एक पेड़ माँ के नाम बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी अजय प्रताप सिंह के निर्देशन में कस्बे के वार्ड संख्या 3 में शीतला चौक के पास एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अन्तर्गत स्वयं सहायता समूह की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें स्वयं सहायता समूह कि महिलाओं को पर्यावरण संरक्षण से जुड़े विभिन्न घटकों पर जागरूक किया गया व प्लास्टिक केरीबेग के स्थान पर कपड़े के थैले का प्रयोग करने का आह्वान किया गया। बैठक के दौरान नितेश उपाध्याय, गोपाल, अर्जुन सिंह राजपुरोहित, अभिमन्यु सिंह सहित स्वयं सहायता समूह की महिलाये उपस्थित रही।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और आर्थिक सशक्तिकरण को लेकर महिला अधिकारिता विभाग करेगा कवायद

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि की अध्यक्षता में मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय महिला समाधान समिति, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ टास्क फोर्स समिति और सखी वन स्टॉप सेंटर की प्रबंधक समिति की बैठक का आयोजन हुआ। जिला स्तरीय महिला समाधान समिति की बैठक में निर्णय लिया गया कि महिला अधिकारिता विभाग की ओर से जिले की उन सभी कॉलेज में जहां लड़कियां पढ़ रही हैं वहां विभिन्न क्षेत्रों की सफल महिलाओं के सेशन आयोजित किए जाएं ताकि गर्ल्स उन महिलाओं से सीखकर भविष्य में आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बन सके। बैठक में सीईओ जिला परिषद सोहनलाल ने कहा कि अक्सर देखने में आता है कि बालिकाएं और महिलाएं सरकारी नौकरी पाने के लिए शादी से पहले भी और शादी के बाद भी 10-10 साल तक पढ़ाई करती रहती हैं। जबकि सरकारी के अलावा विभिन्न प्राइवेट सेक्टर में भी महिलाएं बहुत अच्छा कार्य कर रहीं है। साथ ही वे आत्मनिर्भर होने के साथ साथ आर्थिक रूप से भी सशक्त हैं। लिहाजा ऐसी सफल महिलाओं के सेशन उन सभी कॉलेज में आयोजित करवाए जाएं जहां लड़कियां पढ़ रही हैं। जिला कलेक्टर ने इस बाबत महिला अधिकारिता विभाग को सफल महिलाओं के सेशन आयोजित करने के लिए निर्देशित किया। सखी वन स्टॉप सेंटर की प्रबंधक समिति की बैठक में जिला कलेक्टर ने पीबीएम अधीक्षक को सखी वन स्टॉप सेंटर को पीडब्ल्यूडी के जरिए जल्द जीर्णोद्धार कराने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने सखी सेंटर के प्रचार प्रसार को लेकर मिली गाड़ी को जिला कलेक्टर की जनसुनवाई और रात्रि चौपाल में ले जाने, ग्राम पंचायत मुख्यालय पर प्रत्येक महीने की 5 और 20 तारीख को होने वाली ग्राम सभा में ले जाने और सखी सेंटर के प्रचार प्रसार के निर्देश दिए। विदित है कि जिला मुख्यालय पर पीबीएम अस्पताल परिसर में कैंसर हॉस्पिटल के पास सखी वन स्टॉप सेंटर बना हुआ है जहां कोई भी घरेलू हिंसा से पीड़ित, दुर्घटनाग्रस्त, असहाय महिला या जिसका रहने का कोई आश्रय ना हो वह महिला अधिकतम 5 दिन तक वहां रह सकती हैं। महिला अधिकारिता उपनिदेशक डॉ. अनुराधा सक्सेना ने बताया कि केन्द्र सरकार की ओर से संचालित सखी सेंटर पीबीएम अस्पताल के अलावा बीकानेर पश्चिम विधायक श्री जेठानंद व्यास के प्रयासों से शहर के अंदर सैटेलाइट अस्पताल के पास डिस्पेंसरी नंबर 6 में भी अति शीघ्र खुलने जा रहा है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ टास्क फोर्स समिति की बैठक में जिला कलेक्टर ने जिले में संचालित सभी सोनोग्राफी सेंटर का बीसीएमओ की ओर से ब्लॉक वाइज औचक निरीक्षण करने और मुखबिर योजना को प्रचारित करने के निर्देश दिए गए। साथ ही कहा कि तीसरे से पांचवें महीने के बीच हो रही सोनोग्राफी और उन महिलाओं की सोनोग्राफी पर भी विशेष तौर पर नजर रखी जाए जिनके पहला बच्चा बेटी है। बैठक में लाडो प्रोत्साहन योजना और जननी सुरक्षा योजना में पीबीएम अस्पताल की प्रोग्रेस लगातार कम होने पर ममता कार्ड देख रहे स्टाफ को चेंज करने के निर्देश दिए। बैठक में जिला कलेक्टर के अलावा सीईओ जिला परिषद सोहनलाल, सीएमएचओ डॉ पुखराज साध, सिकाऊ सीओ सुभाष गोदारा, महिला अधिकारिता उपनिदेशक डॉ. अनुराधा सक्सेना, महिला बाल विकास उपनिदेशक सुभाष बिश्नोई, पीबीएम के उप अधीक्षक डॉ गौरी शंकर, प्रचेता विजय लक्ष्मी जोशी, महिला पर्यवेक्षक ज्योति बिश्नोई, महिला सुरक्षा व सलाह केन्द्र कोलायत से विजय लक्ष्मी व्यास, जयवंती शर्मा, नोखा से सुजाता, सखी सेंटर से सरिता गोदारा समेत अन्य महिला सुरक्षा व सलाह केन्द्र प्रतिनिधि उपस्थित रही।

फाटक पर जलभराव की समस्या, लोग परेशान

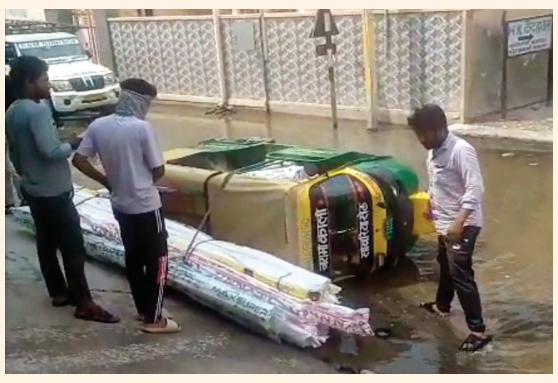

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। रेलवे फाटक संख्या दो के पास पानी जमा होने के कारण लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। मंगलवार को दिन में थोड़ी बहुत बारिश हुई। इसी दौरान एक लोडेड ऑटो यहां पलट गया, जिससे ऑटो चालक को काफी नुकसान हुआ। श्याम सुंदर स्वर्णकार ने बताया कि रोज-रोज बारिश में पानी यहां पर भरता है, जिसके कारण वाहन चालकों को काफी दिक्कतें होती हैं और हर वक्त दुर्घटना का अंदेशा बना रहता है। लोगों ने प्रशासन से समस्या का समाधान करवाए जाने की मांग की है।

बिजली की अनेक समस्याओं के समाधान की मांग, ऊर्जा मंत्री के नाम दिया ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निसं.)। तहसील के एक झंडा एक डंडा संगठन की ओर से मंगलवार को ऊर्जा मंत्री के नाम जोधपुर विधुत वितरण निगम के सहायक अभियंता डिस्कॉम को संगठन के तहसील अध्यक्ष रामपाल चौधरी के नेतृत्व में ज्ञापन देकर अवगत करवाया है। ज्ञापन में बताया कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के अंदर टेढ़े मेढ़े पोल, निचे लटकते वायर, वोल्टेज की समस्या और जनता पर जबरदस्ती थोपे जा रहे स्मार्ट मिटरों को लेकर और ग्रामीण क्षेत्र के अंदर घरेलू मिटरों में ज्यादा बिल रीडर से रीडिंग सही नहीं लेना और कुआं बेल्ट पर बकाया बिल को लेकर, किसानों के उतारे गए ट्रांसफार्मर, किसानों के खेतों में वापस रखवाए जाए जो बकाया बिल है उनको किस्तों में जमा लिया जाए और दीनदयाल उपाध्याय योजना के तहत ढ़ाणियों में निशुल्क बिजली कनेक्शन दिया जाए, कुआं बेल्ट पर 10 घंटे बिजली दी जाए सहित अनेक मांगों को लेकर ज्ञापन दिया है। अगर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा। ज्ञापन देने वालों में किसान नेता रुपचन्द सहारण राजास, सांवरमल जाखड़, धीरेंद्र सैनी, रामनिवास सहारण, तोलाराम प्रजापत, गिरधारी लाल सेन, भागीरथ भादू, गौरी शंकर, लाल सिंह, कल्याण सिंह, सांवरमल गुर्जर, भवानी चौधरी, भागीरथ गुर्जर, राम अवतार प्रजापत सहित संगठन के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विद्या संबल योजना: 23 जून तक आवेदन आमंत्रित

बीकानेर(नि.सं.)।। जिला अल्पसंख्यक कल्याण कार्यालय के अधीन जिला मुख्यालय पर राजकीय अल्पसंख्यक बालक आवासीय विद्यालय संचालित है। राजकीय अल्पसंख्यक बालक आवासीय विद्यालय में कक्षा 6 से 8 तक के बालकों को अध्ययन करवाने के लिए विद्या संबल योजनान्तर्गत हिन्दी व गणित विषयों में गैस्ट फैकल्टी के रूप में निजी अभ्यर्थी या सेवानिवृत अध्यापकों से 23 जून तक आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी राजेश कुमार कालवा ने बताया कि प्रत्येक रिक्त पद के विरुद्ध यथासंभव 3 अभ्यर्थियों का पैनल तैयार किया जाएगा। योग्य अभ्यर्थियों का चयन निर्धारित न्यूनतम शैक्षणिक परीक्षा जैसे की माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, स्नातक, बीएड एवं रीट उत्तीर्ण (जिसकी समयावधि समाप्त न हो) परीक्षाओं में प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर किया जाएगा।

गिनाणी के कीचड़ में फंसी गाय, जीवरक्षक दल के कार्यकर्ताओं ने गाय को निकाला बाहर

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के कच्चा बस स्टैंड के पास स्थित गिनाणी के कीचड़ में मंगलवार को 1 गाय फंस गई। स्थानीय लोगों ने गाय के फंसने की सूचना तुरन्त जीव रक्षक दल के कार्यकर्ताओं और नगरपरिषद को दी। मौके पर पहुंचे जीव रक्षक दल के कार्यकर्ताओं ने मौके पर जाकर देखा तो गाय को बिना क्रेन की सहायता से निकालना असंभव था। ऐसे में मौके पर पहुंचे नगरपरिषद के अधिकारियों व कर्मचारियों ने मौके पर क्रेन को बुलवाया और जीव रक्षक दल के कार्यकर्ताओं की सहायता से और क्रेन की सहायता से कड़ी मशक्कत के बाद गाय को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। जीव रक्षक दल के कार्यकर्ता नारायण भोजक ने बताया कि कच्चा बस स्टैंड के पास स्थित यह गिनाणी 2 साइड से पूरी तरह से खुली पड़ी है। जिसके कारण बार-बार गोवंश इसमें उतर जाते हैं और कीचड़ में फंस जाते हैं। बार-बार हमारी ओर से यहां से गायों को बाहर निकाला जाता है। उन्होंने कहा कि नगरपरिषद को इस और ध्यान देकर इसका स्थाई समाधान करवाना चाहिए। वहीं स्थानीय लोगों ने बताया कि इस गिनाणी में बड़ी मात्रा में गंदा पानी भरा हुआ है और इसके दो साइड में कोई चारदीवारी नहीं बनाई गई है। जिसके चलते आए दिन गोवंश इस गिनाणी के कीचड़ में फंस जाते हैं और बाद में विभिन्न परेशानियों का सामना करके उनको निकालना पड़ता है। उन्होंने कहा कि समय रहते अगर नगरपरिषद की ओर से इसके चारों तरफ चारदीवारी नहीं बनाई गई तो कभी भी कोई बड़ा हादसा पेश आ सकता है। वहीं आपको बता दे की नगरपरिषद सभापति राजकरण चौधरी ने बताया कि गाय फंसने की सूचना मिलते ही तुरंत नगरपरिषद की ओर से क्रेन को मौके पर बुलवाया जाकर गाय को सुरक्षित बाहर निकलवा दिया गया है। नगरपरिषद की ओर से इस समस्या का स्थाई समाधान करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। आगामी कुछ समय में गिनाणी के चारों ओर चारदिवारी बनवाकर स्थाई समाधान करवाने का प्रयास किया जाएगा।

राजलदेसर नगरपालिका की आपात बैठक, बिना आए ही रजिस्टर में तीन पार्षदों के हस्ताक्षर बने चर्चा का विषय

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। नगरपालिका राजलदेसर में मंगलवार को आपात बैठक बुलाई गई। दोपहर तीन बजे अध्यक्ष गंगादेवी की अध्यक्षता में शुरू हुई बैठक में विधायक पुसाराम गोदारा अधिशाषी अधिकारी, अध्यक्षता सहित 23 नगरपालिका सदस्य उपस्थित रहे। बैठक का मुख्य एजेंडा रेलवे लाइन के नीचे से गन्दे पानी निकासी व रेलवे की ओर से दीवार निर्माण करवाई जा रही है जिससे कई घरों के रास्ते बन्द होंगे जिसको लेकर रेलवे से रास्ता छोड़ने आवश्यकता होगी तो नगरपालिका लीज पर लेने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। घर घर कचरा संग्रहण के लिए ओटोटिपर लगाने पर बजट के अभाव में नगरपालिका के वाहनों को ही ठीक करवाकर घर घर कचरा संग्रहण का कार्य करवाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। पालिका उपाध्यक्ष ने मुलडाई बस्ती में 20 एच पी का पम्पसेट लगाने के निविदा करने की मांग की। पार्षद धनपत शर्मा ने भद्रकाली शक्ति पीठ सिमसिया रोड़ आश्रम की ओर से विकास कार्य के लिए स्वागत बनवाने के लिए प्रार्थना पत्र दिया था, जिस पर सभी ने सर्वसम्मति प्रदान की। वार्ड सं 10 के पार्षद दीनदयाल स्वामी ने अपने वार्ड के गन्दे पानी निकासी की समस्या से अवगत कराया।धनपत शर्मा ने पन्ना सागर जोहड के पास पड़ी गन्दगी उठवाने की मांग की। सभी ने तहसील कार्यालय के आगे बने सुलभ शौचालय को शुरू करवाने, सभी पार्षदों ने नगरपालिका में हुए भ्रष्टाचार की जांच करवाने का मुद्दा सर्व सम्मति से पारित किया। बैठक रजिस्टर में तीन पार्षद के बिना उपस्थित फर्जी हस्ताक्षर होने की चर्चा हो रही है। पार्षदों ने कहा कि यदि वास्तव में ऐसा हुआ है तो इस तरह बोर्ड की बैठक पार्षदों के फर्जी हस्ताक्षर नगरपालिका की गोपनीयता पर बड़े सवालिया निशान उठते हैं।

रेलवे स्टेशन पर लगाए गए वाटर कूलरों का लोकार्पण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ(निस)। शहर के रेलवे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म संख्या एक पर माहेश्वरी सभा ट्रस्ट के तत्वावधान में वाटर कूलरों का लोकार्पण सोमवार की शाम हुआ। सत्यनारायण पेड़ीवाल व जय झंवर के सौजन्य से प्रदत्त दो वाटर कूलरों का लोकार्पण स्टेशन अधीक्षक बाबूलाल मीणा, माहेश्वरी समाज के जिलाध्यक्ष नरेश पेड़ीवाल, उत्तरी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष एडवोकेट रजनीकांत सोनी ने भगवान महेश की पूजा-अर्चना कर तथा फीता काटकर किया। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि सभी प्रवासी बंधु अपनी मातृभूमि के प्रति सेवा कार्यो में समर्पित है। ट्रस्ट के ट्रस्टी नरेंद्र झंवर ने बताया कि तीन वाटर कूलर पहले से प्लेटफॉर्म संख्या दो पर यात्रियों की सेवा के लिए लगाए जा चुके हैं। इन वाटर कूलरों से गर्मी में परेशान हो रहे यात्रियों को शीतल पेयजल की सुविधा उपलब्ध होगी। इस प्लेटफॉर्म पर रेल यात्रियों की संख्या काफी रहती है तथा भविष्य में जब भी रेलवे स्टेशन पर किसी भी प्लेटफॉर्म पर वाटर कूलर की आवश्यकता होगी, उस दौरान ट्रस्ट की ओर से वाटर कूलर लगाया जाएगा। इस मौके पर माहेश्वरी समाज के तहसील अध्यक्ष राकेश जाजू, मंत्री रामावतार चांडक, रामकिशन चांडक, अर्चित झंवर, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजू देवी लढ़ा, एडवोकेट पूर्णिमा लढ़ा, भावना जाजू, एडवोकेट कमल सोनी, महावीर रामगढ़िया, नंदकिशोर माटोलिया, मुरलीधर मंडगिरा, रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य अनिरूद्ध दायमा, डॉ हुणताराम मीणा, सुरेश मुरारका, एडवोकेट सुरेंद्र जयसवाल सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

रास्ते बंद होने के मामले में पूसाराम गोदारा ने दिया आमजन को राहत का आश्वासन

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में रेलवे की ओर से अपनी जमीन में बनाई जा रही दीवार से आमजन के घरों के रास्ते बन्द होने से आमजन काफी परेशान हो रहे हैं। जिस पर विधायक पुसाराम गोदारा ने मौके पर पहुंचकर आमजन की समस्या सुनी और मौका स्थल का जायजा लिया। विधायक पुसाराम गोदारा ने कहा कि घरों के रास्ते बन्द हो रहे है, जिसको लेकर नगरपालिका में इस पर बैठक बुलाई गई। जिस पर सभी सदस्यो ने सर्वसम्मति से आमजन के रास्ते अवरूद्ध न करने पर सहमति जताई। नगरपालिका की तरफ से लीज पर भी रास्ता लेने के लिए तैयार है। जिस पर सभी पार्षदों ने सहमति जताई। विधायक पूसाराम गोदारा ने कहा कि मेरा प्रयास आमजन के लिए रहेगा, जिसके लिए रेलवे उच्च अधिकारियों से भी वार्ता करूंगा।

मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना: संस्थानों में ज्वाईनिंग की अंतिम तिथि 25 जून

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजनान्तर्गत सत्र 2024-25 के लिए जारी तृतीय मुख्य मेरिट सूची में चयनित अभ्यर्थियों कोचिंग संस्थानों में 25 जून तक ज्वाइनिंग कर सकते हैं। सामाजिक व न्याय अधिकारिता विभाग के संयुक्त निदेशक एलडी पंवार ने बताया कि योजनान्तर्गत जारी तृतीय मुख्य मेरिट सूची में जिले के 175 लाभार्थियों का चयन किया गया है। फाइनल मेरिट सूची में चयनित विद्यार्थी अपनी एसएसओ आईडी के माध्यम से आवेदन में प्रदर्शित कोचिंग सेंटर पर 25 जून तक अपनी उपस्थिति दर्ज करवा सकते हैं। पवार ने बताया कि योजनांतर्गत विभिन्न प्रोफेशनल कोर्स के लिए आयोजित प्रवेश परीक्षाओं सहित सरकारी नौकरियों के लिए आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी उत्कृष्ट ढंग से कराने व समान अवसर प्रदान करने के लिए सत्र 2024-25 के लिए विभाग की ओर से सूचीबद्ध कोचिंग संस्थाओ में नि:शुल्क कोचिंग किए जाने के लिए इच्छुक अभ्यर्थियों से प्राप्त आवेदन पत्रों की तृतीय सूची जारी की जा चुकी है।

जिला स्तरीय जनसुनवाई कल

बीकानेर(नि.सं.)।। जिला कलक्टर नम्रता वृष्णि की अध्यक्षता में जिला स्तरीय जनसुनवाई गुरुवार प्रातः 11 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की जाएगी। जनसुनवाई का आयोजन सतर्कता समिति की बैठक के उपरांत किया जाएगा। सहायक निदेशक (लोक सेवाएं) सुमन शर्मा ने बताया कि जिला कलेक्टर के निर्देश अनुसार संबंधित अधिकारियों को पूर्व में आयोजित जनसुनवाई में प्राप्त परिवादों और आवश्यक सूचनाओं के साथ निर्धारित दिनांक और समय पर उपस्थित रहने के लिए निर्देशित किया गया है।

सांसी बस्ती में नशे का कारोबार, हमला करने का आरोप, कार्रवाई की मांग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर में नशे का कारोबार खुल्लमखुल्ला चल रहा है और इस बात का अब प्रमाण भी मिल गया है कि सांसी बस्ती के लोगों ने अपनी ही बस्ती के कुछ लोगों पर कोकीन, अमल, ब्राउन शुगर, गांजा और प्रतिबंधित दवाएं बेचने के गंभीर आरोप लगाए हैं। इस बारे में सांसी समाज बीकानेरवाटी के अध्यक्ष महेश कुमार सांसी, निवासी सुजानगढ़ ने कोतवाली थाने में मुकदमा दर्ज करवाकर पुलिस को बताया है कि 15 जून को पुलिस की ओर से ऐरिया डोमिनेशन के तहत कार्यवाही की गई थी, जिसमें सांसी समाज के राजेश, रामस्वरूप, सुनीता, राधा, अनिल को डोमिनेट किया गया था। जिस पर आरोपियों ने मुझे अभद्र गालियां दीं और मेरे पर आरोप लगाया कि ये कार्यवाही तूने हमारे नाम बताकर करवाई थी। जिस पर महेश ने कहा कि मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। महेश ने थाने में दर्ज करवाए गए मुकदमे में आरोप लगाया है कि राजेश, रामस्वरूप, अनिल, इन्द्रादेवी, सुनीता उर्फ कोकनी, कमल, मुनीदेवी, पूजा, दलीप, कालू, राधा देवी, पप्पू वगैरह ने आपराधिक गिरोह बना रखा है। जो कि मिलकर संगठित अपराध करता है और समाज के नौजवान युवक युवतियों को कोकीन, अमल, ब्राउन शुगर, गांजा, नशीली दवाईयां आदि का भण्डारण और वितरण करते हैं। जिसके कारण ये सभी लोग मुझे रास्ते से हटाने की नीयत से व मेरे परिवार के लोगों को जान से मारने की नीयत से हमला कर दिया और मेरी पत्नी को भी गला दबाकर मारने की कोशिश की। जिस पर हल्ला सुनकर मोहनलाल, धर्मचंद, पवन, महेश, रविन्द्र, राजू, ज्ञानचंद आदि आए और मेरी व मेरे परिवार की जान बचाई। पुलिस को बताया गया है कि हम लोग नशे के समर्थक नहीं हैं, जिसके कारण आपराधिक प्रवृति के आरोपी हमसे दुश्मनी रखते हैं। जबकि आरोपियों की ओर से नशे व ड्रग्स का अवैध कारोबार किया जाता है और ये समाज को खराब करने का काम कर रहे हैं। पुलिस से जान माल की सुरक्षा किए जाने की मांग भी की गई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। दूसरी ओर महेश कुमार सांसी ने बताया कि एडीएम, एसडीएम आदि को ज्ञापन सौंपकर कार्यवाही की मांग भी की गई है। ज्ञापन सौंपने के दौरान मोहन, धर्मचंद, रविन्द्र, राजू, मुकेश, ज्ञानचंद, रूपाराम, अजय, रोहित, पवन, विकारा, सोनू, राहुल, सुरेश, राजा, मंगलाराम आदि लोग मौजूद रहे।

प्राध्यापक व कोच प्रतियोगी परीक्षा के आयोजन को लेकर अधिकारियों को दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशानुसार एडीएम अर्पिता सोनी ने आदेश जारी कर जिले में 23 जून से 28 जून तक राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर की ओर से आयोजित होने वाली प्राध्यापक व कोच प्रतियोगी परीक्षा-2025 की पारदर्शिता व सुचारू संचालन के लिए अधिकारियों को दायित्व सौंपते हुए समुचित निर्देश दिए हैं। एडीएम अर्पिता सोनी ने बताया कि 23 जून से 28 जून तक प्रतिदिन दो पारी में परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। जारी आदेशानुसार पुलिस विभाग, चूरू उपखंड अधिकारी, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) मुख्यालय चूरू, सभी केन्द्राधीक्षकों, जिला परिवहन अधिकारी, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम लिमिटेड चूरू व सरदारशहर आगार प्रबंधक सहित अन्य अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए गए हैं।

'वंदे गंगा-जल संरक्षण जन अभियानः चाड़वास में किया श्रमदान व पौधरोपण

जयपुर टाइम्स

चूरू/बीदासर(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशन में जिले में 'वंदे गंगा – जल संरक्षण जन अभियान' अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही है। इन गतिविधियों के क्रम में जिले के बीदासर ब्लॉक के चाड़वास में श्रमदान व पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। ग्रामीणों ने श्रमदान कर साफ सफाई की और पौधरोपण करते हुए जल संरक्षण व 'एक पेड़ – मां के नाम' अभियान अंतर्गत पौधारोपण का संकल्प लिया। इस दौरान ग्राम पंचायत प्रशासक कांता देवी, सहायक अभियंता ज्योति, कनिष्ठ अभियंता अभिषेक शर्मा सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियानः महा पुरूषों के प्रतिमा स्थलों पर की साफ-सफाई

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशानुसार मंगलवार को चूरू नगरपरिषद की ओर'वंदे गंगा जल सरंक्षण जन अभियान' अंतर्गत विभिन्न् वार्डों में श्रमदान किया गया और महापुरूषों के प्रतिमा स्थलों पर साफ–सफाई की गई। नगरपरिषद टीम की ओर से चूरू के कालेरा बास में अम्बेडकर भवन में स्थित डॉ बीआर अम्बेडकर की प्रतिमा व गढ़ के पास स्थित स्वामी गोपालदास की प्रतिमा की साफ-सफाई की गई।

चूरू में झमाझम बारिश से किसाने के खिले चेहरे, 51.6 एमएम बारिश दर्ज

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। चूरू में उमस भरी गर्मी के बाद मंगलवार दोपहर झमाझम बारिश हुई। बारिश ने आमजन को उमस भरी गर्मी से काफी राहत दिलाई। मंगलवार दोपहर करीब साढ़े तीन बजे हल्की बूंदाबांदी शुरू हुई। जो झमाझम बारिश में बदल गई। बारिश के चलते अधिकतम तापमान में भी गिरावट आई हैं। मंगलवार को अधिकतक तापमान 35.4 डिग्री व न्यूनतम तापमान 25.8 डिग्री दर्ज किया गया। बारिश के बाद मौसम ठंडा व सुहावना हो गया। बारिश के बाद शहर के नया बस स्टैंड, नेचर पार्क के सामने, भरतिया अस्पताल के सामने, मेडिकल कॉलेज के सामने, सफेद घंटाघर, लोहिया कॉलेज के सामने व जोहरी सागर, रामगढ़िया दरवाजा बड़ौदा बैक के सामने सहित निचले इलाकों में बरसाती पानी भर गया। जिससे बाइक सवार व पैदल चलने वाले राहगीरों को काफी परेशानीयों का सामना करना पड़ा। मंगलवार को हुई तेज बारिश के कारण किसानों के चेहरे भी खिल उठे। मौसम विज्ञान केन्द्र जयपुर के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया कि पूर्वी राजस्थान में अनेक स्थानों पर, पश्चिमी राजस्थान में कुछ स्थानों पर मेघगर्जन, वज्रपात के साथ हल्की से मध्यम वर्षा दर्ज की गई हैं। पूर्वी राजस्थान में कहीं कहीं भारी वर्षा दर्ज की गईं। चूरू में 51.6 एमएम बारिष दर्ज की गई। वहीं सबसे अधिक बारिश 74 एमएम सीकर में दर्ज की गयी है।

नहर में गिरी बोलेरो, 6 लोग बहे, 2 लोग लापता, 3 को ग्रामीणों ने बचाया

हनुमानगढ(निस) हनुमानगढ़ से सालासार बालाजी जा रही बोलेरो नहर में गिर गई। गाड़ी में 6 लोग सवार थे। बोलेरो गिरते ही तत्काल ग्रामीण मदद के लिए भागे और तीन लोगों को बचा लिया। एक महिला को इलाज के दौरान मृत घोषित कर दिया, वहीं दो लोग अभी भी लापता हैं। शाम 6 बजे बाद रेस्क्यू अभियान रोक दिया गया। हादसा हनुमानगढ़ के लखुवाली इलाके में मंगलवार सुबह हुआ। सीओ सिटी मीनाक्षी ने बताया कि स्थानीय ग्रामीणों और राहगीरों ने रस्सी के सहारे पानी में फंसे चार लोगों को बाहर निकाला और अपनी गाड़ी से अस्पताल पहुंचाया। सीओ सिटी ने बताया-स्थानीय लोगों की तत्परता और बहादुरी से समय रहते तीन लोगों की जान बचाई जा सकी। प्रशासन ने राहत और बचाव कार्यों को तेज कर दिया है। सीओ सिटी मीनाक्षी ने बताया कि हनुमानगढ़ जंक्शन के सुरेशिया से दो परिवार के 6 सदस्य सालासर बालाजी दर्शन करने के लिए रवाना हुए थे।

मानसून की रखें पूर्व तैयारी, प्रभावी मॉनीटरिंग करें : अभिषेक सुराणा

जिला कलक्टर ने राजस्व अधिकारियों को बैठक में राजस्व कार्यों की समीक्षा कर दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने मंगलवार को जिला परिषद सभागार में राजस्व अधिकारियों की बैठक में राजस्व कार्यों की समीक्षा कर अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए। सुराणा ने कहा कि उपखंड स्तरीय अधिकारी मानसून की पूर्व तैयारी रखें और अपने क्षेत्र की सभी व्यवस्थाओं की प्रभावी मॉनीटरिंग करें। बाढ़ नियंत्रण कक्ष को सुचारू संचालित करते हुए ग्रामीण विकास व नगरनिकायों के विभागीय बरसात से पहले पानी भराव क्षेत्रों के लिए संसाधन, कार्मिक उपलब्धता, पंप, मोटरें आदि सुचारू होना सुनिश्चित करें। बरसात के दौरान आवश्यक व्यवस्थाओं के लिए फील्ड विजिट करें। उन्होंने जिले में 24 जून से पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के आयोजन को लेकर उपखंड अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिविरों के आयोजन के लिए विस्तृत रूपरेखा तैयार करते हुए कार्ययोजना बनाएं। उन्होंने राजस्व प्रकरणों की चर्चा करते हुए कहा कि राजस्व टीम को मुस्तैद रखें और राजस्व परिवादों के निस्तारण में त्वरितता बरतें। विभिन्न न्यायालयों में राजस्व से जुड़े परिवादों में प्राथमिकता तय करें तथा जवाब लगवाएं। प्रकरणों में रिपोर्टिंग सही हो। इसी के साथ राजस्व अर्जन को लेकर लक्ष्यों को प्राप्त करें। उन्होंने कहा कि कार्यालय में ई-फाइल मॉड्यूल में ही फाइलें मूव करें तथा मशीनरी को ट्रेनिंग दें। इसी के साथ संपर्क पोर्टल, जनसुनवाई व सीएमओ से प्राप्त प्रकरणों की पेंडेंसी समाप्त करें। अपने क्षेत्र में जनसुनवाई, रात्रि चौपाल आदि आयोजित करते हुए आमजन के परिवादों को सुनकर निस्तारित करें। जिला कलक्टर ने राजस्व परिवादों, न्यायालयों में विचाराधीन प्रकरणों, भू-रूपांतरण, भूमि अवाप्ति, भू– आवंटन, सतर्कता समिति में दर्ज प्रकरण, आनलाइन विभाजन, सीमाज्ञान आवेदन, पीएम किसान रजिस्ट्रेशन, ई-फाइल, राजस्व न्यायालय शाखा, राजकीय प्रयोजनार्थ भूमि आवंटन के लंबित प्रकरण, राजकीय भूमि पर अतिक्रमण, रास्ता खोलो अभियान अंतर्गत रास्ता खुलवाने के प्रकरण, मुख्यमंत्री कार्यालय से प्राप्त प्रकरणों, पंजीयन में निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति सहित राजस्व से जुड़े बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा कर अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए। एडीएम अर्पिता सोनी ने बैठक कार्यवाही का संचालन करते हुए दिशा- निर्देशों की समुचित पालना करने के निर्देश दिए। उन्होंने 23 जून से प्रस्तावित प्राध्यापक भर्ती परीक्षा के आयोजन को लेकर कार्मिकों की ड्यूटी, परीक्षा केन्द्रों आदि को लेकर निर्देश दिए। इस दौरान सुजानगढ़ एडीएम मंगलाराम पूनिया, चूरू एसडीएम बिजेंद्र सिंह, सुजानगढ़ एसडीएम ओमप्रकाश वर्मा, राजगढ़ एसडीएम मीनू वर्मा, तारानगर एसडीएम राजेंद्र कुमार, रतनगढ़ एसडीएम रामकुमार वर्मा, सरदारशहर एसडीएम दिव्या, बीदासर एसडीएम अमीलाल, डीएलआर पवन तंवर, चूरू तहसीलदार अशोक गोरा, राजगढ़ तहसीलदार धीरज झाझड़िया, रतनगढ़ तहसीलदार सज्जन कुमार लाटा, बीदासर तहसीलदार साक्षी पुरी, तारानगर तहसीलदार शुभम शर्मा, सुजानगढ़ तहसीलदार राजू देवी, सरदारशहर तहसीलदार रतनलाल, नायब तहसीलदार महेंद्र गहलोत सहित अन्य राजस्व अधिकारी मौजूद रहे।

जनसहयोग से हों जनोपयोगी कार्य : अभिषेक सुराणा

जिला कलक्टर ने 'वंदे गंगा- जल संरक्षण जन अभियान' अंतर्गत आयोजित जिला स्तरीय सीएसआर कार्यशाला में की शिरकत

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। प्रदेश सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम 'वंदे गंगा–जल संरक्षण जन अभियान' अंतर्गत मंगलवार को जिला परिषद सभागार में जिला स्तरीय सीएसआर कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने कहा कि जनसहयोग से जनोपयोगी कार्य हो। प्रदेश सरकार के इस अभियान अंतर्गत जल संरक्षण के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसमें परंपरागत जल स्रोतों के संरक्षण, मरम्मत व पुनर्निर्माण, वर्षा जल संरक्षण के लिए कुण्ड व टांका निर्माण, रिचार्ज स्ट्रक्चर आदि संरचनाएं बनाई जा रही हैं। इन गतिविधियों में सीएसआर से सहयोग पर्यावरण व जल संरक्षण गतिविधियों में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने बताया कि उद्यमी, भामाशाह व सीएसआर के माध्यम से जल संचयन संरचनाओं का निर्माण, जल स्रोतों की साफ सफाई, परम्परागत जलाशयों का पुनरूद्धार, पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण आदि कार्य करवाये जा सकते है। उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित उद्योग संघ प्रतिनिधियों, बैंक प्रतिनिधि आदि को मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0, कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान व सीएसआर सम्बन्धित अन्य क्षेत्र में सीएसआर/भामाशाह सहयोग से करवाए जा सकने वाले कार्यों की जानकारी देते हुए अधिक से अधिक जन सहयोग व सीएसआर में सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया। कार्यशाला में जल संरक्षण, मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0, कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान आदि पर चर्चा की गई। उद्योग महाप्रबन्धक उजाला ने मुख्यमंत्री स्वावलंबन अभियान 2.0 में सीएसआर सहयोग करने के लिए राज्य सरकार की ओर से किए गए प्रावधानों की जानकारी दी। कार्यशाला में एलडीएम अमरसिंह, धर्मेन्द्र बुडानिया, अजीत अग्रवाल, दौलत तंवर, सुभाष जांगिड़, शंकरलाल जांगिड़, सुरेन्द्र मीरणका, जगदीश जैसनसरिया सहित विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि, उद्यमी व जिला स्तरीय सीएसआर समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

छात्र नेता का एडिशनल डीसीपी और एसीपी से हुआ विवाद

टैंट लगाने को लेकर हुई बहस, रेजिडेंट डॉक्टर की मौत के बाद धरने पर बैठे हैं परिजन

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जोधपुर में जहर खाकर खुदकुशी का प्रयास करने वाले जोधपुर के रेजिडेंट डॉक्टर की जयपुर में इलाज के दौरान मौत हो गई। इसके बाद परिजनों ने शव लेने से इनकार कर दिया। मामले को लेकर परिजन दो दिन से अस्पताल की मॉर्चरी के बाहर धरने पर बैठे हैं। आज छात्र नेता निर्मल चौधरी भी मौके पर पहुंचे। यहां निर्मल चौधरी, एडिशनल डीसीपी ईस्ट आशाराम चौधरी और एसीपी मालवीय नगर आदित्य पूनिया के बीच टैंट लगाने को लेकर विवाद हुआ। पुलिस अधिकारी और निर्मल चौधरी टैंट लगाने की बात को लेकर उलझ पड़े। इसके बाद अन्य छात्र नेताओं ने बीच बचाव किया। निर्मल और उनके साथ कई छात्र नेता भी डॉक्टर की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरने पर बैठे हुए हैं। वहीं, घटना की जानकारी मिलने पर कांग्रेस के विधायक अभिमन्यु पूनिया, आरएलपी सुप्रीमो हनुमान बेनीवाल सहित कई नेता परिजनों को सांत्वना देने के लिए धरना स्थल पहुंचे। इस मौके पर कांग्रेस विधायक और यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अभिमन्यु पूनिया ने कहा- जोधपुर अस्पताल में ईसीएमएओ मशीन नहीं होने के बावजूद डॉ राकेश बिश्नोई को जयपुर क्यों रेफर किया गया। अभिमन्यु पूनिया ने कहा- उसने मरने से पहले अपने सीनियर डॉक्टर पर गंभीर आरोप भी लगाए लेकर कई दिन बीत जाने के बावजूद उस डॉक्टर के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई। परिजन जोधपुर के सीनियर डॉक्टर राजकुमार राठौड़ पर कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। मृतक के भाई सुभाष बिश्नोई का कहना है कि उसके भाई ने डॉक्टर राजकुमार से प्रताड़ित होकर आत्महत्या का कदम उठाया और डॉ. राजकुमार ने उनके भाई को थीसिस पूरी नहीं कराने की धमकी दी थी। यह बात भाई ने पुलिस को भी बताई। इसका वीडियो दो दिन से सोशल मीडिया पर वायरल है। मामले में मृतक के भाई किशन ने जोधपुर के शास्त्री नगर थाने में डॉक्टर राजकुमार राठौड़ के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया है। पुलिस एक्शन नहीं होने पर आज परिवार को गुस्सा फूटा और रोड पर जमा हो गए।

देर रात तक ठेकों पर छलकते है जाम

अवैध शराब बिक्री के लिए माफियाओं का गढ़ बना सुजानगढ़

जागी जनता, प्रतिनिधि बोलेः रात को बिक्री पर लगे रोक

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। दिनभर बिक्री के बावजूद भी रात आठ बजे के बाद शराब बेचने वाले लोगों के लिए सुजानगढ़ सबसे ज्यादा सुरक्षित शहर बनता जा रहा है। कहने को तो सरकारी नियम कायदे ठेकों के शाम 8 बजे बंद होने के हैं, लेकिन ठेकों की साईड में बनी खिड़कियां दुकानदारी के लिए देर रात तक काम आती हैं। जनसुनवाई में भी ये मुद्दा उठा, जहां पर विजयपाल श्योरापण ने कहा कि आबकारी विभाग को ऐसा चश्मा लगा है कि उनको रात में कहीं भी शराब की बिक्री नजर नहीं आती। जबकि सारी जनता को खुली आंखों से शराब की अवैध बिक्री नजर आ रही है। शहर के पुलिया चौक के पास, घंटाघर के पास, रेलवे स्टेशन के पास आदि स्थानों पर देर रात तक खुल्लमखुल्ला शराब बिक्री होती है और पुलिस और आबकारी की नाक के नीचे ऐसा हो रहा है। कॉमरेड जगदीश नाथ ने भी इस अवैध बिक्री को रोकने और रात में बेचे जाने वाली शराब की सैंपलिंग करवाने की मांग की है। उन्होंने बताया कि सरकार के निर्धारित समय 8 बजे के बाद भी सुजानगढ़ में धड़ल्ले से शराब की बिक्री होती है। मैंने 17 अप्रेल को आबकारी सीआई को ज्ञापन देकर अवगत करवाया था, लेकिन दो माह का समय बीत जाने के बावजूद भी सुजानगढ़ में आबकारी ने किसी भी ठेके पर जाकर कोई कार्यवाही नहीं की। मेरा शासन प्रशासन से अनुरोध है कि शराब ठेकों पर गोपनीय तरीके से खरीद करवाकर शराब की जांच करवाई जाए, ताकि ये पता लगाया जा सके कि बेची जा रही शराब पीने लायक तय मानकों के अनुरूप है या नहीं। इस बारे में पार्षद पंकज घासोलिया ने बताया कि सुजानगढ़ में नशे का कारोबार चिंताजनक स्तर पर पहुंच गया है, जिसका सबसे बुरा प्रभाव युवाओं पर पड़ रहा है। शराब की दुकानें भी तय समय सीमा के बाद भी खुलेआम शराब बेच रही हैं, रात देर तक दुकानें खुली रहना, कानून का खुला उल्लंघन है। यह संभवतः स्थानीय प्रशासन की मौन स्वीकृति के कारण हो रहा है। मीडिया में खबर छपने पर सांकेतिक कार्रवाई होती है, मगर कुछ ही दिनों में अवैध बिक्री फिर शुरू हो जाती है। प्रशासन से मांग है कि शराब दुकानों की समय सीमा का पालन हो और हर नशे के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएं। इस बारे में साहित्यकार डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने बताया कि राजस्थान में रात्रि 8 बजे बाद शराब नहीं बेचने का निर्णय बहुत बेहतरीन रहा है। लेकिन नियमों को धत्ता बताकर रात्रि आठ बजे के बाद आसानी से शराब क्रय -विक्रय करने से सामाजिक व्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। रात्रि आठ बजे बाद शराब विक्रय पर पुलिस को सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। मैं तो पूर्ण शराब बंदी का समर्थक हूं। रात्रि में शराब आसानी से मिलने से हमारे क्षेत्र में सड़क दुर्घटनाओं का ग्राफ भी बढ़ा है, जिससे मुकदमों का ग्राफ भी बढ़ता है और बेवजह लोगों की जान भी जाती है। नूर मोहम्मद खान पहाड़ियान ने बताया कि शराब खुल्लमखुल्ला रात में बिकती है, कोई कहने वाला नहीं है, कोई सुनने वाला नहीं है। आम आदमी कुछ भी कर ले तो शासन प्रशासन उस पर कार्यवाही करता है, लेकिन रात भर शराब बेची जाती है, ऐसे गंभीर अपराध को क्यों नहीं रोका जाता, ये तो सीधा-सीधा जनहितों पर कुठाराघात है। इसलिए सख्ती से 8 बजे शराब बिक्री बंद के नियम का पालन करवाये जाने की जरूरत है। इस बारे में नशा मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष रह चुके पीथाराम ज्याणी ने बताया कि अवैध शराब की बिक्री सरासर गलत है। सरकार और प्रशासन को त्वरित कार्यवाही करते हुए रात में बिक्री बंद करनी चाहिए। क्योंकि रात में शराब पीने के कारण अपराधिक घटनाएं होती हैं और शराब पीकर वाहन चलाने वाले लोग दूसरे लोगों की और खुद की जान को भी खतरे में डालते हैं। अब तक की सारी बड़ी दुर्घटनाओं के पीछे कहीं न कहीं शराब की भूमिका जरूर मिलती है। अतः इसे रोका जाना चाहिए। लोगों ने बताया कि शराब की अवैध बिक्री को रोके जाने की आवश्यकता है।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।